स्वर सागर

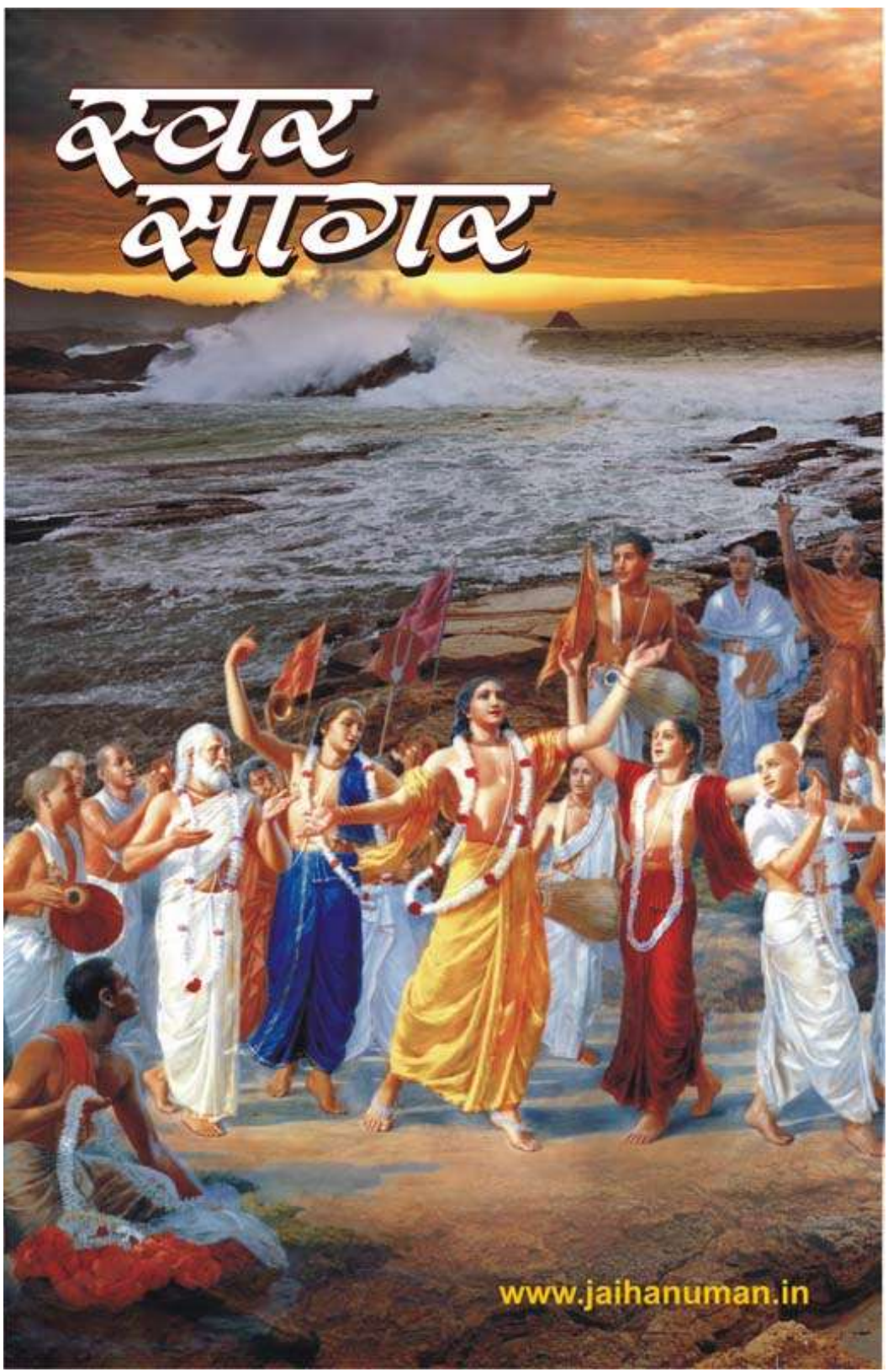

www.jaihanuman.in

श्री हनुमानजी महाराज
हनुमान चौक, सिव्हील लाईन, गोंदिया

अनुक्रमणिका

अनु.	भजन	पेज नं.
	श्री गणेशजी भजन	
१	म्हारा किर्तन में रस बरसाओ	१
२	प्यारा है तेरा गणराज भवानी	२
३	गजाजन आओ निर्धन द्वार	३
४	मेरे लाड़ले गणेश प्यारे प्यारे	४
५	देवा हो देवा गणपति देवा	५
६	घर मे पधारो गजाननजी	६
	श्री हनुमानजी भजन	
१	श्री हनुमत्-स्तवन	७
२	क्षमा प्रार्थना	८
३	संकटमोचन हनुमानाष्टक	९
४	हनुमान सिध्दि	११
५	श्री बजरंग बाण	१२
६	श्री हनुमान चालीसा	१५
७	थारे झाँझ नगाड़ा बाजे रे	१७
८	दुनिया रचने वाले को भगवान कहते है	१८
९	बजरंग बली की जय बोलो	१९
१०	बजरंग बाला तेरा सांचा दरबार	२०
११	जब जब भी इसे पुकारा	२१
१२	कुछ याद करो अपना पवन सुत	२२
१३	मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है	२३
१४	अंजनी माँ को हुयो लाल	२४
१५	आज तुम्हारा उत्सव बाबा	२५
१६	हनुमान को खुश करना	२६
१७	कै बजरंग बाला ने	२७
१८	छम छम नाचे	२८

अनु.	भजन	पेज नं.
१९	एक से एक काम कर डाले	२९
२०	हे मारुती सारी राम कथा	३०
२१	पवन पुत्र हनुमान, बाबा मेरे संकट हरो	३१
२२	सारे मोहल्ले में हल्ला हो गया	३२
२३	भूत पशाच निकट नही आए	३३
२४	पार न लगोंगे श्रीराम के बीना	३४
२५	हे संकट मोचन करते है वंदन	३५
२६	बाबा की किरपा	३६
२७	आना पवनकुमार	३७
२८	बालासा थाने कौन सजायो जी	३८
२९	मेरे बजरंग बाला तेरे आगे	३९
३०	जिसका हर एक मोती	४०
३१	रामभगत हनुमान	४१
३२	हे हनुमान जी प्रभु से एक काम	४२
३३	सब मंगलमय कर देते है	४३
३४	बालाजी और खाटु श्याम	४४
३५	भगत सब नाचो रे	४५
३६	बजरंग बली तुम रघुवर से	४६
३७	चोला चमके बाबा का	४७
३८	सुबह शाम आठों याम यही काम	४८
३९	मुझे पास बुलालो बजरंगी	४९
४०	भजले भाई साँझ सवेरे	५०
४१	है बलकारी और ब्रम्हचारी	५१
	श्रीरामजी भजन	
१	भय प्रगट कृपाला	५२
२	श्रीरामचंद्र कृपालु भजमन	५३
३	श्री राम नाम सार है	५४
४	अरे मैं भटक्यो देश विदेश	५५

अनु.	भजन	पेज नं.
५	जिस भजन में राम	५६
६	मुझे अपनी शरण में ले लो राम	५७
७	सीताराम सीताराम	५८
८	मंगल भवन, अमंगल हारी	५९
९	रामजी की निकली सवारी	६०
१०	मतवाला हो जा राम की भजनियाँ में	६१
११	शिक्षा दे रही जी हमको रामायण	६२
	श्री शंकरजी भजन	
१	श्री रुद्राष्टकम्	६३
२	सर से अंग अंग मृग छाला	६४
३	बम बम लहरी	६५
४	हे भोळया शंकरा	६६
५	सुबह सुबह ले शिव का नाम	६७
६	एक दिन वो भोले भंडारी	६८
७	सज रहे भोले बाबा	६९
८	ऐसी सुबह न आए, आए न ऐसी शाम	७१
९	बम बम भोला, तेरे द्वारे आता रहुँ	७२
१०	काशी नगरी प्यारी	७३
११	ओम बम बम भोले नाथ नांदिया साथ	७४
१२	चंदन चांवल बेल की पत्तियाँ	७५
१३	जय जय शिवशंकर बम भोले	७६
१४	देखो जी भोला ना दरवाजा खोला ना	७७
	श्रीकृष्णजी भजन	
१	मेरे सिर पर रख दो बाबा	७८
२	आओ कन्हैय्या आओ मुरारी	७९
३	जाने क्या जादु भरा हुआ	८०
४	जिनके सिर पर श्याम प्यारे	८१

अनु.	भजन	पेज नं.
५	छोटी सी थारी आँगली	८२
६	थाने परदे में	८३
७	फुलों मे सज रहे है	८४
८	अपने चरणों की रज साँवरे दिजीए	८५
९	राधा की पायल	८६
१०	घनश्याम म्हारा हृदया में बस जाओ	८७
१२	होलीया में उड़े रे गुलाल	८८
१३	राधिका गोरी से	८९
१४	मेरे सिर पे सदा, तेरा हाथ रहे	९०
१५	हर साँस में हो सुमिरन तेरा	९१
१६	राधा के मन में	९२
१७	कमाल हो गया जी	९३
१८	श्याम मुरली तो बजाने आओ	९४
१९	करदो करदो बेड़ा पार	९५
२०	होली खेल रहे नंदलाल	९६
२१	बंशी बजा के किधर गयो रे	९७
२२	आज्यो जी म्हारे देश	९८
२३	छलीयाँ का भेष बनाया	९९
२४	बाबा ने दरबार लगाया	१००
२५	श्याम घर आ जाओ	१०१
२६	पलके ही पलके	१०२
२७	क्यो भटके मन बाँवरे	१०३
२८	झुक गए बड़े बड़े सरदार	१०४
२९	जिस देश में, जिस भेष में	१०५
३०	दुनिया को जीत लिया, तीन बाण से	१०६
३१	नौकर रखले साँवरे	१०७
३२	होली आई, होली आई, होली आई	१०८
३३	जिस दिन साँवरा खेलेंगा होली	१०९
३४	हम तो माँगेगे बाबा	११०

अनु.	भजन	पेज नं.
३५	लाला जनम सुन आई	१११
३६	छप्पन भोग	११२
३७	अच्यूतम् केशवम्	११३
३८	श्याम देने वाले है हम लेने वाले है	११४
३९	अजब हैरान हुँ भगवन	११५
४०	थाली भरकर लाई खीचड़ों	११६
४१	ओ मैय्या मँगवा दे तेरे लल्ला को	११७
४२	मेरा दिल तो दिवाना हो गया	११८
४३	मांगा है मैने श्याम से	११९
४४	मुरली बजाने वाले	१२०
४५	कन्हैय्या तुम्हे एक नजर देखना है	१२१
४६	दीन दयालु दाता शिश	१२२
४७	म्हारां घट माँ विराजता श्रीनाथजी	१२३
४८	मेरा श्याम बड़ा रंगीला	१२४
४९	श्याम जन्म दिन ऐसे मनाए	१२५
५०	श्याम सपनो में आता क्यों नही	१२६
५१	श्याम हमारे दिल से पूछो	१२७
५२	सावन का महिना, घटाएँ घनघोर	१२८
५३	गोकुल की हर गली में	१२९
५४	आए है दिन फागन के	१३०
५५	मेरी नौकरी लगा दे दरबार में	१३१
५६	मेरे दिनानाथ तेरे लाखो है नाम	१३२
५७	खाटु के कण कण में बसेरा	१३३
५८	म्हारे सिर पर है बाबाजी रो हाथ	१३४
५९	मन में तो आए भोग लगाऊँ	१३५
६०	चापत चरण करत नित सेवा	१३६
६१	ऐसा क्या जादू कर डाला	१३७
६२	बाबा खोल दे अपनो गल्लो	१३८
६३	तेरी मुरली की धुन	१३९

अनु.	भजन	पेज नं.
६४	ओ खाटू वाले बाबा	१४०
६५	जब निकले कन्हैय्या	१४१
	श्री दुर्गाजी भजन	
१	हे नाम रे, सबसे बडा तेरा नाम	१४२
२	प्यारा सजा है, तेरा द्वार भवानी	१४३
३	खेल पंडा	१४४
४	मोरी मैय्या की चुनर	१४५
५	मैय्याजी के चरणो का सहारा है	१४६
६	मात अंग चोला साजे	१४७
७	उनके हाथो में, लग जाए ताला	१४८
८	इस लायक मै नही था मैय्या	१४९
९	तु कितनी अच्छी है	१५०
१०	पग पग ठोकर खाऊँ	१५१
११	मैय्या तुमको मनाऊँ देवी शारदा	१५२
१२	ऐसा प्यार बहा दे मैय्या	१५३
१३	आये हैं दर पे हम आज दादी	१५४
१४	बिगड़ी मेरी बना दे, ओ शेरोवाली मैय्या	१५५
१५	यहाँ वहाँ, जहाँ तहाँ, मत पुछो कहाँ कहाँ	१५६
१६	झुलना झुला दो मेरी माँ	१५७
१७	मैं बालक तु माता शेरावालिएँ	१५८
१८	मेहंदी रचे थारै हाथा में	१५९
१९	तुने मुझे बुलाया शेरावालिएँ	१६०
२०	करके दया हो मैय्या, एक दिन तो आना	१६१
२१	आया हुँ मैय्या बनके सवाली	१६२
२२	मुझे माँ से गिला	१६३
२३	मिलता है सच्चा सुख केवल	१६४
२४	माथे पर कुमकुम करे सिंगार	१६५
२५	बाजरे की रोटी खाले माँ	१६६

अनु.	भजन	पेज नं.
२६	बेटा बुलाए झट दौड़ी चली आए माँ	१६७
२७	दुर्गा है मेरी माँ	१६८
२८	मैय्या का चोला है रंगला	१६९
२९	श्री दुर्गा चालीसा	१७०
३०	दे दे थोड़ा प्यार मैय्या	१७२
३१	चलो बुलावा आया है	१७३
३२	काली काली, अमावस की रात में	१७४
३३	ओ माँ शेरोवाली, ओ माँ शक्तिशाली	१७५
	श्री रामदेवजी भजन	
१	खम्मा खम्मा हो रामा	१७६
	श्री सांईबाबा भजन	
१	जमाने मे कहाँ टुटी हुई तकदीर	१७७
२	सांईनाथ तेरे हजारो हाथ	१७८
३	भक्ती करे तो लौट आते है	१७९
४	गुरुदेव दया करके	१८०
५	ले गुरु का नाम बंदे	१८१
६	कभी प्यासे को पानी पिलाया नही	१८२
७	दमादम मस्त कलंदर	१८३
८	बंद कर खिड़की भले ही द्वार	१८४
	देशभक्ति भजन	
१	ए मेरे वतन के लोगों	१८५
२	ये देश है वीर जवानों का	१८६
३	कर चले हम फिदा	१८७
४	खेलन दे गणगौर	१८८

अनु.	भजन	पेज नं.
	आरतीयाँ	
१	श्री गणपतिची आरती	१८९
२	श्री गणपतिजी की आरती	१९०
३	श्री गणेशजी की आरती	१९१
४	श्री शंकरजी की आरती	१९२
५	श्री दुर्गाजी की आरती	१९४
६	श्री जगदीशजी की आरती	१९६
७	श्री श्यामजी की आरती	१९७
८	श्री श्याम पुष्पांजली	१९८
९	श्री कुंजबिहारीजी की आरती	१९९
१०	श्री रामायणजी की आरती	२००
११	श्री हनुमानजी की आरती	२०१
१२	श्री शारदाजी की आरती	२०२
१३	श्री महालक्ष्मीजी की आरती	२०३
१४	श्री रामदेवजी की आरती	२०४
१५	श्री रामदेवजी की आरती	२०५
१६	श्री रामदेवजी की आरती	२०६
१७	श्री सत्गुरुजी की आरती	२०७
१८	॥ श्री गणेशस्तुतिः ॥	२०८
१९	॥ श्री विष्णुस्तुतिः ॥	२०८
२०	॥ श्री रामस्तुतिः ॥	२०८
२१	॥ श्री महावीरस्तुतिः ॥	२०८
२२	॥ श्री शिवस्तुतिः ॥	२०८
२३	॥ श्री गणेश वंदना ॥	२०९
२४	॥ श्री दुर्गास्तुतिः ॥	२०९
२५	॥ श्री लक्ष्मीस्तुतिः ॥	२०९
२६	॥ श्री सरस्वतीस्तुतिः ॥	२०९
२७	॥ श्री कृष्णस्तुतिः ॥	२०९
२८	कर्पूरारती	२१०
२९	क्षमा प्रार्थना	२१०
३०	मंत्र पुष्पांजली	२११
३१	विश्वकल्याण के लिए प्रार्थना ॥	२११
३२	कुछ शिक्षा पद प्रश्नोत्तर	२१२

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो ।
देवन आनि करी बिनती तब, छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महामुनि शाप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो ।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो ॥

अंगद के सँग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाए इहाँ पग धारो ।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय, सिया-सुधि प्रान उबारो ॥

रावन त्रास दई सिया को सब, राक्षसि सों कहि शोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय अशोक सों आगी, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्राण तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोण सुबीर उपारो ।
आनि संजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो ॥

रावन जुध्द अजान कियो तब, नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो ॥

बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पाताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि, देऊ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तबही, अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ॥

काज किये बड़ देवन के तुम, वीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसे नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो ॥

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपिसूर ॥

हनुमान सिध्दि

नमो अंजनी नंदन वायुपूतम् ।
सदा मंगलागार श्रीरामदूतम् ।
महावीर वीरेश त्रिकाल वेसम् ।
घनानंद निर्द्वन्द्व हर्ता क्लेशम् ॥ १ ॥

किये काज सुग्रीव के आप सारे
मिला रामको शोक सन्देह ओर ।
गये लांघि वारीश शंका न खाई
हता पुत्र लंकेश लंका जराई ॥ २ ॥

चले जानकी मातु को शीश नाया
मिले वानरों से हिये हरष छाया
सिया का संदेश प्रभु को सुनाया ।
हिये हरिष श्रीराम ने कंठ लगाया ॥ ३ ॥

संजीवन जड़ी लाये नागेश काजे
गई मूर्च्छा राम भ्राता निवाजे ।
कहे दीन मेरे हरो दुःख स्वामी
नमो वायुपुत्रंम्, नमामि नमामि ॥ ४ ॥

श्री बजरंग बाण

दोहा - निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करैं सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिध्द करैं हनुमान ॥

चौपाई

जय हनुमन्त सन्त हितकारी ।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज विलम्ब न कीजै ।
आतुर दौरि महा सुख दीजै ।
जैसे कूदि सिन्धु भय पारा ।
सुरसा बदन पैठि विस्तारा ॥
आगे जाय लंकिनी रोका ।
मारेहु लात गई सुरलोका ॥
जाय विभीषन को सुख दीन्हा ।
सीता निरखि परमपद लीन्हा ॥
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा ।
अति आतुर जमकातर तोरा ॥
अक्षय कुमार को मारि संहारा ।
लूम लपेट लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई ।
जय जय धुनि सुर पुर में भई ॥
अब विलंब केहि कारन स्वामी ।
कृपा करहु उर अंतर्यामी ॥

जय जय लक्ष्मन प्राण के दाता ।
आतुर होय दुख करहु निपाता ॥
जै गिरिधर जै जै सुख सागर ।
सुर समूह समरथ भटनागर ॥
ऊँ हनु हनु हनुमन्त हठीले ।
बैरिहि मारू बज्र की कीले ॥
गदा बज्र ले बैरिहिं मारो ।
महाराज प्रभु दास उबारो ॥
ऊँकार हुँकार महाप्रभु धावो ।
बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
ऊँ हीं हीं हनुमन्त कपीसा ।
ऊँ हुँ हुँ हुँ हनु अरि उर शीसा ॥
सत्य होहु हरि शपथ पायके ।
राम दूत धरु मारु धाय के ॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा ।
दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥
पुजा जप तप नेम अचारा ।
नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ॥
वन उपवन मम गिरि गृह माहीं ।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पाँय परौं कर जोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
जय अंजनि कुमार कलवन्ता ।
शंकर सुवन वीर हनुमन्ता ॥
बदन कराल कालकुल घालक ।
राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।
अग्नि बेताल काल मारी मर ॥

इन्हें मारु तोहि शपथ राम की ।
राखु नाथ मर्यादा नाम की ॥
जनक सुता हरि दास कहावे ।
ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥
जै जै जै धुन होत आकाशा ।
सुमिरन होत दुसह दुःख नाशा ॥
चरण शरण कर जोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई ।
पायं परौं कर जोरि मनाई ।
ऊँ चं चं चं चपल चलंता ।
ऊँ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥
ऊँ ऊँ हाँक देत कपि चंचल ।
ऊँ सं सहमि पराने खल दल ॥
अपने जन को तुरत उबारो ।
सुमिरत होय अनंद हमारो ॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै ।
ताहि कहो फिर कौन उबारै ॥
पाठ करै बजरंग बाण की ।
हनुमत रक्षा करैं प्राण की ॥
यह बजरंग बाण जो जापै ।
तासों भूत प्रेत सब कांपै ॥
धुप देय अरु जपै हमेशा ।
ताके तन नहिं रहै कलेशा ॥

दोहा - प्रेम प्रतीतहि कपि भजै
सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल शुभ
सिध्द करैं हनुमान ॥

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सूधारि ।
बरनऊ रघुवर विमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुध्दिहीन तनु जानि के, सुमिरों पवन कुमार ।
बल बुध्दि विद्या देहु मोंहि, हरहु कलेस विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुणसागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागार ।
रामदूत अतुलित बल धामा, अंजनि पुत्र पवन सुत नामा ।
महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी ।
कंचन बरन विराज सुवेसा, कानन कुण्डल कुंचित केसा ।
हाथ वज्र और ध्वजा बिराजै, काँधे मूँज जनेऊ साजै ।
शंकर सुवन केसरी नंदन, तेज प्रताप महा जग बंदन ।
विद्यावान गुनी अति चातुर, राम काज करीबे को आतुर ।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया ।
सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा, विकट रुप धरी लंक जरावा ।
भीम रुप धरि असुर संहारे, रामचंद्र के काज संवारे ।
लाय संजीवन लखन जियाये, श्री रघुवीर हरषि उर लाये ।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरत ही सम भाई ।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं, अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।
सनकादिक ब्रम्हादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा ।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते, कबि कोविद कहि सके कहाँ ते ।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाये राजपद दीन्हा ।

तुम्हारो मंत्र विभीषण माना, लंकेश्वर भए सब जग जाना ।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानु, लील्यो ताहि मधुर फल जानु ।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।
राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।
सब सुख लहें तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहू को डरना ।
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनो लोक हाँक तें काँपै ।
भूत पिशाच निकट नाही आवै, महावीर जब नाम सुनावे ॥
नासै रोग हरै सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा ।
संकट तें हनुमान छुड़ावे, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।
सब पर राम तपस्वी राजा, तिन के काज सकल तुम साजा ।
और मनोरथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै ।
चारो जुग परिताप तुम्हारा, है प्रसिध्द जगत उजियारा ।
साधु संत के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे ।
अष्ट सिध्दि नौ निधी के दाता, अस बर दीन जानकी माता ।
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ।
तुम्हरे भजन रामजी को पावै, जनम जनम के दुःख बिसरावै ।
अंतकाल रघुवर पुर जाई, जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ।
और देवता चित् न धरई, हनुमत सेई सर्व सुख करई ।
संकट कटै मिटे सब पीरा, जो सुमिरै हनुमंत बलबीरा ।
जै जै जै हनुमान गौसाई, कृपा करहु गुरुदेव की नाई ।
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहि बंदी महा सुख होई ।
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा, होय सिध्दि साखी गौरीसा ।
तुलसीदास सदा हरी चेरा, कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।

दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रुप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

थारै झाँझ नगारा बाजे रे

थारै झाँझ नगारा बाजै रे
सालासर के मंदिर में, हनुमान बिराजै रे ।

भारत राजस्थान मे जी, सालासर एक धाम
सूरज स्यामी बण्यो देवरो, महिमा अपरम्पार ।
थारै लाल ध्वजा फहरावै रे
सालासर .....

नारेला री गिनती कोनी, सुवरण छत्र अपार
दूर देश सै दर्शन करने, आवै नर और नार ।
थारै जात जडूला लागै रे
सालासर .....

चैत सुदी पूनम को मेलो, भीड़ लगे अती भारी
नर-नारी तेरा दर्शन करने, आवै बारी बारी ।
बाबो अटक्यो काज संवारे रे
सालासर .....

रामदूत अंजनी के सुत का, धरो हमेशा ध्यान
गुरु भक्त चरणों का चाकर, लाज रखो हनुमान ।
बाबो बेड़ो पार लगावै रे
सालासर .....

दुनिया रचनेवाले को, भगवान कहते हैं

दुनिया रचनेवाले को, भगवान कहते है
संकट हरने वाले को, हनुमान कहते है

हो जाते है जिसके अपने पराए, हनुमान उसको कंठ लगाए
जब रुठ जाए संसार सारा, बजरंग बली तब देते सहारा
अपने भक्तो का, बजरंगी मान करते है
संकट हरने वाले को .....

दुनिया मे काम कोई ऐसा नही है, हनुमान के जो बस मे नही है
जो चीज माँगो पल में मिलेंगी, झोली ये खाली खुशीयों से भरेंगी
सच्चे मन से जो भी, इनका ध्यान करते है
संकट हरने वाले को .....

कट जाए संकट इनकी शरण में, बैठ के देखो बजरंग के चरण में
मेरी बातो को झुठ मत मानो, वरना फसोंगे जीवन-मरण में
इसके सीने में हरदम, सियाराम रहते है
संकट हरने वाले को .....

बजरंग बली की जय बोलो

ये उत्सव बजरंग बाला का, है लाल लंगोटे वाले का,
सब प्रेम से मिलकर जय बोलो,
बजरंग बली की जय बोलो .....

ये साल सवाई आता है, हर मन में खुशियां लाता है,
सब प्रेम से मिलकर जय बोलो ।
बजरंग बली की जय बोलो .....

ये अंजनी लाल दुलारा है, भक्तों की आंख का तारा है
इस पवन पुत्र की जय बोलो ।
बजरंग बली की जय बोलो .....

जो सच्चे मन से ध्याता है, मनवांछित फल वो पाता है
इस लखदातार की जय बोलो ।
बजरंग बली की जय बोलो .....

जो शरण में इनकी आता है वो झोली भर ले जाता है
विश्वास न हो तो संग हो लो ।
बजरंग बली की जय बोलो .....

ये राम भक्त कहलाता है, भक्तों के कष्ट मिटाता है
सब भक्तों मिलकर जय बोलो ।
बजरंग बली की जय बोलो .....

सब महिमा तेरी गाते हैं, जिसे भक्त तेरे दोहराते है
अंजनी लाला की जय बोलो ।
बजरंग बली की जय बोलो .....

बजरंग बाला तेरा सांचा दरबार

(तर्ज - सौ साल पहले मुझे तुमसे प्यार था)

बजरंग बाला तेरा सांचा दरबार है, सांचा दरबार है
महीमा तुम्हारी सारे, जग में अपार है ।
केशरी नंदन तुमको, नमन बार बार है
मंदिर में गूँजे तेरी सदा, जै जैकार है

श्रीराम भक्त तुमसा न कोई वाला है
सीने में तुमने तो, राम सीता को बिठाया है ।
रामजी के चरणों से, तुम्हें बड़ा प्यार है
महीमा तुम्हारी सारे, जग में अपार है
बजरंग बाला तेरा .....

हे दुख भंजन भगवान, तुम्ही बल बुध्दि प्रदाता हो
संकट मोचन हनुमान, मेरे तुम भाग्य विधाता हो
भक्त कहे बाबा, हमको तेरी दरकार है
महिमा तुम्हारी सारे, जग में अपार है
बजरंग बाला तेरा .....

हे पवन पुत्र हनुमान, तुम्हें हम शीश झुकाते है,
कर दो मेरा कल्याण, बड़ी आशा से आते है
दीनों पे तुमने सदा, किया उपकार है
महिमा तुम्हारी सारे, जग में अपार है
बजरंग बाला तेरा .....

जब जब भी इसे पुकारा

(तर्ज - बंधन तो प्यार का बंधन है)

जब जब भी इसे पुकारा, हनुमंत ने दिया सहारा
ये दूर नही है हमसे, बस याद करो इसे मन से
बाबा तो हमारा साथी है, गरीबो का सहारा है

हमसे दूर नही है, करता है रखवाली
जीसने किया भरोसा, बाबा ने डोर संभाली
जो इसके पाव पकडले, ये उसका हाथ पकडले
बाबा तो हमारा .....

अपने भक्त पे ये, दया किया करते है
उसको पार लगाए, जो नाम लिया करते है
ये चार दिनो का जीवन, बाबा को कर दो अर्पण
बाबा तो हमारा .....

इसका साथ मिले तो, हर मुश्किल टल जाए
हो घनघोर अंधेरा, मंजिल मिल ही जाए
बिन पानी नाव चला दो, भक्तो की बिगड़ी बना दो
बाबा तो हमारा .....

कुछ याद करो अपना पवन सुत

अब जागो हे अंजनी कुमार, लंका की ओर उड़ान भरो ।
हे भुतकाल के विकट वीर, अब वर्तमान निर्माण करो ।
हम सब चिंता मे डूबे है, माता का पता लगाओ तुम ।
दुखियो का दूखडा दूर करो, संकट मोचन कहलाओ तुम

कुछ याद करो अपना, पवन सुत वो बालपन
विद्युत कि गती जिसमे थी, अद्भुत वो बालपन

दुनिया थी दंग देख, तुम्हारी उड़ान को
तुमने हिला के रख दिया, था आसमान को
आकाश तुम्हारे लिए, था एक अखाडा ...२
जिसने भी ली टक्कर उसे, पलभर मे पछाड़ा ...२
बिजली की तरह लपके थे, सूरज की तरफ तुम
मुखड़े मे छिपा कर के, दिवाकर को लिया गुम
तुम खा गए भभकता हुआ, अग्नी का गोला २
ताकत तुम्हारी देख कर, ब्रम्हांड भी डोला,
हनुमानजी .... कहाँ गई, वो शक्ती विलक्षण
कुछ याद करो

फिर एक नया दुश्मन, तुम्हे ललकारने लगा .... राहू
आँखे दिखा के, शेखीयाँ बखारने लगा
उसको भी दिया मार, तुमने बात बात में
पापी को किया खाक, तुमने लात-लात में
जब राहू गया हार तो, फिर इंद्र भी आया ... २
झुंझला के उसने जब, अपना वज्र चलाया - २
और अंत मे सब हो गया, झगड़ो का सफाया
सब देवो ने मिलकर, तुम्हें बजरंग बनाया
है आज कसौटी, तुम्हारी केसरी नंदन

तुम शक्ती पूंज हो, किसी से डर नही सकते .. २
ऐसा न कोई काम, जो तूम कर नही सकते .. २
उठो छलांग मारो-बजरंग बली २, आकाश को ललकारो-बजरंग बली २
भीषण सा रुप धारो-बजरंग बली २, संकट से तुम उभारो-बजरंग बली २

मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है

मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है ।
बजरंगी संभालो, परिवार तेरा है ।

मंगलवार को सिंदूर चढाऊँगा मैं
शनिवार को मंदिर मे जाऊँगा मैं
मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है
सांचा-सांचा बजरंगी दरबार तेरा है
मंगलवार तेरा है .....

नैय्या छोडी है, हमने तेरे सहारे
अब लगानी पड़ेगी, नाव किनारे
मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है
बजरंगी हमें तो, आधार तेरा है
मंगलवार तेरा है .....

तुने संकट मे, मेरा साथ निभाया
हर मुसीबत से, मुझको तुने बचाया
मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है
हम गरीबों पे बजरंगी, उपकार तेरा है
मंगलवार तेरा है .....

हम गरीबो का तुही, सच्चा सहारा
सच्चा साथी समझ के, हमने पुकारा
मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है
बजरंगी संभालो, परिवार तेरा है
मंगलवार तेरा है .....

अंजनी माँ को हुयो लाल

(तर्ज - होलिया में उड़े रे गुलाल)

अंजनी माँ को हुयो लाल, बधाई सारे भक्तां ने ।
बाज्यो रे बाज्यो देखो थाल, बधाई सारे भक्तां ने ॥ टेर ॥

आज यो आँगणो, धन्य हुयो है
बजरंगबली को, जन्म हुयो है
नाचो रे नाचो दे के ताल, बधाई सारे भक्तां ने ॥ १ ॥

खुशखबरी या, सबने सुनावाँ
झुमा रे नाचा, म्हें तो मौज मनावाँ
बालाजी लियो अवतार, बधाई सारे भक्तां ने ॥ २ ॥

महला में आँगणो, आँगणा में पलनो
पलनो में झुल रयो, अंजनी को ललनो
नजरां उतारां बार-बार, बधाई सारे भक्तां ने ॥ ३ ॥

चालो जी चालो, अंजनी माता के चाला
बालक निरखस्याँ, थुथकारो घाला
आके सजावां पूजन थाल, बधाई सारे भक्तां ने ॥ ४ ॥

आज तुम्हारा उत्सव बाबा

(तर्ज - थाली भरकर लाई खिचड़ो)

आज तुम्हारा उत्सव बाबा, खूब सजा श्रृंगार है
आओ बाबा भोग लगाओ, छप्पन भोग तैयार है

बरफी पेड़ा कलाकंद और लड्डु मोतीचूर है
दिल्ली शहर का सोहन हलवा, बाबा बड़ा मशहूर है
गाजर हलवा कानपुर का, खाने में मजेदार है
आओ बाबा भोग .....

खीर जलेबी इमरती है, पान मलाई वाला
रबडी केशरीया है बाबा, दुध कड़ाही वाला
कलकत्ते का रसगुल्ला है, मेवे की भरमार है
आओ बाबा भोग .....

बीकानेर की भुजीया तुझे, दाल चिर-चिरी लागे
तबियत खुश हो जाएगी, जयपुर की कचौड़ी खाले
बम्बई का जो खाले समोसा, मांगे सौ सौ बार है
आओ बाबा भोग ....

हनुमान को खुश करना

हनुमान को खुश करना, आसान होता है ।
सिन्दुर चढाने से, हर काम होता है ॥

करले भजन दिल से, हनुमान प्यारे का
जिसको भरोसा है, अंजनी दुलारे का
वहां आनंद है जहाँ इनका, गुणगान होता है
सिन्दुर चढाने से .....

हनुमान के जैसा, कोई देव ना दुजा
सबसे बडी जग में, हनुमान की पुजा
वो घर मंदिर जहां इनका, सम्मान होता है
सिन्दुर चढाने से .....

श्रीराम के आगे, पूरा जोर है इनका
बनवारी दुनिया में, अब शोर है इनका
जो मुख मोड़े हनुमत से, परेशान होता है
सिन्दुर चढाने से .....

कै बजरंग बाला ने

कै बजरंग बाला ने, पवन के लाला ने
कोटीन कोटी प्रणाम ।

भिखारी तेरे द्वार का, दास मै तेरे द्वार का
कै बजरंग बाला ने .....

कैसे कैसे काज, राजा राम के सँवारे
दरीया को लांघ सिया, सुधी तुम लाए ।
अंजनी का लाड़ला, हो लाड़ला, सेवक हो राम का
कै बजरंग बाला ने .....

शक्ति लागी लक्ष्मण के, मूर्छा जद आई ।
संजीवनी ल्याकरके, प्राण तो बचाई
बाजे है डंका, हो डंका, बजरंग के नाम का
कै बजरंग बाला ने .....

थारे ही भरोसे बाबा, ठान ली लड़ाई
वानरा की सेना लेकर, कर दी चढ़ाई
लंका ने ढा दई, हो ढा दई, दुष्टन के नाम का
कै बजरंग बाला ने .....

श्याम बहादुर भी तो बाबा, थारो ही पुजारी
वीर हनुमान शिव, जिंदगी हमारी
सारो गा काज थे, हो काज थे, थारे ही दास का
कै बजरंग बाला ने .....

छम छम नाचे

कहते हैं लोग इसे, राम का दिवाना ।
छम छम नाचे, देखो वीर हनुमाना ॥
राम राम बोलो राम, राम राम बोलो राम

पावों में घुँघरू, बाँध के नाचे ।
रामजी का नाम, इन्हे प्यारा लागे ।
राम ने भी देखो इसे .....
राम ने भी देखो इसे, खूब पहचाना ॥
छम छम नाचे, देखो वीर हनुमाना

जहाँ जहाँ कीर्तन, होता श्रीराम का ।
लगता है पहरा वहाँ, वीर हनुमान का ।
राम के चरण में है .....
राम के चरण में है, इनका ठिकाना ॥
छम छम नाचे, देखो वीर हनुमाना

नाच नाच देखो, श्री राम को रिझाये ।
बनवारी रात दिन, नाचता ही जाये ।
भक्तों में भक्त बड़ा .....
भक्तों में भक्त बड़ा, दुनिया ने माना

एक से एक काम कर डाले

एक से एक काम कर डाले, तनिक नही आया अभिमान
ऐसा सेवक हुआ ना होगा, भरत से युँ बोले भगवान

मेरे हर संकट मे देखों, इसने साथ निभाया था
जब से मिले केसरी नंदन, काम नही रुक पाया था
हरण हुआ जब सीता का तो, सागर पार गया बलवान
ऐसा सेवक हुआ ना .....

लंका की हर गली-गली में, ऐसी धुम मचाई थी
मान घटाया रावण का और, लंका फुँक दिखाई थी
देख के शक्ती बजरंगी की, कुंज गया रावण नादान
ऐसा सेवक हुआ ना .....

युँ तो वीर अनेको थे पर, ऐसा ना कोई वीर मिला
जो काँटे हनुमंत के तीर को, ऐसा ना कोई पीर मिला
मैं भी इस भगवान भक्त के, चरणों में करता प्रणाम
ऐसा सेवक हुआ ना .....

हे मारुती सारी राम कथा

हे मारुती सारी राम कथा का, सार तुम्हारी आँखो में
दुनिया भर की भक्ती का, भंडार तुम्हारी आँखो में

तुम प्रेम भरी एक गागर हो, शक्ति के अनोखे सागर हो
जहां राम नाम का हिरा मिले, उस घाट के तूम सौदागर हो
तलवार की आंखो में तुम हो, तलवार तुम्हारी आँखो में
हे मारुती .....

हर भक्त के भक्ती के प्राण हो तुम, हर वीर शक्ति के शान हो तुम
तुम लाखों में एक हो हनुमंता, वसुधा के लिए वरदान हो तुम
दिन रात लगा रहता प्रभु का, दरबार तुम्हारी आँखो में
हे मारुती .....

पवन पुत्र हनुमान, बाबा मेरे संकट हरो

(तर्ज - राम भक्त हनुमान)

पवन पुत्र हनुमान, बाबा मेरे संकट हरो
अंजनी के लाला हनुमान, बाबा मेरे संकट हरो

लंका मे आग लगी, हलचल मची थी
विभीषण की कुटीयाँ वहाँ, कैसे बची थी
कुटीयाँ में लीखा राम राम, बाबा मेरे संकट हरो

लाखो को तारा तूने, लाखो सवारें
लाखो मे हो रही, जय जय कार
बाबा मेरे संकट हरो

सारे मोहल्ले मे हल्ला हो गया

सारे मोहल्ले मे, हल्ला हो गया
अंजनी मैय्याजी को, लल्ला हो गया

खुशीयाँ ही खुशीयाँ, देखो चारो ओर है
कोई लड्डु पेढ़े बांटे, कोई करे शोर है
दिन में दिवाली होली साथ में, हो हल्ला हो गया
सारे मोहल्ले में .....

फल सोच सूरज को, वो निगल डाले थे
पूँछ के बल से, शनि को निकाले थे
इनके करिश्मो का जग, मतवाला हो गया
सारे मोहल्ले में .....

जय सियाराम बोल, शक्ती दिखाते है
दुश्मन के दुश्मन का, छक्का छुड़ाते है
लंका मे देखो लंकापती, दिवाना हो गया
सारे मोहल्ले में .....

भक्तो मे भक्त से, भक्त निराले है
जय सियाराम का, पी रहे प्याले है
भक्त भी कहते पवन का ये, लल्ला हो गया
सारे मोहल्ले में .....

भूत पिशाच निकट नही आए

(तर्ज - मिलो न तुमको)

भूत पिशाच निकट नही आए
संकट भी टल जाए, पढ़ो हनुमान चालीसा

जो भी पढ़ा है इसे, जीता है जग मे बड़ी शान से
मिलती रहेगी उसे, हिम्मत भी प्यारे हनुमान से
बाते नही है झूठी यारो, नही है झूठा किस्सा
पढ़ो हनुमान ...

इसको विभीषण भी, पढ़ते है देखो सियाराम जी
तुम भी पढ़ो ना भक्तो, बाते छुपी है बड़े काम की
देश विदेश में चर्चा इसकी, चर्चा है चारो दिशा में
पढ़ो हनुमान ...

आओ सुनाऊ भक्तो, भक्ति ये भक्त हनुमान की
मोतीयो की माला दिए, खुश होके उनको माता जानकी
पाया नही जब राम नाम तो, कह दिया है यह शीशा
पढ़ो हनुमान ...

संकट जो आए भारी, सुमिरण करलो हनुमान का ।
कष्ट मिटेगा क्षण में, ध्यान जो धरेगा इनके नाम का
हनुमान भक्त ये सुमिरन करलो, स्वर्ग में होगा किस्सा
पढ़ो हनुमान ....

पार न लगोंगे, श्रीराम के बीना

पार न लगोंगे, श्रीराम के बीना
राम ना मिलेंगे, हनुमान के बीना

वेदो और पुराणो ने कह डाला
रामजी का साथी बजरंगबाला
जीए हनुमान नही, राम के बीना
राम भी रहे ना, हनुमान के बीना
पार न लगोंगे .....

जग के जो, तारण हारे है
उन्हे हनुमान बडे प्यारे है
कर लो सिफारीश, दास के बीना
रस्ता ना मिलेंगा, हनुमान के बीना
पार न लगोंगे .....

जिनका भरोसा, वीर हनुमान
उनका बिगडता, नहीं कोई काम
भक्त कहे सुनो, हनुमान के बीना
कुछ ना मिलेंगा, गुणगान के बीना
पार न लगोंगे .....

हे संकट मोचन, करते है वंदन

(तर्ज - ओ पालन हारे...)

हे संकट मोचन, करते है वंदन
तेरे बिना संकट कौन हरे
सालासर वाले, तुम हो रखवाले
तेरे बिन संकट कौन हरे

सिवा तेरे ना दूजा हमारा
तु ही आकर के देता सहारा
जो विपदा आए, पल में मिट जाए - २
तेरे बिन संकट कौन हरे

तुने रघुवर के, दुखःड़ों को टाला
हर मुसीबत से, उनको निकाला
रघुवर के प्यारे, आँखों के तारे - २
तेरे बिन संकट कौन हरे

अपने भक्तों के दुखड़े मिटाते
हर आफत से हमको बचाते
किरपा युँ रखना, थामें तु रखना - २
तेरे बिन संकट कौन हरे

बाबा की किरपा

बाबा की किरपा, जिस पे हो जाए
मौज उड़ाए, मौज उड़ाए-२
ले ले तु नाम ले ले, बाबा का नाम ले ले
हे .....

चाहे गरीब हो, चाहे फकीर हो
चाहे बुरी से बुरी, उसकी तकदीर हो
बजरंग दयालु, सबको निभाये
मौज उड़ाए .....

पीतल का सोना, कंकर का मोती
बन जाए पल में, किरपा जो होती
पल में करिश्मा, करके दिखाए
मौज उड़ाए .....

बजरंग के बेटे, दुःख नही पाए
बनवारी हरदम, खुशियाँ मनाए
भगतों का दुख ये, खुद ही उठाए
मौज उड़ाए .....

आना पवनकुमार

आना पवन कुमार, हमारे हरि कीर्तन मे
आना अंजनी के लाल, हमारे हरि कीर्तन में

आप भी आना संग मे, रामजी को लाना
लाना जनक दुलार, हमारे हरि कीर्तन में
आना पवन कुमार .....

भरत जी को लाना संग मे, लक्ष्मण जी को लाना
लाना सब परिवार, हमारे हरि कीर्तन में
आना पवन कुमार .....

कृष्ण जी को लाना संग मे, राधा जी को लाना
आकर रास रचाना, हमारे हरि कीर्तन में
आना पवन कुमार .....

शंकरजी को लाना संग मे, गौराजी को लाना
डम डम डमरु बजाना, हमारे हरि कीर्तन में
आना पवन कुमार .....

सुमति को लाना, कुमति हटाना
बेड़ा पार लगाना, हमारे हरि कीर्तन में
आना पवन कुमार .....

बालासा थाने कौन सजायो जी

बालासा थाने, कौन सजायो जी
म्हारो मनड़ो हर लीनो, थारी सूरत मतवाली

थारे हाथ में सोटा, लाल लंगोटा जी
थाने सिंदूर चढ़े, थे देव हो बलशाली
बालासा थाने .....

थारा उत्सव आया, मन हरसाया जी
सब झूम झूम नाचे, जय बोले है थारी
बालासा थाने .....

थे राम नाम की, धुन में मतवाला जी
है अजर अमर गाथा, है माया अजब थारी
बालासा थाने .....

माला ने तोड़ा, सीना ने चीर दिया
ओ अंजनि के लाला, जय हो जय हो थारी
बालासा थाने .....

सारे बालक थारा, लाड़ लड़ावे जी
थारी सूरत पे बाबा, सारी दुनिया बलिहारी
बालासा थाने .....

मेरे बजरंग बाला तेरे आगे

(तर्ज - मेरे सर पर रख दो बाबा)

मेरे बजरंग बाला तेरे आगे, जोड़ुँ दोनों हाथ
कभी मेरे घर आइये, सियाराम के साथ

राम और शिवजी की शक्ति, सदा तुम्हारे पास है
तुमसा न कोई रामभक्त, तुमसा न कोई दास है
तेरे आने से हो जायेगा, सकल दुखों का नाश
कभी मेरे घर आइये .....

त्रेता युग में प्रभु राम का, तुमने साथ निभाया था
कोई भक्त जो कर न सका वो, तुमने कर दिखलाया था
सोने की लंका जलाई, रावण को किया अनाथ
कभी मेरे घर आइये .....

लखन लाल बेहोश हुए जब, प्रभु रामजी रो पड़े
सिया हमें तो मिल नही पाई, लखन भी हमको छोड़ चले
हाथों में पर्वत लेकर, तुम आये रातों रात
कभी मेरे घर आइये .....

अजर अमर हो जब तक जग में, सूरज चाँद सितारे हैं
अष्ट सिध्दि नौ निधियाँ प्रभु जी, हरदम पास तुम्हारे है
भक्तों के सदा सहाई, करते दुष्टों का नाश
कभी मेरे घर आइये .....

भक्त और भगवान का जग में, बड़ा अटल ये नाता है
जिसे सभी ठुकराते उसको, बजरंगी अपनाता है
हम शरण पड़े है तेरी, कर दो करुणा की बरसात
कभी मेरे घर आइये .....

जिसका हर एक मोती

जिसका हर एक मोती, है पारस के जैसा
कंचन सा बना देती, हनुमान की चालीसा

इसके हर शब्दो से, वरदान झलकता है
जो पाठ करे दिल से, भव पार उतरता है
इसको अपनाने मे २ अब संशय है कैसा
कंचन सा बना .....

हनुमान की महीमा का, गुणगान भरा इसमे
बजरंग रिझाने का, सामान भरा इसमे
ये महा मंत्र प्यारे २ अमृत के रस जैसा
कंचन सा बना .....

इसे कंठ बसा कर के, उच्चारण करते है
हर शब्द तो बाबा के, चरणों से लिपटते है
इनके हर कण-कण मे २, विश्वास भरा ऐसा
कंचन सा बना .....

रामभगत हनुमान

राम भगत हनुमान, बालाजी मेरे घर आना
बालाजी मेरे घर आना - २

मेरा बिलकुल बगल में मकान
बालाजी मेरे घर आना -----

बाबा थारे पैर, मेरे घर पड़ जावे ।
मेरा तेरा, तेरा मेरा, प्रेम बढ़ जाए ।
रखले गरीबों का भी मान
बालाजी ----------

आज सारी रात बाबा, भजन सुनाएंगे
नाचेंगे झूम-झूम, तुमको रिझाएंगे ।
एक बार बनके मेहमान
बालाजी ----------

भक्तों की अर्जी पे, मोहर लगाओ
संकट मिटाओ जरा, दर्शन दिखाओ ।
तुमसे है मेरी पहचान
बालाजी ----------

हे हनुमान जी प्रभु से एक काम

हे हनुमान जी प्रभु से, एक काम कहियो जी
सीतारामजी से हमरा, राम-राम कहियो जी

कहियो कब तक राह निहारे, ये सबरी बेचारी
जब तक दर्शन ना पायेगी, प्यासी आँख हमारी
जब तक आएगा ना इस मन को, विश्राम कहियो जी
सीताराम जी से हमरा .....

बेशवरी हो गई है शबरी, सगरी उमर लगाई
कहना प्रभु से इस दुनिया की, याद ना अब तक आई
मैं हुँ अबला तुम हो निर्बल के, बलराम कहियो जी
सीताराम जी से हमरा .....

राम बिना कुटीयाँ ये सुनी, हर पल हृदय बुलाए
प्रेम भाव से बेर धारे है, शबरी किए जिमाए
बित जाए बेधडक इस जीवन की, शाम कहियो जी
सीताराम जी से हमरा .....

सब मंगलमय कर देते है

सब मंगलमय कर देते है, दक्षिण मुख के हनुमान प्रभु
हर बिगडे काम बनाते है, दक्षिण मुख के हनुमान प्रभु

जो काम कोई ना कर सकता, ऐसे ही कितने काम किये
सौ योजन की लंबी दुरी, बस एक छलाँग में पार किये
मुश्किल को सरल बनाते है, दक्षिण मुख के हनुमान प्रभु

दक्षिण में जाकर के बजरंग, श्रीराम का पुरा काम किया
माँ सीता ने फिर इसलिए, हनुमंत को था वरदान दिया
सीयाराम के मन को भाते है, दक्षिण मुख के हनुमान प्रभु

हर दिशा की महीमा अलग-अलग, हर दिशा की महीमा है न्यारी
पर दक्षिण मुख के बजरंग पे, हो जाऊ मैं भी बलहारी
शनि देव से मुक्त कराते है, दक्षिण मुख के हनुमान प्रभु

बालाजी और खाटु श्याम

बालाजी और खाटु श्याम
या जोडी को जवाब नही

म्हारा बालाजी, संकट मोचन
हारे को साथी बाबो श्याम ॥

म्हारा बालाजी लाडू खावे
चूरमो खावे बाबो श्याम

म्हारा बालाजी के, हाथ में सोटा
तीन बाण धारी बाबो श्याम

म्हारा बालाजी, अंजनी रा जाया
अहलवती रो बाबो श्याम

म्हारा बालाजी न, सिंदूर चढ़े है
केसरीयो पहने बाबो श्याम ...

भगत सब नाचो रे

भगत सब नाचो रें । भगत सब नाचो रें
आज नही तो कब नाचोगे, बैठे बाबा सजधज के

युँ तो बाबा हर दिन सजते है । आज जरा सा हट हट के

ऐसी किस्मत ऐसा मौका ॥ आज सामने आया है ॥
बाबा ने खुश होकर अपना ॥ ये दरबार लगाया है ॥

चाहे नाचों या ना नाचो ॥ या बैठे चुपचाप रहो ॥
आज वही नाचेगा यहाँ पर ॥ जिसके मन में पाप न हो ॥

उमर हो गई सत्तर की ये ॥ फिर भी नाच दिखाए है
देखो बीस बरस के बैठे ॥ अपना मुखड़ा छुपाए है ॥

देख नाच बाबा के आगे, तेरी उमर बढ़ जाएगी ॥
कहे पवन किसी और के आगे ॥ ये नौबत ना आएगी ॥

सिव्हल लाईन मे मेरे बाबा बैठे । रखते सब का ध्यान है
जो भी आए शरण मे इसकी ॥ उसका बेडा पार है
भक्त ...

बजरंग बली तुम रघुवर से

बजरंग बली तुम रघुवर से, प्रणाम हमारा कह देना
प्रणाम हमारा कह देना, और बिनती हमारी सुना देना

श्रीरामचंद्र वनवासी से, और लखनलाल अवतारी से २
और माता जनक दुलारी से, प्रणाम हमारा कह देना
बजरंग बली तुम रघुवर से .....

भरत शत्रुघन भैय्या से और, अवधपुरी नर नारी से २
और मात कौशल्यारानी से, प्रणाम हमारा कह देना
बजरंग बली तुम रघुवर से .....

सुग्रीव विभीषण अंगद से और, बानर सेना सारी से
और जामवंत बलशाली से, प्रणाम हमारा कह देना
बजरंग बली तुम रघुवर से .....

चोला चमके बाबा का .....

(तर्ज - पल्लो लटके)

चोला चमके, बाबा का चोला चमके - २
जो आए, जो आए दर पे बारंबार, उसकी झोली भरदे
चोला चमके ....

मेहंदीपूर में दर्शन पाकर तर जाएगो - २
बाबा का नाम ले ले, बाबा का नाम ले ले
थारो दुखड़ो मिट जाएगो, चोला चमके .....

काँधे मूँज जनेऊ साजै, गल मुकटन की माल
अद्‌भूत अनुपम छवी बाबा की, लगती बडी कमाल - २
बाबा का नाम ले ले, बाबा का नाम ले ले
थारो दुखड़ो मिट जाएगो, चोला चमके .....

द्रोणाजी पर्वत ले आए, लखन के प्राण बचाए - २
रामचंद्र के सारे बिगडे, कारज तूमने बनाए - २
बाबा का नाम ले ले, बाबा का नाम ले ले
थारो दुखड़ो मिट जाएगो, चोला चमके .....

महारुद्र अवतार है बाबा, जाके देव है स्वामी
सबके दिल का हाल है जाने, बाबा अंतरयामी - २
बाबा का नाम ले ले, बाबा का नाम ले ले
थारो दुखड़ो मिट जाएगो, चोला चमके .....

सालासर और मेहंदीपूर है, थारो धाम निराले - २
चंदन काज से तिलक लगाके, गुण गाए मतवाले - २
बाबा का नाम ले ले, बाबा का नाम ले ले
थारो दुखड़ो मिट जाएगो, चोला चमके .....

सुबह शाम आठों याम यही काम

सुबह शाम आठो याम, यही काम किये जा
खुश होंगे हनुमान, राम-राम किये जा

लिखा था रामनाम जो, पत्थर भी तर गए
किये राम से जो बैर, जीते जी वो मर गए
बस राम का रस पान, ऐ इंसान किये जा
खुश होंगे हनुमान, राम-राम किये जा

राम नाम की धुन पे नाचे, होकर के मतवाला
बजरंगी सा इस दुनिया में, कोई ना देखा भाला
जो भी हनुमंत के दर पे आता, उसका संकट है टाला
मुख में राम, तन में राम, जपे राम-राम की माला

जहाँ राम का किर्तन, वही हनुमान जती हो
गोदी में गणपती को ले, शिव पार्वती हो
सियाराम की कृपा से, सौ साल जीयेजा
खुश होंगे हनुमान, राम-राम किये जा

जीसपे दया श्रीराम की, बांका ना बाल हो
उसका सहाई भक्तों, अंजनी का लाल हो
राजपाल तु हर हाल में, जयकार किये जा
खुश होंगे हनुमान, राम-राम किये जा

मुझे पास बुलालो बजरंगी

मुझे पास बुलालो बजरंगी, चरणों से लगालो बजरंगी

निशदिन करता हुँ ध्यान तेरा, पूजा तेरी गुणगान तेरा
मुझे अपना बनालों बजरंगी, चरणों से लगालो बजरंगी

तेरी भक्ति से मुँह मोडु नही, जग को छोडु तुझे छोडु नही
गिरते को उठालो बजरंगी, चरणों से लगालो बजरंगी

तुम सोये भाग्य जगाते हो, संकट मोचन कहलाते हो
मेरी बिगड़ी बना दो बजरंगी, चरणों से लगालो बजरंगी

तेरे पैरो तले शनि रहता है, तुझे महाबली जग कहता है
मेरे पाप मिटा दो बजरंगी, चरणों से लगालो बजरंगी

भजले भाई साँझ सवेरे

भजले भाई सांझ-सवेरे, एक माला हरि नाम की
जिस माला में राम नाम नहीं, वो माला किस काम की ।

नाम के बल पर बजरंगी ने, सागर में सिला तिराई थी
बाण लगा जब लखनलाल को, संजीवनी पिलाई थी ।
नाम के बल पर देखो भाई, बन आई हनुमान की ।
जिस माला में राम नाम नहीं, वो माला किस काम की ।

एक माला को माता जानकी ने, बजरंगी को दान दिया ।
बजरंगी ने तोड़-तोड़कर, भूमि ऊपर डाल दिया ।
बजरंगी के हृदय बसी थी, मूरत सीताराम की ।
जिस माला में राम नाम नहीं, वो माला किस काम की ।

बड़े भाग्य से तुमने भाई, मानव तन ये पाया है ।
गर्भकाल में कौल किया था, बाहर आ बिसराया है ।
सब मिलकर अब जय-जय बोलो, पवनपुत्र हनुमान की ।
जिस माला में राम नाम नहीं, वो माला किस काम की ।

है बलकारी और ब्रम्हचारी

है बलकारी और ब्रम्हचारी, अवतार ये नाथ भुजंगी है ।
कोई और नहीं है ये मेरा, हनुमान चौक का बजरंगी है ॥

संकटहर्ता मंगलकर्ता, ये बलबुध्दि का दाता है
सियाराम ही राम रटे हरदम, ये भक्त बड़ा सतसंगी है
कोई और नहीं है ये मेरा, सालासर का बजरंगी है ।

है भावी जगत में ये जो विपत, दुष्टों को मारे उलट पलट
किस्मत को देता है ये पलट, दुख दूर करे सतसंगी है
कोई और नहीं है ये अपना, अंजनी का लाल बजरंगी है ।

रावण का दूर गरूर किया, जो समझे था उनको बंदर
भरी सभा के अंदर रावण ने, ये मान लिया ये जंगी है
कोई और नहीं है ये मेरा, रुद्रावतार बजरंगी है ।

बजरंगबाला अंजनीलाला, तु ही मेंहदीपूर वाला है
तेरे राज पाल तो पंचमुखी, तेरी लगती सूरत चंगी है
कोई और नहीं है ये मेरा, हनुमान चौक का बजरंगी है ।

भए प्रगट कृपाला

भए प्रगट कृपाला, दीन-दयाला, कौशल्या हितकारी ।
हरषीत महतारी, मुनि मन हारी, अद्‌भूत रुप निहारी ॥
लोचन अभिरामा, तनु घनश्यामा, निज आयुध भुज चारी ।
भूषन बनमाला, नयन बिसाला, शोभा सिंधु खरारी ॥
कह दुई कर जोरी, अस्तुति तोरी, केहि बिधि करौं अनंता ॥
माया गुन ग्याना, तीत अमाना, वेद पुरान भनंता ॥
करुणा सुख सागर, सब गुन आगर, जेहिं गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी, जनु अनुरागी, भयऊ प्रगट श्रीकंता ॥
ब्रम्हांड निकाया, निर्मित माया, रोम रोम प्रति वेद कहै ।
मम उर सो बासी, यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै ।
उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसुकाना, चरित बहुत विधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।
माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रुपा ।
कीजै सिसु लीला, अति प्रिय सीला, यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना, रोदन ठाना, होई बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं, हरिपद पावहिं, ते न परहिं भवकूपा ।

दोहा

बिप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गो पार ।

श्रीरामचंद्र कृपालु भजमन

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणं ।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं ॥

कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरज सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरं ।

भजु दीनबंधु दिनेश दानव, दैत्यवंश-निकंदनं ।
रघुनंद आनंदकंद कौशलचंद दशरथ-नंदनं ॥

सिर मुकूट कुंडल तिलक चारु, उदारु अंग बिभूषणं ।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं ॥

मनु जाहि राचेऊ मिलिहि सो बरु, सहज सुंदर सांवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु, सनेहु जानत रावरो ॥

एहि भांति गौरि असीस सुनि सिय, सहित हियँ हरषीत अली ।
तुलसी भवानि पूजी पुनि पुनि, मुदित मन मंदिर चली ॥

दोहा

जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ॥

श्री राम नाम सार है ...

श्री राम नाम सार है, जपो तो बेड़ा पार है
याही में कल्याण बंदे, याही में उध्दार है ।

राम-माता, राम-पिता, राम संगी साथी रे
ऐसो मीठो जग में दूजो, कोई नाम नाही रे ॥
राम नाम सार है .....

जल में भी राम देखो, थल में भी राम है
लता-पता में राम देखो, पर्वत में भी राम है
राम नाम सार है .....

हम में भी राम है तो, तुम में भी राम है ।
कण-कण में भी राम है तो, जन-जन में भी राम है ।
राम नाम सार है .....

सोते जपो जगते जपो, चलते फिरते जपते जाओ
खाते-जपो, पीते जपो, जपो दिन रात रे
राम नाम सार है .....

अरे मैं भटक्यो देश विदेश

अरे मै भटक्यो देश विदेश, परम सुख कहुँन पायो रे ।
कहुँन पायो रे, परम सुख कहुँन पायो रे

आशा ने आंधो कर डारयो, बिना मौत विषयन ने मारयो ।
तृष्णा बडी अपार, पूर्व धन सर्व गंवायो रे ॥
अरे मैं भटक्यो .....

सुख दुख नट का खेल तमाशा, मुरख करे भोग की आशा ।
पल भर को मेहमान, काल के गाल समायो रे ॥
अरे मैं भटक्यो .....

नही वर्ण नही आश्रम भाई, हृदय में आत्मज्योती जगाई ।
सतगुरु पायो सेन, नही जन्मों ना जायो रे ॥
अरे मैं भटक्यो .....

मन वाणी का ध्यान बताया, अमन द्वेष सुख दुख नहीं काया ।
भक्त भजे हरी नाम, रामजी को दास कहायो रे ।
अरे मैं भटक्यो .....

जिस भजन में राम

जिस भजन में राम का नाम ना हो, उस भजन को गाना ना चाहिए।
जिस सभा में अपना मान न हो, उस सभा में जाना ना चाहिए॥

जिस माँ ने हमको जन्म दिया, उसे कभी भुलाना ना चाहिए।
जिस पिता ने हमको पाला है, उसे कभी सताना ना चाहिए॥
जिस भजन में राम .....

चाहे भाई कितना दुश्मन हो, उससे राज छुपाना ना चाहिए।
चाहे पत्नी कितनी प्यारी हो, उसे राज बताना ना चाहिए॥
जिस भजन में राम .....

चाहे बेटा कितना प्यारा हो, उसे सर पे बिठाना ना चाहिए।
चाहे बेटी कितनी प्यारी हो, उसे घर-घर घुमाना ना चाहिए॥
जिस भजन में राम .....

चाहे कितनी गरीबी आ जाये, प्रभु नाम भुलाना ना चाहिए।
चाहे कितनी अमीरी आ जाये, अभिमान दिखाना ना चाहिए॥
जिस भजन में राम .....

मुझे अपनी शरण में, ले लो राम

मुझे अपनी शरण में, ले लो राम, ले लो राम
लोचन मन मे, जगह न हो तो
चरण कमल मे, ले लो राम, ले लो राम

जीवन देके जाल बिछायाँ
रचके माया नाच नचाया
इस जीवन मे मिले न तुम तो
पद पंकज मे, ले लो राम, ले लो राम
मुझे अपनी शरण में .....

तूमने लाखो पापी तारे
मेरी बारी बाजी हारे
मेरे पास न पुण्य की पूंजी
पद पुजन मे, ले लो राम, ले लो राम
मुझे अपनी शरण में .....

दर दर भटकुँ दर दर भटकुँ
कहाँ कहाँ अपना सर पटकुँ
चिंता मेरी तभी मिटेगी
जब चिंतन मे, लोगे राम, लोगे राम
मुझे अपनी शरण में .....

सीताराम सीताराम

सीताराम सीताराम, सीताराम कहिये
जाही विधी राखे राम, ताहि विधी रहिये ।

मुख मे हो राम नाम, राम सेवा हाथ में
तु अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में ।
विधी का विधान जान, हानी लाभ सहिये,
जाही विधी राखे राम, ताहि विधी रहीये ॥
सीताराम सीताराम .....

किया अभिमान तो फिर, मान नही पायेगा
होगा वही प्यारे जो, श्री रामजी को भायेगा ।
फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिये
जाही विधी राखे राम, ताहि विधी रहिये ॥
सीताराम सीताराम .....

जिंदगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के
महलों मे राखे चाहे, झोपड़ी मे वास दे ।
धान्यवाद निर्विवाद, राम राम कहिये
जाहि विधी राखे राम, ताहि विधी रहिये ॥
सीताराम सीताराम .....

आशा एक रामजी से, दुजी आशा छोड़ दे
नाता एक रामजी से, दुजा नाता तोड दे ।
साधु संग राम रंग, अंग अंग रंगिये
काम रस त्याग प्यारे, राम रस पगिये ॥
सीताराम सीताराम .....

मंगल भवन, अमंगल हारी

मंगल भवन, अमंगल हारी
द्रवहुँ सु दशरथ, अजरबिहारी
राम सीयाराम सीयाराम जय जयराम

होई है वही जो, रामरचि राखा
क्योंकर तर्क, बढ़ावे साखा
राम सीयाराम सीयाराम जय जयराम

धीरज धरम, मित्र अरु नारी
आपद काल, परखीये चारी
राम सीयाराम सीयाराम जय जयराम

जेहि के तेहि, पर सत्य सनेहुँ
सो तेही मिल ही, ना कछु संदेहुँ
राम सीयाराम सीयाराम जय जयराम

जाकी रही, भावना जैसी
प्रभु मुरती देखी दिन तैसी
राम सीयाराम सीयाराम जय जयराम

रघुकुल रिती, सदा चली आई
प्राण जाए पर वचन ना जाई
राम सीयाराम सीयाराम जय जयराम

रामजी की निकली सवारी

दोहा

सिर पे मुकूट सजे, मुख पे उजाला, हाथ धनुष और गले मे पुष्प माला
हम दास इनके, ये सबके स्वामी, अनजान हम ये अंतरयामी
शीश झुकाओ, राम गुण गाओ
बोलो श्री विष्णु के अवतारी

रामजी की निकली सवारी, रामजी की लीला है न्यारी
एक तरफ लक्ष्मण एक तरफ सीता, बीच में जगत के पालनहारी
रामजी की निकली .....

धीरे चला चल ओ रथ वाले, तोहे खबर क्या ओ भोले भाले
एक बार देखो जी ना भरेगा, सौ बार देखो फिर जी करेंगा
व्याकुल बड़े है, कबसे खडे है, दर्शन के प्यासे ये सब नर नारी
रामजी की निकली .....

चौदह बरस का वनवास पाया, माता-पिता का वचन निभाया
धोखे से हरली रावण ने सीता, रावण को मारा लंका को जीता
तब-तब वो आए, तब तब ये आए, जब-जब दुनिया इनको पुकारी
रामजी की निकली .....

मतवाला हो जा, राम की भजनीयाँ में

मतवाला हो जा, राम की भजनीयाँ में
राम की भजनीयाँ में, श्याम की भजनीयाँ में

मतवाले हूए थे, राजा दशरथ
पुत्र पे प्राण गवाएं डाला ।

मतवाले हुए थे, राजा हरिशचंद्र
सत्य पे प्राण गवाएं डाला ।

मतवाले हुए थे, राजा मोरध्वज
पुत्र पे आरा चलाए डाला ।

मतवाले हूए थे, बजरंग बली
पलभर में लंका जलाए डाला

मतवाली हुई थी, मिराबाई
विष को अमृत बनाए डाला

शिक्षा दे रही जी हमको

शिक्षा दे रही जी हमको, रामायण अति भारी ।
गृहस्थाश्रम रहकर प्यारे मत परणो बहुनारी ।
वृद्धावस्था मे दशरथ की कैकेयी बात बिगारी ॥ १ ॥

राज्य छोड वन चले रामजी, पितु आज्ञा सिरधारी ।
अब तो पिता की मूँछ उखाडन, की करते तैयारी ॥ २ ॥

रंगमहल के सर्व सुखो पर, जिसने ठोकर मारी ।
वन मे रही पति के संग मे, सतवंती सियनारी ॥ ३ ॥

विपति समय मे संग राम के, लक्ष्मन करी तैयारी ।
अब तो खून पिये भाई का, रहे मुकदमा जारी ॥ ४ ॥

लक्ष्मण सीस झुका सीता को, कहता था महतारी ।
हाय आजकल तो भाभी को, कहते आधी नारी ॥ ५ ॥

राजतिलक की गेंद बनाकर, खेलन लगे खिलाडी ।
इधर रामजी उधर भरतजी, दोनो ठोकर मारी ॥ ६ ॥

चरण पादुका धरी सिंहासन, ये ही बात विचारी ।
साधु बनकर रहे भरतजी, नही हुआ राज्य अधिकारी ॥ ७ ॥

तन मन से अति सेवा की थी, हनुमान बल धारी ॥
अब तो मुख पर करे प्रशंसा, पीछे देवे गारी ॥ ८ ॥

लोभ और तलवार देखि नही, सिया ने हिम्मत हारी ।
तनिक लोभ मे धर्म गवावे, हाय आजकल नारी ॥ ९ ॥

पण्डित था लंकेश बुद्धि मे, तेज बहुत बलधारी ।
काम क्रोध मद लोभ मोह से, राक्षस भया अनाडी ॥ १० ॥

भक्त विभीषण ने भाई की, संगति बुरी विचारी ।
अच्छी संगति मे तुम जाओ, कहता वेद पुकारी ॥ ११ ॥

श्री रुद्राष्टकम्

दोहा

हाहाकार कीन्ह गुर, दारुन सुनि शिव शाप ।
कंपित मोहि बिलोकि अति, उर उपजा परिताप ॥
करि दंडवत सप्रेम द्विज, शिव सन्मुख कर जोरि ।
बिनय करत गद्गद् स्वर, समुझि घोर गति मोरि ॥

नमामी शमीशान निर्वाणरुपं । विभुं व्यापकं ब्रम्हवेदस्वरुपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाश माकाशवासं भजेहम् ॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकालकालं कृपालं । गुणागारसंसारपारं नतोहम् ॥
तुषाराद्रिशंकाशगौरं गभीरं । मनोभूतकोटिप्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगंगा । लसदभालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नानं नीलकंठ दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भंपरेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयःशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं । भजेहम् भवानीपति भावगम्यं ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी ॥
चिदानंदसंदोहमोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवाशं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजा । नतोहमं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥

श्लोक

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं, विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

सर से अंग-अंग मृगछाला

(तर्ज - खईके पान बनारसवाला)

भंग का रंग जमा भोले ने, और किया हरी का ध्यान
यशोदा के घर झुल रहे थे, पलने मे भगवान

सर से अंग-अंग मृगछाला, लिपटा नाग भयंकर काला
आया दुर देश से जाठ दिखादो री
मैय्या तेरो नंदलाल, की जोगी द्वारे खडा मतवाला

बडी दुर से आया, मै तो चल-चल के थक गया, भोले-भोले-भोले
कोई घर ना बताया, मै तो कबसे तरस रहा, भोले-भोले-भोले
मै ढूँढ-ढूँढ के हारा, मै फिर रहा मारा मारा
माई बडी मुश्किल से, मैने पाया तेरा द्वारा ।
मिला द्वारा तो २, करदे निहाल
जोगी द्वारे .....

चल भाग रे जोगी, कोई जुलम करेगा, भोले-भोले-भोले
तेरा रुप अनोखा, मेरा लाल डरेगा, भोले-भोले-भोले
माँ बोली रोते-रोते, कान्हा आँखो की ज्योति ॥
अब तु तो नाना करना, जा लेजा हिरे मोती ॥
मोती कंचन से २ भर दुंगी थाल
जोगी द्वारे .....

फिर रोया कन्हैया, फिर डर गई मैय्या, भोले-भोले-भोले
जरा रुक रे जोगी, तेरी लुंगी बलय्या, भोले-भोले-भोले
बोली मै आती हुँ, तुझको दिखलाती हुँ २
मेरा छोटा-सा प्यारा है गोपाल
जोगी द्वारे .....

बम बम लहरी

बम बम लहरी, ओम शिवलहरी
सब गावें, अकड बम शिवलहरी

गंगा जी की धारा बोले, अठो गट पानी बोले ।
शिवलहरी रे ओम शिवलहरी
अकड बम शिवलहरी .....

नारदजी की वीणा बोले, डम-डम डमरु बोले ।
शिवलहरी रे ओम शिवलहरी
अकड बम शिवलहरी .....

श्याम तेरी बंशी बोले, मिरा-नो एक तारा बोले ।
शिवलहरी रे ओम शिवलहरी
अकड बम शिवलहरी .....

ब्रम्हाजी का वेद बोले, अंतर ना भेद खोले ।
शिवलहरी रे ओम शिवलहरी
अकड बम शिवलहरी .....

बम बम लहरी, ओम शिवलहरी ।
सब गावे, अकड बम शिवलहरी ॥

हे भोळया शंकरा

हे भोळया शंकरा
आवळ तुला बेलाची २ बेलाच्या पानाची
हे भोळया शंकरा

गळयांमध्ये रूद्राक्षांच्या माळा
लाविले भस्म कपाळा
आवळ तुला ....

त्रिशुल डमरू हाथी
संग नाचे पार्वती
आवळ तुला ....

भोले नाथा आलो तुमच्या दारी
कुठे ही दिसेना पूजारी
आवळ तुला ....

सुबह सुबह ले, शिव का नाम

सुबह सुबह ले, शिव का नाम
करले बंदे, ये शुभ काम
सुबह सुबह ले, शिव का नाम
शिव आएंगे तेरे काम
ऊँ नमः शिवाय, ऊँ नमः शिवाय

खुद को राख लपेटे फिरते, औरो को देते धन दान
देवो के हित विष पी डाला, नीलकंठ को कोटी प्रणाम
सुबह सुबह ले शिव का नाम, शिव आएंगे तेरे नाम
सुबह सुबह .....

शिव के चरणों में मिलते है, सारे तीरथ चारो धाम
करनी का सुख तेरे हाथो, शिव के हाथो में परिणाम
सुबह सुबह ले शिव का नाम, शिव आएंगे तेरे नाम
सुबह सुबह .....

शिव के रहते कैसी चिंता, साथ रहे प्रभु आठो याम
शिव को भजले सुख पाएगा, मन को आएगा आराम
सुबह सुबह ले शिव का नाम, शिव आएंगे तेरे नाम
सुबह सुबह .....

एक दिन वो भोले भंडारी

(तर्ज - मिले न तुमको)

एक दिन वो भोले भंडारी, बनकर के ब्रजनारी, गोकुल में आ गये है ॥
पार्वती भी मना के हारी, ना माने त्रिपुरारी, गोकुल में आ गये है ॥

पार्वती से बोले ..... मै भी चलुंगा तेरे संग में
राधा संग श्याम नाचे ..... मै भी नाचुंगा तेरे संग में
रास रचेगा ब्रज में भारी, हमे दिखाओ प्यारी ।
गोकुल में .....

ओ मेरे भोले स्वामी ..... कैसे ले जाऊँ तोहे संग में
मोहन के सिवा वहाँ ..... दुजा पुरुष न आये रास में
हँसी करेगी ब्रज की नारी, मानो बात हमारी ।
गोकुल में .....

ऐसा बना दो मुझको .... जाने न कोई इस राज को
मै हुँ सहेली तेरी .... ऐसा बताना ब्रजराज को
लगा के जुडा पहनके साडी, चाल चले मतवाली ।
गोकुल में .....

हँस के सखी ने कहा .... बलीहारी जाँऊ इस रुप मे
एक दिन तुम्हारे लिये .... आये मुरारी इस रुप में
मोहनी रुप बनाये मुरारी, अब के तुम्हारी बारी ।
गोकुल में .....

देखा मोहन ने उनको ..... समझ गये वो सब बात रे
ऐसी बजाई बंसी .... सुध बुध भुले भोलानाथ रे
सर से खिसक गई जब साडी, मुस्काये गिरधारी ।
गोकुल में .....

दिन दयालु तेरा ..... कब से गोपेश्वर हुआ नाम रे
ओ मेरे भोले बाबा ..... तब से वृंदावन हुआ धाम रे
गोपीचंद कहे त्रिपुरारी, रखीयों लाज हमारी ।
गोकुल में .....

सज रहे भोले बाबा

सज रहे भोले बाबा, निराले चोले मे ।
निराले चोले मे, मतवाले चोले मे ॥

है भेष निराला (जय हो), पीये भंग का प्याला (जय हो)
सर जटा बढाये (जय हो), तन भषम रमाये (जय हो)
पग घुंघरु साजे (जय हो), त्रिशुल विराजे (जय हो)
सिर पे है गंगा (जय हो), मस्तक पे चंदा (जय हो)

मेरे भोले बाबा की, अजब है बात ।
चले है संग लेकर के, भूतो की बारात ॥
सज रहे भोले .....

है भांग का जंगल (जय हो), जंगल में मंगल (जय हो)
भुतो की पलटन (जय हो), आ गई है बन ठन (जय हो)
ले भांग का गठ्ठा (जय हो), सिर पे डुपट्टा (जय हो)
सब देख रहे है (जय हो), हो हक्का बक्का (जय हो)
पीकर के प्याले (जय हो), हो गये मतवाले (जय हो)
कोई नाचे गावे (जय हो), कोई ढोल बजावे (जय हो)
कोई राह बतावे (जय हो), कोई मुँह बिचकावे (जय हो)
भोले भंडारी (जय हो), पहुचे ससुरारी (जय हो)
भूतो कि टोली लेकर, चले है ससुराल ।
वो भोले जी दिगंबर, वो नंदी पे सवार ॥
सज रहे भोले .....

सब देख के भागे (जय हो), ये नर और नारी (जय हो)
कोई आगे अगाडी (जय हो), कोई भागे पिछाडी (जय हो)
खुल गई किसी की (जय हो), धोती और दाडी (जय हो)
कोई कुदे धम-धम (जय हो), कोई बोले बम-बम (जय हो)
कोई कद का छोटा (जय हो), कोई एकदम मोटा (जय हो)
कोई कद का लम्बा (जय हो), कोई तार का खंबा (जय हो)
कोई एकदम काला (जय हो), कोई दो सिर वाला (जय हो)
भक्त गुण गाये (जय हो), मन मे हरसाए (जय हो)
त्रिलोक के स्वामी (जय हो), क्या रुप बनाये (जय हो)
भोले के साथी (जय हो), है अजब बराती (जय हो)
भूतो कि टोली लेकर, चले है ससुराल ।
वो भोले जी दिगंबर, वो नंदी पे सवार ॥
सज रहे भोले .....

ऐसी सुबह न आए

दोहा

शिव है शक्ति, शिव है भक्ति, शिव है मुक्तिधाम
शिव है ब्रम्हा, शिव है विष्णु, शिव है मेरा राम

ऐसी सुबह न आए, आए न ऐसी शाम
जिस दिन जुंबा पे मेरी, आए न शिव का नाम

मन मंदिर में वास है तेरा, तेरी छवी बसाई
प्यासी आत्मा बनकर जोगन, तेरी शरण में आई
तेरे ही चरणों में पाया, मैने ये विश्राम
ऐसी सुबह न .....

तेरी खोज मे ना जाने, कितने युग मेरे बिते
अंत में काम क्रोध मत हारे, ऐ भोले तुम जीते
मुक्त किया प्रभु तुमने मुझको, शत् शत् है प्रणाम
ऐसी सुबह न .....

सर्वकला संपन्न तुम्ही हो, ऐ मेरे परमेश्वर
दर्शन देकर धन्य करो अब, ऐ त्रिनेत्र महेश्वर
भवसागर से तर जाएगा, लेकर तेरा नाम
ऐसी सुबह न .....

बम बम भोला, तेरे द्वारे आता रहूँ

(तर्ज - मैय्या हो गंगा मैय्या)

बम बम भोला, तेरे द्वारे आता रहुँ
तेरे चरणो में मस्तक नवाता रहूं - नवाता रहुँ
भोला, ओ बम बम भोला, भोला, ओ बम बम भोला

पुण्य सावन महीने में आऊँ
गंगाजल भर काँवडिया लाऊँ
तेरा ध्यान धरु, तेरी पूजा करु
तेरी बस्ती में हरदम मैं आता रहुँ - मैं आता रहुँ
भोला, ओ बम-बम भोला

तेरे दर पे चला आ रहा हुँ
गीत भक्ति के मैं गा रहा हुँ
तेरा नाम रटुँ, तेरा ध्यान धरु
तूझको भजनों से हरदम रिझाता रहुँ - रिझाता रहुँ
भोला, ओ बम-बम .....

बीच मंझधार में मैं पडा हुँ
तेरी आशा लिए मैं खडा हुँ
मेरे मन में उमंग, सदा रहुँ तेरे संग
भंग लोटा भर भर के चढ़ाता रहुँ - मैं चढ़ाता रहुँ
भोला, ओ बम बम भोला, भोला ओ बम बम भोला

काशी नगरी प्यारी

काशी नगरी प्यारी, जहाँ भोले का दरबार
दर्शन करले प्राणी, जीवन मिले न बारंबार

सुरज की किरणें तेरी, ज्योत जगाये
चंदा की किरणें तेरी, आरती उतारे
टीम टीम करते तारे, जैसे डमरु की आवाज
दर्शन करले प्राणी, जीवन मिले न बारंबार
काशी नगरी .....

गंगा की धारा भोले, भक्ति है तेरी
यमुना की धारा भोले, शक्ति है तेरी
भक्ति-शक्ति संगम, करे जीवन का उध्दार
दर्शन करले प्राणी, जीवन मिले न बारंबार
काशी नगरी .....

भोले शंकर, नाम है तेरा
कष्ट मिटाना सबका, काम है तेरा
गाये धुम मचाये, करे तेरी जय जयकार
दर्शन करले प्राणी, जीवन मिले न बारंबार
काशी नगरी .....

जल थल नभ प्रभु, तेरे अधारे
करुणामय प्रभु, भक्त पुकारे
कर दो बेडा पार प्रभु तो, हो जाये जय जयकार
दर्शन करले प्राणी, जीवन मिले न बारंबार
काशी नगरी .....

ओम बम बम भोलेनाथ

ओम बम बम भोलेनाथ नांदियाँ साथ बडे हो दानी
महीमा न किसी ने जानी ॥
शिवभाल पे निर्मल चंद्रमा है, अर्धंग मे पार्वती माँ है ।
ब्रम्हलोक से गंगा आन जटा मे समानी, महीमा न किसी ने जानी ॥ १ ॥

त्रिनेत्र और माला मुण्ड की, शोभा क्या देती त्रिपुण्ड की
यश गाते गाते थकी वेद की वाणी, महीमा न किसी ने जानी ॥ २ ॥

कानो में कुंडल झलक रहे, शिव वासु की अंग मे लिपट रहे ।
विष की शोभा कंठ मे न जाय बखानी, महीमा न किसी ने जानी ॥ ३ ॥

डमरु त्रिशुल की छबि न्यारी, वट तर है बाघम्बर धारी ।
कैलाश आपका भवन बना लासानी, महीमा न किसी ने जानी ॥ ४ ॥

इच्छित फल देनेवाले हो, दुख दर्द को हरनेवाले हो ।
जो शरण गये पावे वस्तु मनमानी, महीमा न किसी ने जानी ॥ ५ ॥

नैय्या भवसागर बीच पड़ी, शिव पार करो बड़ी देर भई ।
मुझ दास की पुरी आस करो वरदानी, महीमा न किसी ने जानी ॥ ६ ॥

चंदन चांवल बेल की पत्तियाँ

चंदन चांवल बेल की पत्तियाँ, शीश चंद्रमा धारे
वो भोले नाथ हमारे ।
व्याग्र कुडासन मार के आसन, साँप लिए गल माही ।
भस्म लगाकर सारे अंग मे, मुण्ड माल गल डाले ॥ १ ॥
वो भोले नाथ हमारे .....

बुढ़ा बैल सवारी हरदम, शिश पे गंग की धारा ।
कर मे डमरु शंख बिराजे, गरज गरज ललकारे ॥ २ ॥
वो भोले नाथ हमारे .....

भंग पिये अर्धंग निशा में, लगी समाधी प्यारी ।
राम नाम की धुन मे वो तो, कल की खबर बिसारे ॥ ३ ॥
वो भोले नाथ हमारे .....

अर्धांगीनी ले सती पार्वती, पुत्र गणेश मनाई ।
जिनको प्यारा श्मशान सबसे, हर दम योग निहारे ॥ ४ ॥
वो भोले नाथ हमारे .....

हो जावे जब दया किसी पर, उसके भाग्य उबारे ।
तुकडया दास कहे जब रुठे, मना मना कर हारे ॥ ५ ॥
वो भोले नाथ हमारे .....

जय जय शिवशंकर बम भोले

जय जय शिवशंकर बम भोले
तेरे दर्शन को मनवाँ डोले

नाथ गोपेश्वर शिव कैलासी, अगम निगम की काटो फांसी
तेरे दरस को आतुर मनवाँ, दर्शन दे दो बम भोले ॥ १ ॥
जय जय शिवशंकर....

पुण्य महीना सावन आया, हरिद्वार से कावड लाया ।
गंगाजल से भरी गगरीयाँ, इसको अपने माथे ले ॥ २ ॥
जय जय शिवशंकर....

छाया अँधेरा राह दिखा दे, बाँह पकडकर पार करा दे ।
भव सागर मे डुब रहा हूँ, पार लगा दे बम भोले ॥ ३ ॥
जय जय शिवशंकर....

जब हमको भोले तेरा सहारा, क्या कर लेगा काल हमारा ।
चट्टानो से जा टकराये, चल जोगी के संग होले ॥ ४ ॥
जय जय शिवशंकर....

देखो जी भोला ना दरवाजा खोला ना

देखोजी भोला ना, दरवाजा खोला ना, नंदी ने घंटी बजाई
नागो ने थाली सजाई रे भोला, नागो ने थाली सजाई

किसी ने लाई है, दही की मटकी
किसी ने दूध है लाया
मैने अपने मन से भोले बाबा को नहलाया
पंडा भी आए जयकारे लगाये
और पूजा की थाली सजाई
नागो ने थाली सजाई.....

भूत भी आए और दूत भी आए
आए गुरु और चेला
मेरे भोले बाबा के द्वारे, लगता है भक्तो का मेला
भक्त भी आए जयकारे लगाए
और पुजा की थाली सजाई
नागो ने थाली सजाई.....

मेरे सिर पर रख दो

मेरे सिर पर रख दो बाबा, अपने ये दोनो हाथ
देना हो तो दिजीए, जनम-जनम का साथ

देने वाले श्याम प्रभु से, धन और दौलत क्या मांगे
श्याम प्रभु से मांगे तो फिर, नाम और इज्जत क्या मांगे
मेरे जीवन मे अब भर दो, तुम किरपा की बरसात
देना हो तो दिजीए .....

श्याम तेरे चरणो की धुली, धन दौलत से महंगी है
एक नजर किरपा की बाबा, नाम इज्जत से महंगी है ।
मेरे दिल की तमन्ना यही है, मै सेवा करु दिन रात
देना हो तो दिजीए .....

झुलस रहे है गम की धुप मे, प्यार की छैय्याँ कर दे तु
बिन मांझी के नाव चले ना, अब पतवार पकडले तु
मेरा रस्ता रोशन कर दे, छाई अंधियारी रात
देना हो तो दिजीए .....

सुना है हमने शरणागत को, अपने गले लगाते हो
ऐसा हमने क्या मांगा, जो देने से घबराते हो
चाहे जैसे रख बनवारी, बस होती रहे मुलाकात
देना हो तो दिजीए .....

आओ कन्हैय्या, आओ मुरारी

(तर्ज - तुम्ही ही मेरे मंदिर तूम ही मेरे)

आओ कन्हैय्या, आओ मुरारी
तेरे दर पे आया, सुदामा भिखारी

क्या मै बताऊँ, क्या मैं सुनाऊँ
एक दु:ख नही है, जो मनमे छिपाऊँ
घर-घर की जानते हो, सब तुम मुरारी

ना कोई घर है, ना तो डगर है
फटे हुए कपड़े नाथ, तुम्हे सब खबर है
आकर के देखो, दशा ये हमारी

आँखो मे आँसु, उठे ना कदम है
आओ कन्हैय्या अब, होठों पे दम है
क्या तुम परिक्षा, लेते हो हमारी

आवाज मेरी, पहुँची नही क्या
द्वारपाल ने जाके, खबर नही दी क्या
ऐसे निठुर क्यो, बने हो मुरारी

आओ कन्हैय्या, टूटे अब दम है
अगर अब ना आओ, तो मोरी कसम है
मोरी कसम सुन, आए है मुरारी

जाने क्या जादु भरा हुआ

जाने क्या जादु भरा हुआ, श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता मैं
मन चमन पार्थ का हरा हुआ, श्री कृष्ण तुम्हारी गीता में

जब शोक मोह से घिर जाते
तब वही ज्ञान हृदय लाते ।
दिखे दुःख कब का टरा हुआ
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में
जाने क्या .....

जब जन्म मरण से डरते है
तब ध्यान आत्म का धरते है
दीखे कब का भव तरा हुआ
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में
जाने क्या .....

हरि मिल जाए यह मन आया
हुँ आत्म रुप प्रभु बतलाया ।
दिखे कब का युग जुरा हुआ
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में
जाने क्या .....

गीता संतो की जीवन है
भक्ती भी सुर संजीवन है ।
विज्ञान गढ़ा धन भरा हुआ
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में
जाने क्या .....

जिनके सिर पर श्याम प्यारे

(तर्ज - हम सफर मेरे हम सफर)

जिनके सिर पर श्याम प्यारे, की दया का हाथ है
हर घड़ी हर पल कन्हैय्या, रहता उनके साथ है

देख ले दर्शक तुझे हो, अपनी पलके खोल के
श्याम के प्यारे मिलेंगे, मस्तियों में झूमते
हर तरफ खुशियाँ है उनके, फुलो की बरसात है
जिनके सिर पर .....

कौन है इतना दयालु, देव मेरे श्याम सा
हो कृपागर जिनपे इनकी, डर उसे किस बात का
राह चाहे हो घणेरी, इनकी वो परभात है
जिनके सिर पर .....

प्रेम का रसिया कन्हैय्या, प्रेम करके देख ले
डूब जा तु श्याम रस में, द्वार दिल के खोल ले
प्रेमियों को ढूँढते है, प्रेम की पहचान है
जिनके सिर पर .....

प्रेमियों को श्याम प्यारे, पे बडी ही नाज है
कौन किसका है दिवाना, ये पहेली राज है
हमको ऐसे देवता से, मिलने की बड़ी आस है
जिनके सिर पर .....

छोटी सी थांरी आँगली

छोटी सी थांरी आँगली जी
कईयां गिरवर ने उठायो सा, ओ साँवरा
कईयां पर्वत ने उठायो सा, ओ साँवरा

अजब निराली थांकी माया, कांई सू जानी जावे रे साँवरा
अनहोनी ने होनी कर दे, पर्वत राई में बदल दे
जब-जब पाप जगत में छाई, तब-तब लियों अवतार कन्हाई
लोहारो मजबूत खम्बो, फाड़के जी कईयां नरसिंह रुप बनायो सा
ओ साँवरा .....

एक दिन कौरव द्रोणाचारी, वाने खोटी नियत बिचारी
पकड़कर लाई द्रौपदी नारी, वाने किन्ही बीच उघाड़ी
ऐसो तो कारण थाने याद थोजी, पर्वत कपड़ा रो बनायो सा
ओ साँवरा .....

मीरा बाई रो जहर पचायो, नानी बाई रो भात भरायो
ऐसो कांईरा घबराई, म्हारी क्यों न करो सहाई
खत लिख गयो वा साँवरोजी, थाने नरसी भगत बुलायो सा
ओ साँवरा .....

थाने परदे में, राखाजी बाबा श्याम

थाने परदे में, राखाजी बाबा श्याम
नजर लग जावेगी

लुण राई वारो, लुण राई वारो
थाने परदे ...

जिसने तुम्हे बनाया बाबा, सुंदर खूब बनाया
उपर से तेरे भक्तों ने, सुंदर खूब सजाया
बुरी नजरां से, बचावाँ थाने श्याम
नजर लग जावेगी
थाने परदे ...

लुण राई वारो, लुण राई वारो
थाने परदे ...

बाबा थारो रुप निरालो, भक्तारा मन भावे
म्हारा घरा ले चाला थाने, म्हारे मन मे आवे
सारी दुनिया मे, घुमावा बाबा श्याम
नजर लग जावेगी
थाने परदे ...

लुण राई वारो, लुण राई वारो
थाने परदे ...

फुलो में सज रहे है, श्री वृंदावन बिहारी

फुलो में सज रहे है, श्री वृंदावन बिहारी
और साथ सज रही है, वृषभान की दुलारी

तेढ़ासा मुकूट सर पर, रखा है किस अदा से
करुणा बरस रही है, करुणा भरी निगाह से
बिन मोल बिक गई है, जब से छबी निहारी
फुलो मे सज रहे है .....

बहियाँ गले मे डाले, जब दोनो मुस्कुराते
सबको ही प्यारे लगते, सबके ही मन को भाते
इन दोनो पे मै सदके, इन दोनो पे मै वारी
फुलो मे सज रहे है .....

श्रृंगार तेरा प्यारे, शोभा कहु क्या उसकी
एक पे गुलाबी फटका, उसपे गुलाबी साड़ी
फुलो मे सज रहे है .....

नीलम सा सोहे मोहन, स्वर्णिम सी सोहे राधा
इत नंद का है छोरा, उत भानू की दुलारी
फुलो मे सज रहे है .....

चुन चुन के कलियाँ किसने, बंगला तेरा बनाया
दिव्य आभुषणों से, जिसने तुम्हें सजाया
इन हाथो पे मै सदके, उन हाथो पे मै वारी
फुलो मे सज रहे है .....

अपने चरणों की रज, साँवरे दिजीए

अपने चरणों की रज, साँवरे दिजीए
जिंदगी ये हमारी, सँवर जाएगी

लाख अवगुण भरे है, गिनाएँ तो क्या
शर्म खुद पर बहुत है, बताएँ तो क्या
माफ तुम करोगे, दयालु हमे
जिंदगी ये हमारी, बिखर जाएगी
अपने चरणों की रज.....

आप दाता दयावान दानी बडे
कितने पापी चरण, रज को पाकर तरे
महिमा चरणों की, भगवन है मालूम हमे
रास सतसंग की, हमको मिल जाएगी
अपने चरणों की रज.....

अब निभालो-निभालो कन्हैय्या हमे
भक्त वादा करे, साँवरे हम खड़े
उम्र देखते तुम्हें, युँ गुजर जाएगी
अपने चरणों की रज.....

राधा की पायल

राधा की पायल, छम-छम बाजे
छम-छम बाजे पायल, राधा रानी नाचे
श्याम ने छेड़ा तराना, राधा का श्याम दिवाना

राधा जब पायल छनकावे
कानूड़ो झट दौड़यो आवे
करे ना कोई बहाना
राधा का श्याम .....

हरी-भरी धरती, हर्‌यो-भर्‌यो उपवन
गूंज रह्‌यो, सारो वृन्दावन
गूंज रहा बरसाना
राधा का श्याम .....

गौर वरण की राधा प्यारी
सांवली सूरत कृष्ण मुरारी
ज्यूं शम्मा परवाना
राधा का श्याम .....

भक्त भजे श्री राधे २
राधेजी श्री श्याम से मिला दे
प्रेम का मंत्र सुहाना
राधा का श्याम .....

घनश्याम म्हारा हृदया में बस जाओ

घनश्याम म्हारा हृदया में, बस जाओ दीनानाथ
मै चरण कमल रो दास हुँ, हां जी दीनानाथ
घनश्यामजी ओ जी घनश्याम, नंदलालजी ओ जी नंदलाल

जीवन नैय्या दास की, डुब रही मझधार
जाने कईयां साँवरा, हो भवसागर पार
नंदलाल म्हारो, बेडोपार लगा दो दीनानाथ ॥
मै चरण कमल रो दास हुँ .....

थांका ही संसार में, दुख पाऊँ दिन रैन
दर्शन दिजौ साँवरा, तड़पत है दो नैन
घनश्याम म्हारी, आँख्या मे बस जाओ दीनानाथ ॥
मै चरण कमल रो दास हुँ .....

थांका ही ब्रम्हांड में, लख चौरासी यौन
करनी का फल भोगकर, पाई मिनखा यौन
ब्रजराज म्हारो, आवागमन मिटा दो दीनानाथ ॥
मै चरण कमल रो दास हुँ .....

ऐ मुरलीधर साँवरा, ऐ ब्रज माखन चोर
दास युगल की बिनती, सुनियों जुगलकिशोर
महाराज थांको, नटवर रुप दिखा दो दीनानाथ ॥
मै चरण कमल रो दास हुँ .....

होलीया मे उड़े रे गुलाल

फागुन मे भी श्याम का, चम-चम-चमके द्वार
होता है उस द्वार से, सबका बेडा पार
हो-हो ... जो भी आता है, हो जाता है लाल
अपने ही रंग में रंग देते है, सबको दिनदयाल

होलीया में उड़े रे गुलाल, श्यामजी के मंदिर में
काले भी हो जाते है लाल । श्याम जी के मंदिर में

श्याम धनी से माँग के देखो २, हो जाओगे मालामाल
श्यामजी के मंदीर मे ॥ होलीया में ॥

देवरानी जेठानी बोले चालो - चालो सासुजी २
आपा भी हो जावांगा निहाल
श्यामजी के मंदीर में ॥ होलीया में ॥

आये है कैलाश वरुनजी । हाथो मे लेकें गुलाल
श्यामजी के मंदिर में ॥ होलीया में ॥

श्याम धनी को नीलो घोडो । छम-छम नाचे बेहाल
श्यामजी के मंदिर में ॥ होलीया में ॥

राधिका गोरी से

(तर्ज - हम तुम चोरी से)

राधिका गोरी से, बिरज की छोरी से
मैय्या करा दे मेरो ब्याह
उमर तेरी छोटी है, नजर तेरी खोटी है
कैसे करा दुँ तेरो ब्याह ।

जो नही ब्याह कराए, तेरी गैय्या नाही चराऊ
आज के बाद मेरी मैय्या, तेरी डेहरी पर ना आऊ
आएगा रे मजा, रे मजा, अब इस जीत हार का
राधिका गोरी से .....

चंदन की चौकी पर, मैय्या तुझको बैठाऊँ
अपनी राधा से मै, चरण तेरे दबवाऊँ
भोजन मैं बनवाऊँगा, बनवाऊँगा, छप्पन प्रकार के
राधिका गोरी से .....

छोटी सी दुल्हनियाँ, जब अंगना मे डोलेगी
तेरे सामने मैय्या, वो घूंघट ना खोलेगी
दाऊ से जा कहो, जा कहो, बैठेंगे द्वार पे
राधिका गोरी से .....

सुन बाते कान्हा की, मैय्या हौले मुस्काए
लेके बलैय्या मैय्या, हिवड़े से लियो लगाए
नजर कहीं लग जाए ना, लग जाए ना, मेरे लाल को
राधिका गोरी से .....

मेरे सिर पे सदा, तेरा हाथ रहे

मेरे सिर पे सदा, तेरा हाथ रहे
मेरा साँवरा हमेशा, मेरे साथ रहे

मैं तो जन्मो से, तेरा दीवाना हुँ
तेरी कृपा से, मै अन्जाना हुँ
मेरी झोली में ४
मेरी झोली मे ये, तेरी सौगात रहे
मेरा साँवरा हमेशा ....

तेरी कृपा जो, मुझपे हो जाएगी
मेरी करनी तो बाबा, धो जाएगी
तेरे छोटे से ४
तेरे छोटे से दीवाने की, ये बात रहे
मेरा साँवरा हमेशा ....

मेरी मुश्किल का, हल हो जाएगा
मेरा जीवन, सफल हो जाएगा
ओ बाबा अपनी ४
ओ बाबा अपनी, ये होती मुलाकात रहे
मेरा साँवरा हमेशा ....

हर साँस में हो सुमिरन तेरा

श्री कृष्ण गोविंद हरे मुरारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हर साँस मे हो सुमिरन तेरा, युँ बीत जाए जीवन मेरा
तेरी पूजा करते बीते साँझ सबेरा, युँ बीत जाए जीवन मेरा

नैनो की खिड़की से तुझको, पल-पल मैं निहारू
मन में बिठालु, तेरी आरती ऊतारू
डाले रहे तेरे चरणों में डेरा, युँ बीत जाए जीवन मेरा

जो भी तेरा प्यारा हो, वो मेरे दिल का प्यारा हो
मेरे सर का ताज, मेरी आँखो का तारा हो
सब में निहारू रूप सुनहरा, युँ बीत जाए जीवन मेरा

प्यार हो, सत्कार हो, एतबार हो तुम्हारा
सुख भी सारे और, याद हो इशारा
हो आत्मा पर तेरा ही डेरा, युँ बीत जाए जीवन मेरा
राधे राधे गोविंद, गोविंद राधे ....

राधा के मन में

राधा के मन में, बस गए कुँज बिहारी
श्याम रंग में रंग गई राधा, भूली सुदबुध सारी

श्याम नाम की चुनरी ओढ़ी, श्याम नाम की चुड़ियाँ
अंग अंग मे श्याम बसाए, मिट गई सारी दुरियाँ
कानो में कुंडल गल वैजन्ती, माला लागे प्यारी
राधा के मन .....

बैठ कदम की डाल कन्हैय्या, मुरली मधुर बजाए
साँझ सकारे मुरली के स्वर, राधा राधा गाए
इस मुरली की ताल पे जाए, ये दुनिया बलिहारी
राधा के मन .....

अधर सुधारस मुरलीराजे, कान्हा रास रचाए
कृष्ण रचैय्या राधा रसना, प्रेम सुधा बरसाए
प्रेम मगन हो सब मिल बोलो, जय हो कृष्ण मुरारी
राधा के मन .....

कमाल हो गया जी

कमाल हो गया जी, कमाल हो गया
मेरा बाबा लखदातार, जब मै आया इसके द्वार
बिना मांगे ही मैं देखो, मालामाल हो गया
कमाल हो गया जी ....

हारे का कहते है सहारा, बाबा लखदातार है
इसकी महीमा इतनी भारी, पाया ना कोई पार है
इसका सच्चा दरबार, ये भक्तो का है सरताज
इसके चरणों मे मैं आके, निहाल हो गया
कमाल हो गया जी ....

इसके दर पे खाली झोली, आते देखा मैंने
पर खाली झोली ना अब तक, जाते देखा मैने
इसकी लीला है महान, दर पर होते ऐसे काम
पल मे निर्धन भी ये देखो, मालमाल हो गया
कमाल हो गया जी .....

इसके जैसा बली न कोई, और कोई ना दानी
कृष्ण कन्हैय्या ने भी भक्तो, बात ये दिल से मानी
करले भगत तू इनका ध्यान, रखते ये भक्तो का मान
इनकी रहमत का किस्सा, सरेआम हो गया
कमाल हो गया जी.....

श्याम मुरली तो , बजाने आओ

श्याम मुरली तो, बजाने आओ
रुठी राधा, को मनाने आओ

ढूँढती है तुम्हे, ब्रज की बाला
रास मधुवन, मे रचाने आओ
श्याम मुरली तो, बजाने आओ

राह तकते है, कबसे ये ग्वाले
फिर से माखन, तो चुराने आओ
श्याम मुरली तो, बजाने आओ

इन्द्र फिर क्रोध, कर रहा ब्रज पर
नख पे गिरवर, को उठाने आओ
श्याम मुरली तो, बजाने आओ

अपने भक्तों को, फिर से मनमोहन
पाठ गीता, का पढ़ाने आओ
श्याम मुरली तो, बजाने आओ

करदो करदो बेड़ा पार

करदो-करदो बेड़ा पार, राधे अलबेली सरकार
राधे अलबेली सरकार, राधे अलबेली सरकार

बार-बार श्री राधे हमको, वृंदावन में बुलाना
आप भी दर्शन देना, बिहारीजी से भी मिलवाना
यही है विनती
यही है विनती बारंबार, राधे अलबेली सरकार

तेरी कृपा से राधा रानी, बनते है सब काम ।
छोड के सारी दुनियादारी, आ गए तेरे धाम ।
सून लो मेरी
सून लो मेरी करुण पुकार, राधे अलबेली सरकार
करदो .....

तेरी कृपा बिना श्रीराधे, कोई न बृज में आए ।
तेरी कृपा जो हो जाए तो भवसागर तर जाए ।
तेरी महिमा
तेरी महिमा अपरंपार, राधे अलबेली सरकार
करदो .....

वृंदावन की गली-गली में, धूम मची है भारी ।
श्री राधे-राधे बोल-बोलकर, झूम रहे नर-नारी ।
तेरी होवे
तेरी होवे जय-जयकार, राधे अलबेली सरकार
करदो .....

होली खेल रहे नंदलाल

(तर्ज - थांसु विनंती बारंबार)

होली खेल रहे नंदलाल, मथुरा की कुँज गलीन में
मथुरा की कुँज गलीन मे, गोकुल की कुँज गलीन में
होली ...

ग्वालो के संग मुरारी, सखीयन संग राधा प्यारी
झोलीन मे भरे गुलाल, मथुरा की कुँज गलीन मे

बजते है मृदंग सितारे, विनादि सखी कर धारे
संग बजे झाँझ करताल, मथुरा की कुँज गलीन मे

छज्जन पर सखी निहारे, रंग लोटन भर भर डारे
सब भिग रहे है ग्वाल, मथुरा की कुँज गलीन मे

पिचकारी ग्वाल निकारे, भर भर गोपीन पे मारे
सब भीग रही बृजबाल, मथुरा की कुँज गलीन मे

करते है ताता थैय्या, नाचे संग ग्वाल कन्हैय्या
गाता भागीरथजी ग्वाल, मथुरा की कुँज गलीन मे

सब मगन भए नर नारी, धन्य धन्य है कुंजबिहारी
कहे राजारामजी ग्वाल, मथुरा की कुँज गलीन मे

बंशी बजा के किधर गयो रे

(तर्ज - भक्तो को दर्शन दे गई रे)

बंशी बजा के किधर गयो रे, मोरे बाके साँवरिया
मुरली बजाके किधर गयो है, मोरे बाके साँवरिया

जब से सुनी तेरी, बैरन मुरलीयाँ
दिन नही चैन और, रात नही निंदिया
जाने क्या जादु कर गयो रे, मोरे बाके साँवरिया

बैरन हो गयी, रात की निंदिया
भूल सकु ना, श्याम की सुरतीयाँ
घांव कलेजे मे कर गयो रे, मोरे बाके साँवरिया

तेरे मिलन को, जियरा तरसे
नैना मोरे, सावन जैसे बरसे
बरस बरस घर भर आयो रे, मोरे बाके साँवरिया

हम सेवक कहे, मत तरसावो
भोले साँवरिया, दर्शन दिखावो
काहे को मोहे बिसराए दियो रे, मोरे बाके साँवरिया

आज्यो जी म्हारे देश

आज्यो जी म्हारे, आज्यो जी म्हारे
आज्यो जी म्हारे देश, साँवरा आज्यो जी म्हारे देश
थारी सांवली सूरत लंबा केश, साँवरा आज्योजी म्हारे देश

आवन-आवन कह गयाजी, कर गया कौल अनेक
गिनता-गिनता घीस गई जी - २
म्हारी आंगलिया री रेख, साँवरा आज्योजी म्हारे देश

कागज नहीं जी कलम नही जी, स्याही नही म्हारा देश
ऐजी पंक्षी रो परवेज नहीं जी - २
किस विध भेजू संदेश, साँवरा आज्योजी म्हारे देश

साँवरा ने मैं ढुँढन गई जी, धर जोगन को भेष
फिरता-फिरता जग फिरी जी - २
म्हारा धोला पड़ गया केश, साँवरा आज्योजी म्हारे देश

मोर मुकूट कटि कांचनीजी, घूंघरवाला केश
मीरा ने गिरधर मिल्याजी
धर नटवर रो वेष, साँवरा आज्यो जी म्हारे देश

छलीयाँ का भेष बनाया

छलीयाँ का भेष बनाया
श्याम चूड़ी बेचने आया

झोली कांधे धरी, जिसमें चुडीयाँ भरी
गलीयों में शोर मचाया, श्याम चुडी बेचने आया
छलीयाँ का .....

राधा ने सुनी, ललीता से कहीं
मोहन को तूरंत बुलाया, श्याम चूडी बेचने आया
छलीयाँ का .....

चूडी लाल नही पहनु, चूडी हरी नही पहनु
मुझे श्याम रंग है भाया, श्याम चूडी बेचने आया
छलीयाँ का .....

राधा पहनन लगी, श्याम पहनाने लगे
राधा ने हाथ बढ़ाया, श्याम चूडी बेचने आया
छलीयाँ का .....

राधा कहने लगी, तुम हो छलीयाँ बडे
धीरे से हाथ बढाया, श्याम चूडी बेचने आया
छलीयाँ का .....

बाबा ने दरबार लगाया

बाबा ने दरबार लगाया, दर्शन तो कर लैन दे
मैंनु नच लैन दे, मैंनु नच लैन दे

दिवाना हो गया मैं (जय हो), जब ये सिंगार देखा (जय हो)
मेरा मन झूम उठा (जय हो), जब ये दरबार देखा (जय हो)
केशरीया बागा पहने (जय हो), बाबा मुस्का रहे है (जय हो)
आज मस्ती मे झूमो (जय हो), यही समझा रहे है (जय हो)
जम कर प्यार बरसता देखो, श्याम प्रभु के नैन से
मैंनु नच लैन दे - २

तुम्हारे दर पे बाबा (जय हो), जो भी आया सवाली (जय हो)
झोलीयाँ भर गई उसकी (जय हो), गया ना कोई खाली (जय हो)
कौन साँचा तेरा (जय हो), जहाँ में डंका बजता (जय हो)
चरण धूली से तेरी (जय हो), नसीबा पल में बदलता (जय हो)
मुझको भी इसकी चौखट पे, मथ्था तो टेक लैन दे
मैंनु नच लैन दे - २

भक्त जितने भी आयें (जय हो), तेरी जयकार करते (जय हो)
और बनवारी तुमकों (जय हो), बडा ही प्यार करते (जय हो)
सभी बाबा के दर पे (जय हो), खजाना लूटते है (जय हो)
झोलीयाँ भरते बाबा (जय हो), खुशी से झूमते है (जय हो)
मैं भी आया बड़ी दूर से, झोली तो भरलैन दे
मैंनु नच लैन दे - २

श्याम घर आजाओ

(तर्ज - अगर तुम मिल जाओ)

श्याम घर आजाओ, जमाना छोड़ देंगे हम
तुम्हे पाकर जमाने भर से, रिश्ता तोड़ देंगे हम

तेरे दिदार के खातीर, तेरे दरबार में आए
मजा तब है तेरी आँखों से, आँखे चार हो जाए
श्याम तुझसे भी ना टूटे, वो रिश्ता जोड़ लेंगे हम

तेरे दर पे रहेंगे, दर को अपना घर बनालेंगे
तेरी सूंदर सी मूरत को, श्याम दिल मे बसा लेंगे
जहाँ तेरा दर ना मिले बाबा, वो रस्ता छोड देंगे हम

तु जग का पालन हारा है, तु दिनो का सहारा है
जो हारा श्याम दुनिया से, उसे तुने संभाला है
श्याम कभी मुश्किल में, नही मुख मोड़ लेना तुम

पलके ही पलके

पलके ही पलके बिछाएंगे, जिस दिन श्याम प्यारे घर आएंगे
हम तो है कान्हा के, जन्मों से दिवाने रे
मीठे-मीठे भजन सुनाएंगे, जिस दिन श्याम प्यारे घर आएंगे

घर का कोना कोना मैने, फूलों से सजाया है
बंदन वार बधाई, घी का दीप जलाया है
प्रेमी जनो को बुलाएंगे, जिस दिन श्याम प्यारे घर आएंगे

गंगा जल की झारी, प्रभु के चरण पखारूँ
भोग लगाऊ, लाड़ लडावू, आरती उतारूँ
खुश्बु ही खुश्बु उड़ाएंगे, जिस दिन श्याम प्यारे घर आएंगे

अब तो लगन एक ही मोहन, प्रेम सुधा बरसादे
जनम जनम की मैली चादर, अपने रंग में रंगादे
जीवन को जीवन बनाएंगे, जिस दिन श्याम प्यारे घर आएंगे

नटवर नागर नंद का लाला, मुरली मधुर बजाए
हम सब प्रेमी नाच नाच कर, गिरधर को रिझाये
नैनो से नैना मिलाएंगे, जिस दिन श्याम प्यारे घर आएंगे

क्यो भटके मन बाँवरे

(तर्ज - लाल दुपटटा)

क्यों भटके मन बाँवरे, तु क्यों रोता है
साँवरीये का प्रेमी होकर, धीरज खोता है ।
तु कर विश्वास ये प्यारे, साँवरा साथ है प्यारे

उगता है जो सुबह को सूरज, साँझ वो ढल जाता है
यह जीवन भी इसी तरह है, सुख-दुख आता जाता है
बल मांग प्रभु से (जीनेका), सुख दुख के आँसू (पीने का)
सुख में हँसता दुख में, तु क्यों नैन भिगोता है
साँवरीये का प्रेमी .....

राम ने भी दुख काँटे थे, चौदह बरस वनवास में
साँवरीये ने जन्म लिया, देखो कारावास में २
ये कहे कन्हैय्या (धर्म करो), बिन फल की इच्छा (कर्म करो)
कर्म हमारा अच्छा, कुल के पाप को धोता है
साँवरीये का प्रेमी .....

छोड़ दिखावा चकाचौंध तु, काहे मनमा भरमाए
ना जाने किस भेष में तेरे, नारायण घर आ जाए ...
दुख में ना कर तु (खुदगर्जी), सुख दुख रोनी (रब की मर्जी)
साँवरीये की रजा मे क्यों, नाराजी होता है
साँवरीये का प्रेमी .....

झुक गए बडे बडे सरदार

(तर्ज - थांसू विनंती बारंबार)

झुक गए बडे बडे सरदार, तेरी मोरछड़ी के आगे
तेरी मोर छड़ी के आगे, तेरी मोर छड़ी के आगे

तेरे आगे मान दिखाए, चाहे कोई अकड़ दिखाए
टूटा अहंकार हर बार, तेरी मोरछड़ी के आगे

राजा को रंक बनाए, नौकर भी सेठ कहाए
झुक गए लाखो साहूकार, तेरी मोर छड़ी के आगे

चाहे कोई घात लगाए, चाहे प्रतिघात लगाए
कट गई बड़ी बड़ी तलवार, तेरी मोर छड़ी के आगे

सूरज तेरी महिमा गाए, चरणों में शीश झुकाए
झुक गया कलयुग में संसार, तेरी मोर छड़ी के आगे

जिस देश में, जिस भेष में

जिस देश में, जिस भेष में, परिवेश में रहो
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो

जिस काम में, जिस धाम में, जिस नाम में रहो
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो

जिस संग में, जिस रंग में, जिस ढंग में रहो
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो

जिस योग में, जिस भोग में, जिस रोग में रहो
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो

जिस देह में, जिस गेह में, जिस स्नेह में रहो
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो

संसार में, परिवार में, घर बार में रहो
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो

इस लोक में, परलोक में, गोलोक में रहो
राधा रमण, राधा रमण, राधा रमण कहो

दुनिया को जीत लिया, तीन बाण से

(तर्ज - दुनिया चले न श्रीराम के बिना)

दुनिया को जीत लिया, तीन बाण से
कृष्ण को जीत लिया, शीश दान से

दुर्गा की भक्ति करता था
शिव की तपस्या करता था
बडा शक्तिशाली हुवा, वरदान से
कृष्ण को जीत लिया, शीश दान से

मैय्या का वचन निभाऊँगा
हारे की लाज बचाऊँगा
बोलने लगा वो, कृष्ण भगवान से
कृष्ण को जीत लिया, शीश दान से

युध्द देखने का बड़ा, अरमान था
कांधो पे तरकस में, तीन बाण था
नीले घोडे पर बैठा, बडी शान से
कृष्ण को जीत लिया, शीश दान से

शीश दिया दान, बलिदानी हो गया
बनवारी सबसे बडा, दानी हो गया
हुवा कलयुग देखो, इनके नाम से
कृष्ण को जीत लिया, शीश दान से

नौकर रखले साँवरे

नौकर रखले साँवरे, हमको भी एक बार २
बस इतनी तनखाह देना, मेरा सुखी रहे परिवार

तेरे काबिल नही मैं बाबा, फिर भी काम चला लेना
जैसा भी हुँ तेरा ही हुँ, गुण अवगुण बिसरा देना
जो तेरी किरपा होगी, मेरा सुधरेगा संसार ॥
नौकर रखले ...

सेठो के तुम सेठ साँवरे, मेरी क्या औकात है
तेरी सेवा मिल जाए तो, ये किस्मत की बात है
मानुंगा तेरा कहना, ये करता हुँ इकरार
नौकर रखले ...

थोड़ी सी माया दे करके, मुझको ना बहलाओ जी
आज खड़ा हुँ सामने तेरे, कोई हुकुम सुनाओ जी
भक्तों की इस अर्जी पे, प्रभु ना करना इन्कार २
नौकर रखले ...

होली आई, होली आई, होली आई

(तर्ज - बोलो तारा रा ....)

होली आई, होली आई, होली आई
मस्ती छाई, मस्ती छाई, मस्ती छाई
रंग लेके खेलते, गुलाल लेके खेलते
राधा संग होली नंदलाल खेलते, बोलो सारा-रा-रा

ढोलक, मंजीरा ओर, चंग लेके नाचले
सखियाँ और सारे, ग्वाल बाल खेलते
बोलो सारा रा-रा .....

भर पिचकारी मारे, राधे पे कन्हैय्या
मुखड़े को मलके, गुलाल खेलते
बोलो सारा रा-रा .....

देवता भी होली यहाँ, खेलने को आते है
ब्रम्हा, विष्णु, बाबा भोलेनाथ खेलते
बोलो सारा रा-रा .....

हनुमान धाम की तो, महीमा निराली है
भक्त यहाँ होली हर साल खेलते
बोलो सारा रा-रा .....

जिस दिन साँवरा खेलेंगा होली

(तर्ज - चाकर राखले)

जिस दिन साँवरा खेलेंगा होली, हम भी खेलेंगे
जिस दिन साँवरा

ऐसो रंग रंगा दे कान्हा, छोडया कोनी छुटेरे
देख तेरी खाटु नगरी ने, खूब सजावा रे
इस दिन साँवरा ...

कभी कभी तो ऐसा लागे, चौखट पे रम जाऊँ मैं
जिस दिन मंदिर से तु निकले, खूब रंगाऊ रे
उस दिन साँवरा ...

आज तो दिन फागुन का, बाबा होली खेलन आएगा
मैं भी बांट निहारन थारी, कब रंग डारु रे
उस दिन साँवरा ...

लाल हरा नीला पीला से, मंदिर खुब सजाया रे
अब तो मेरी लाज बचाने, दौडयो आज्यो रे ...
उस दिन साँवरा ...

हम तो माँगेगे बाबा

(तर्ज - मेरे सिर पे रख दो बाबा)

हम तो माँगेगे बाबा, तुमसे सौ-सौ बार
देने के हजारो रस्ते, तेरे हाथ हजार

युँ तो लाख मुसिबत आए, कही माँगने न जाते
लेकिन तेरे द्वार पे आने, बिलकुल ही ना शरमाते
तेरे आगे लाज न जाए, यहाँ माँगे सब संसार

जितने है दातार जगत में, तुझसे माँग के देते है
अपनी झोली फैलाके वो, तुझसे ही तो लेते है
हम दीनो के खातिर भी, प्रभु खोल तेरा भंडार

थोड़ा दे या तु दे ज्यादा, होंगा हमे मंजूर वही
इतना तो हमको भी पता है, बाबा हमसे दुर नही
जब भी दुखड़े आएंगे, हम आएंगे तेरे द्वार

लाला जनम सुन आई

लाला जनम सुन आई, यशोदा मैय्या दे दो बधाई
दे दो बधाई मैय्या, दे दो बधाई

हार भी दे दो मैय्या, कण्ठी भी दे दो
कुंदन की दे दो जड़ाई, यशोदा मैय्या दे दो बधाई
लाला जनम .....

झुमका भी दे दो मैय्या, चुड़ीयाँ भी दे दो
कंगना की दे दो जड़ाई, यशोदा मैय्या दे दो बधाई
लाला जनम .....

करधन भी दे दो मैय्या, पायल भी दे दो
बिछीयाँ की दे दो बनाई, यशोदा मैय्या दे दो बधाई ...
लाला जनम .....

लहेंगा भी दे दो मैय्या, चोली भी दे दो
चोली की दे दो सिलाई, यशोदा मैय्या दे दो बधाई
लाला जनम .....

छप्पन भोग

दोहा - मीठो है नमकीन है बाबा, चरपरो थोडो खाटो
सोने की थाली में परोसो, डाल चाँदी को पाटो
ओ टावरियाँ मनुहार कर बाबा, देखूँ तो क्यों नाटो
ओ भोग लगाओ म्हारा श्याम धनी रे
बाकी भक्तां ने बाटो । खाटू नरेश की जय ॥

आयो आयो, साँवरिया वेगा आओ ...
जिमों जी भोग ..... लगाओ, है छप्पन भोग तैयार जी
थांरा टाबरीया कर है मनुहार जी - २

केशरिया बर्फी कलाकंद रबड़ी, पेड़ा इमरती बालुशाही
लाडू बूँदिया जलेबी रसगुल्ला, गाजरपाक रसमलाई
गुलाबजामून, शक्करपारा, घेवर न्यारा न्यारा
जी में आवो, जको थे और धलावो
जिमों जी भोग .....

दालमोठ कचौड़ी पकोड़ी, भुजियां पापड़ चिवड़ो
करठी राबड़ी साग सांगरी को, बाजरा को बाबा खिचड़ो
रायते में जीरां, को तडको, पीयो मार सबड़को
साग काचरी की चटनी चटाओ
जिमों जी भोग .....

आम अमरुद अंगूर अनानस, आलूबुखारा अनार धरा
केला सेब पपीता चीकू, संतरा मौसमी रसधार भरा
काकड़िया रे, लाल मतीरा, भर टमाटर खीरा
नींबू काटो, थे थोडो और छिड़काओ
जिमों जी भोग .....

काजू किशमिश नोजा खुरमानी, खोपरा चूहारा बदाम लायो
जीम जूठ और आचमन करके, फिर थोडो आराम लियो
लौंग ईलायची, हाजिर कर दी, सागर मिसरी भर दी
कोई नाखरियों, पान चबाओ ।
जिमों जी भोग .....

अच्यूतम् केशवम्

अच्यूतम् केशवम् , कृष्ण दामोदरम्
राम नारायणम् , जानकी वल्लभम्

कौन कहता हैं, भगवान आते नहीं
भक्त मीरा के जैसे, तुम बुलाते नहीं
अच्यूतम् .....

कौन कहता है, भगवान सुनते नही
टेर सुदामा के जैसे, तुम लगाते नही
अच्यूतम् .....

कौन कहता है, भगवान खाते नहीं
बेर सबरी के जैसे, तुम खिलाते नहीं
अच्यूतम् .....

कौन कहता है, भगवान नाचते नही
गोपीयो के जैसे, तुम नचाते नही
अच्यूतम् .....

कौन कहता है, भगवान सोते नही
माँ यशोदा के जैसे, तुम सुलाते नहीं
अच्यूतम् .....

श्याम देने वाले है हम

श्याम देने वाले है, हम लेनेवाले है - २
आज खाली हाथ नहीं जाना, जिसे चाहिये वो हाथ उठाना २

रोज-रोज मांगने की, झंझट ही छोड़ दो
जिसे जितना चाहिये वो, आज मुंह से बोल दो
आज अच्छा मौका है, किसने तुम्हे रोका है - २
बिल्कुल भी ना शरमाना ॥
जिसे चाहिये ...

लाखों भक्त लेनेवाले, दातार एक है
पल में बदल देता, किस्मत का रुख है
भक्त थोड़े ज्यादा है, लेने का इरादा है
सबसे पहले है हाथ उठाना ॥
जिसे चाहिये ...

हाथ में ना आए तो, झोली पसार दे
खुद लेके जाना आज, इसके दरबार से
झोली भर जाये तो, काम बन जाये तो
बनवारी रोज गुण गाना ॥
जिसे चाहिये ...

अजब हैरान हुँ भगवन

अजब हैरान हुँ भगवन, तुझे कैसे रिझाऊँ मैं
नही वस्तु कोई ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं

है रोशन चाँद और सूरज, सभी तेरे इशारो पर
बड़ा शर्मिन्दा करना है, तुझे दिपक दिखाऊँ मैं
अजब हैरान ....

लगाना भोग भी तुझको, तेरा अपमान करना हैं
खिलाता हैं तु सब जग को, तुझे कैसे खिलाऊँ मैं
अजब हैरान ....

है फूलों में तु ही व्यापक, तु ही मुरत में व्यापक हैं
भला भगवान को भगवान पर, कैसे चढ़ाऊँ मैं
अजब हैरान ....

मैं खाली हाथ तेरे दर पे दाता, खुद चला आया
रिझाने तुझको दाता मैं, भजन करने चला आया

नही हैरान अब भगवन, तुझे कैसे मनाऊँ मैं
लगा डुबकी भजन गंगा में, प्रभु तुमको मनाऊँ मैं
भजन करके मेरे दाता, प्रभु तुमको मनाऊँ मैं
अजब हैरान ....

थाली भरकर ल्याई खीचड़ो

थाली भर कर ल्याई खीचड़ो, उपर घी की बाटकी
जीमो म्हारा श्याम धनी, जिमावै बेटी जाट की ।

बाबो म्हारो गाँव गयो है, ना जाने कद आवेगो
उँकै भरोसे बैठ्यो साँवरा, भूखो ही रह जावेगो ।
आज जिमाऊँ तनै खीचड़ो, काल राबड़ी छाछ की
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमावै बेटी जाट की
थाली भर कर .....

पड़दो भूल गई साँवरीया, पड़दो फेर लगायो जी
धाबलिये की ओट बैठकर, श्याम खीचड़ों खायो जी ।
भोला ढ़ाला भक्ता के, साँवरीया कईयाँ आँट की
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमावै बेटी जाट की
थाली भर कर .....

भक्ति हो तो करमां जैसी, साँवरियों घर आवेलो
" सोहनलाल लोहाकर " प्रभु का, हर्ष-हर्ष गुण गावेलो ।
सांचो प्रेम प्रभु में हो तो, मुरती बोले काठ की
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमावै बेटी जाट की
थाली भर कर .....

ओ मैय्या मँगवा दे तेरे लल्ला को

(तर्ज - चाकर राखले साँवरीया)

ओ मैय्या मँगवा दे तेरे लल्ला को, चाँदी की पिचकारी
मैय्या मुझको रोज चिढावे, वो राधा प्यारी

यशोदा मैय्या आया है, होली का त्यौहार
पिचकारी के आगे, तेरी मुरली है बेकार
ओ मैय्या मँगवादे .....

फागन महिना आया मैय्या, होली का त्यौहार बड़ा
राधा रंग गिराए और, मैं देखुँ खड़ा-खड़ा
ओ मैय्या मँगवादे .....

यशोदा मैय्या राधा ने, रंग दिया है डार
मुझे पिचकारी ला दे गर, करती हो मूझसे प्यार
ओ मैय्या मँगवादे .....

सखी सहेली मूझको घेरे, भर पिचकारी रंग डाले
ग्वाल बाल सब दूर खड़े, क्या करते बेचारे
ओ मैय्या मँगवादे .....

मेरा दिल तो दिवाना हो गया

मेरा दिल तो दिवाना हो गया, हे मुरली वाले तेरा
हे मुरली वाले तेरा, हे बंशी वाले तेरा
नैनो का निशाना हो गया, हे मुरली वाले तेरा

जब से नजर से, नजर मिल गई है
उजड़े चमन की, कली खिल गई है
क्या नजरे मिलाना हो गया, हे मुरली वाले तेरा
मेरा दिल तो दिवाना .....

दिवानगी ने, क्या क्या दिखाया
दुनियाँ छुडा के, तुमसे मिलाया
दिवाना जमाना हो गया, हे मुरली वाले तेरा
मेरा दिल तो दिवाना .....

प्राणो के प्यारे, कहाँ छुप गए है
नयनो के तारे, कहाँ छुप गए है
क्या नजरे मिलाना हो गया, हे मुरली वाले तेरा
मेरा दिल तो दिवाना .....

तु मेरा प्यारा, मैं तेरा पागल
तिरछी नजर से, दिल मेरा घायल
मेरा दिल दिवाना हो गया, हे मुरली वाले तेरा
मेरा दिल तो दिवाना .....

मांगा है मैने श्याम से

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में)

मांगा है मैने श्याम से, वरदान एक ही
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक है जिन्दगी

जिस पर प्रभु का हाथ है, वो पार हो गया
जो भी शरण मे आ गया, उध्दार हो गया
जिसका भरोसा श्याम पे, डूबा कभी नही
तेरी कृपा बनी रहे .....

कोई समझ नही सका, माया बडी अजीब
जिसने प्रभु को पा लिया, वो है खुश नसीब
उसकी मर्जी के बिना, पत्ता हिले नही
तेरी कृपा बनी रहे .....

ऐसे दयालू श्याम से, रिश्ता बनाइए
मिलता रहेगा आपको, जो कुछ भी चाहिए
ऐसा करिश्मा होगा, जो हुआ कभी नही
तेरी कृपा बनी रहे .....

कहते है लोग जिन्दगी, किस्मत की बात है
किस्मत बनाना भी मगर, उसके ही हाथ है
जल्दी उसे रिझालो अब, ज्यादा समय नही
तेरी कृपा बनी रहे .....

मुरली बजाने वाले

(तर्ज - दुनिया बनाने वाले क्या तेरे)

मुरली बजाने वाले, क्या तेरे मन मे समाई
काहे को मुरली बजाई, तुने काहे को मुरली बजाई

मुरली की धुन पे, थी राधा दिवानी
पनघट पे जाती थी, भरने को पानी
पनघट पे तु उसको, मुरली सुनाए
जमुना के तट पे, कान्हा रास रचाए
रास रचा के तुने, आँखो की नींद चुराई
काहे को मुरली .....

मुरली की धुन थी, मीरा को प्यारी
दौलत ठुकराके, वो बन गई भिखारी
जोगन बनकर वो, वीणा बजाए
हर घडी हर पल, गुण तेरा गाए
तेरी ही भक्ति ने, मीरा की लाज बचाई
काहे को मुरली .....

कन्हैय्या तुम्हे एक नजर देखना है

कन्हैय्या तुम्हे, एक नजर देखना है
जिधर तुम छुपे हो, जिधर तुम छुपे हो
जिधर तुम छुपे हो, उधर देखना है

बिदुर और भिलनी के, घर भी तुम देखे
हमारे भी घर को, हमारे घर को भी
हमारे भी घर को, तुम्हें देखना है
कन्हैय्या तुम्हे .....

लगी है निगाहे, दर पे तुम्हारी
बुलाके रहेंगे, तुम को मुरारी
हमे अपनी चाहत का, हमे अपनी चाहत का
हमे अपनी चाहत का, असर देखना है
कन्हैय्या तुम्हे .....

उबारा तुमने, गज और गिध्द को
इन आँखो को हाथो का, इन आँखो को हाथो का
इन आँखो को हाथो का, असर देखना है
कन्हैय्या तुम्हे .....

दीन दयालु दाता

तर्ज (रिमझिम सितारो)

दीन दयालु दाता, शीश के दानी
सुन ले सुनाऊँ, प्रभु अपनी कहानी
मेरे हर उलझन, तुम्हे सुलझानी
सुन ले सुनाऊँ, प्रभु अपनी कहानी

आशा इन आँसुओ को, श्याम तेरे आने की
आई आज बारी तेरी, वचन निभाने की
तेरे बिना सुनी है, मेरी जिन्दगानी
सुन ले ...

आजा रे कन्हैय्या, आज देखुँगा करीब से
बाते तो करले कान्हा, थोडी इस गरीब से
रिमझिम रिमझिम बरसे, आँखो से पानी
सुन ले ...

खडा तेरे द्वारे मैं, तो बनके सवाली
भर दो झोली आज, रह ना जाए खाली
कर दे दया की नजर, होगी मेहरबानी
सुन ले ...

कहता सुरेश काम, सबके बनाए है
गिरते हुए को कान्हा, तुमने उठाए है
भक्तो की रखना मोहन, तु अब निगरानी
सुन ले ...

म्हारा घट मां बिराजता श्रीनाथजी

म्हारा घट मां बिराजता श्रीनाथजी, यमुनाजी, महाप्रभुजी
म्हारों मनड़ोछे गोकुल वृनरावन
म्हारा तन ना आँगणीया मं तुलसी नावन
म्हारा प्राण जीवन

म्हारा आतम ना आगणे, श्री महाकृष्णजी
म्हारे आँखो विषय, गिरधारी रे धारी
म्हारा तन मन भयो छे, जेने वारी रे वारी
म्हारे श्याम मुरारी

म्हारा प्राण थकी, मन वैष्णवरे वाला
नीत करता श्रीनाथजी ने, वालारे वाला
मै तो वल्लभ प्रभुजी ना कीधा छे दर्शन
म्हारो मोहीलीधो मन

हुँ तो नित्य विठ्ठलवर नी, सेवा रे करु
हुँ तो आठे समां केरी, झाँकी रे करु
मै चीतडू, श्रीनाथ ने चरणे धरु
जीवन सफल करु
श्रीनाथजी बोलो श्री यमुनाजी बोलो

मेरा श्याम बड़ा रंगीला

(तर्ज - उड़े जब जब जुल्फे तेरी)

मेरा श्याम बडा रंगीला २
मस्तीयाँ बरसेगी, २ किर्तन में

हो कोई इसको, रिझाकर देखे २
उमरीयाँ सुधरेगी, २ किर्तन में
मेरा श्याम बड़ा .....

हो कोई इनको, सजाकर देखे - २
की खुश्बु महेकेंगी, २ किर्तन में
मेरा श्याम बड़ा .....

हो कोई अखीयाँ, लड़ाकर देखे - २
की धड़कन मचलेंगी, २ किर्तन में
मेरा श्याम बड़ा .....

हो कोई इनको, नचाकर देखे - २
के मुरलीयाँ गुजेंगी, २ किर्तन में
मेरा श्याम बड़ा .....

हो भक्तां चले, भजन सुनावां - २
चदरीयाँ निखरेंगी, २ किर्तन में
मेरा श्याम बड़ा .....

श्याम जन्म दिन, ऐसे मनाए

(तर्ज - बाबा की किरपा)

श्याम जन्म दिन, ऐसे मनाए
मौज उड़ाए मौज उड़ाए २
बाबा के संग में, नाचें और गाए
मौज उड़ाए, मौज उड़ाए

सब है तुम्हारे बाबा, ना ये पराये है ।
देने बधाई बडी, दूर से आए है ।
देख लो आकर, क्यों शरमाए ॥
मौज उड़ाए .....

मंदिर सजाया है, उत्सव मनाया है ।
मेवे मलाईवाला, केक मंगाया है ।
पहले तुम चखलो, फिर हम खाए ॥
मौज उड़ाए .....

इतने मनेंगे, उत्सव तुम्हारे
जितने गगन में, चमके सितारे ।
माँगे है हम सब, रब से दुआए ।
मौज उड़ाए .....

श्याम सपनो मे, आता क्यों नही

श्याम सपनो मे, आता क्यों नही
प्यारी सुरत, दिखाता क्यों नही

मेरा दिल तो, दिवाना हो गया
मुझे दिल से, लगाता क्यों नही

मेरे नैनो में, सुरत श्याम की
नैनो में बिठाता क्यों नही

सदीयो से भटक रहा, दर दर पर
मुझे दर पर, बुलाता क्यों नही

तेरे प्यार मे, आधा पागल हुँ
पुरा पागल, बनाता क्यों नही

श्याम हमारे दिल से पूछो

(तर्ज : फूल तूम्हे भेजा है)

श्याम हमारे दिल से पूछो, कितना तूमको याद किया
याद में तेरी मुरली वाले, जीवन सारा गुजार दिया

देखी तेरी भोली सूरत, और हम धोका खा ही गए
मोहन तेरी मीठी-मीठी, बातो में हम आ ही गए
हार गए जीवन में सब कुछ, फिर भी तेरा नाम लिया

करता हुँ मै कोशिश मोहन, याद कभी भी ना आवो
हो सके तो तुम ही मोहन, मेरे दिल से निकल जावो
भूल हुई तूझे दिल में बसाया, इस दिल ने लाचार किया

बाहर से कुछ और हो मोहन, भीतर से कुछ और हो तुम
सीखा है बस दिल का चुराना, जाने कैसे चोर हो तुम
पछता रहा हुँ बनवारी अब, क्यों तेरा ऐतबार किया

सावन का महिना, घटाएँ घनघोर

सावन का महिना, घटाएँ घनघोर
आज कदम की डाली झुले, राधा नंदकिशोर

प्रेम हिंडोले बैठे, श्याम बिहारी
झुला झुलाये सारी, ब्रज की नारी
जोडी लागे प्यारी, जैसे चंदा और चकोर
आज कदम की डाली झुले, राधा नंदकिशोर

ठंडी फुआर पडे, मन को लुभाए
गीत गाए सखीयाँ, श्याम मुस्काये
बांसुरिया बजाए मेरे, मन का ये चीतचोर
आज कदम की डाली झुले, राधा नंदकिशोर

जमुना के तट पे, नाचे-नाचे ताथा थय्या
राधा को झुलाए श्याम, रास रचय्या
ब्रज में छाई मस्ती और, मस्त हुए मनमोर
आज कदम की डाली झुले, राधा नंदकिशोर

देख युगल छबी, मन में समाई
श्यामसुंदर ने तेरी, महिमा गाई
देख के प्यारी जोडी, मेरा मनवा हुआ है चकोर
आज कदम की डाली झुले, राधा नंदकिशोर

गोकुल की हर गली में

गोकुल की हर गली में, मथुरा की हर गली में
कान्हा को ढूँढता हुँ, दुनिया की हर गली में

गोकुल गया तो सोचा, माखन चुराता होंगा
या फिर कदम के निचे, बंशी बजाता होंगा
गुजरी की हर गली में, ग्वालन की हर गली में
कान्हा को ढूँढता हुँ .....

शायद किसी बहन की, साडी बढ़ाता होंगा
या फिर वो विष का प्याला, अमृत बनाता होंगा
भक्तों की हर गली में, प्रेमी की हर गली में
कान्हा को ढूँढता हुँ .....

भटका गली-गली में, पुँछा गली-गली में
मुझको मिला कन्हैय्या, दिलवालो की गली में
बनवारी दिल लगाने, आता हुँ इस गली में
कान्हा को ढूँढता हुँ .....

आए है दिन फागण के

(तर्ज - भगत सब नाचो रे)

आए है दिन फागण के, आए है दिन नाचन के
आज नही तो कब नाचोगे, बित गए दिन सावन के

यही तो हर दिन, किर्तन होता
बाबा से जाकर, मिलना होता
आए है दिन खाटु जाकर, गीत श्याम के गावन के

यही तो दिन बाबा, सब को बुलाए
खाटु मे जाकर, माल लुटाए
बाबा से जो चाहे मांगो, आए है दिन मांगन के

गाडी की सब, टिकट कटाओ
बाबा से जाकर, प्रेम बढाओ
आए है दिन खाटु जाकर, श्याम निशान चढ़ावन के

खाटु नगरी, ऐसी सजती
जैसी कोई, दुल्हनियाँ लगती
बाबा बनेंगे दुल्हे राजा, ये दिन बैंड बजावन के

मेरी नौकरी लगादे दरबार में

मेरी नौकरी, मेरी नौकरी २
मेरी नौकरी लगा दे, दरबार में
मेरा सब कुछ लूट गया बाबा, स्वारथ के संसार में

दौलत कमाने का, चक्कर चलाया
पैसा कमाया पर, सुख को गवायाँ
घाटा हो गया हर खुशियों का, छोटे से व्यापार में
मेरी नौकरी .....

तेरे नाम का, पुण्य कमाया
श्याम नाम का, सिक्का चलाया
हमको हिस्सेदार बनाले, तेरे कारोबार में
मेरी नौकरी .....

बाबा दामन, भर दे मेरा
घाटा पूरा, कर दे मेरा
बनवारी कुछ नाम कमालु, भक्ति के बाजार में
मेरी नौकरी .....

मेरे दिनानाथ तेरे लाखो है नाम

(तर्ज - श्याम तेरी बन्सी पुकारे राधा नाम)

मेरे दिनानाथ तेरे, लाखो है नाम
चाहे राधेश्याम बोलो, चाहे सिताराम
भक्तो को नाम तेरा, भजने से काम
चाहे राधेश्याम बोलो, चाहे सिताराम

त्रेता मे बनकरके, रामजी पधारें
द्वापर मे बनकरके, कृष्ण अवतारे
कलयुग मे गूंजे बाबा, श्यामजी का नाम
चाहे राधेश्याम बोलो, चाहे सिताराम

आवन अवधवासी, रामजी कहाए
कुँज गली में कान्हा, रास रचाए
श्यामजी का खाटू मे, प्यारा है धाम
चाहे राधेश्याम बोलो, चाहे सिताराम

मर्यादा सिखलाते, रामजी हमारे
कर्म किए जा बोले, राधाजी के प्यारे
भक्तो मे श्याम लेते, हारे को थाम
चाहे राधेश्याम बोलो, चाहे सिताराम

खाटु के कण कण मे बसेरा

(तर्ज - बागवान)

खाटु के कण कण मे, बसेरा करता साँवरा
जाने कैसा भेष बनाए ।
हर गली में, आया जाया करता साँवरा
साँवरा तुझमे साँवरा, साँवरा मुझमे साँवरा
साँवरा सबमे साँवरा

रिंगस से खाटु नगरी तक, पैदल चलते लोग
पीठ के बल कोई, पेट के बल कोई, लेट के चलते लोग
कदम मिला भक्तों के संग में, चलता साँवरा
जाने कैसा भेष बनाए .....

मेले में खाटुवाले के, जगह-जगह पर डेरे
इस डेरे कभी उस डेरे, और कही पर रैन बसेरे
आते-जाते सब पर, नजरे रखता साँवरा
जाने कैसा भेष बनाए .....

बाबा के मंदिर में देखो, लंबी लगी कतारे
दुर-दुर के भक्त अनेको, उनको अजब नजारे है
कब किसको क्या-क्या देना, है परखता साँवरा
जाने कैसा भेष बनाए .....

म्हारे सिर पर है बाबाजी रो हाथ

म्हारे सिर पर है बाबाजी रो हाथ, खाटुवाले रो साथ
कोई तो म्हारो काई करसी

जो कोई म्हारे श्याम धनी ने, सांचे मन से ध्यावे
काल कपाल भी साँवरीया के, भक्ता से घबरावे
जे कोई पकड़यो है, बाबाजी रो हाथ, कोई तो म्हारो काई करसी
म्हारे सिर पर है बाबाजी .....

जो वापे विश्वास करे वो, खुटी तान के सोवे
बठे प्रवेश करना कोई, बाल न बांको होवे
जाके मन मे नही है विश्वास, उको तो बाबो काई करसी
म्हारे सिर पर है बाबाजी .....

कलयुग को यो देव बड़ो, दुनिया में नाम कमायो
जद जद भीड़ पड़ी भक्ता पे, दौडयो दौडयो आयो
यो तो घट घट जाने सब बात, कोई तो म्हारो काई करसी
म्हारे सिर पर है बाबाजी .....

मन मे तो आए

मन मे तो आए, भोग लगाऊँ
रुखी सुखी राम रसोई, थाने जीमाऊँ

गैय्यन को दुध ल्याके, खीर बनाऊँ
खारक छुहारा केसर, उसमे मिलाऊँ
सुदामा के चांवल लेकिन, कहाँ से मे लाऊँ
मन मे तो आए .....

कर्मा थारो, करम सवायो
श्याम धनी थारे, जीमण आयो
भक्ती दे कान्हा मै भी, कर्मा बन जाऊँ
मन मे तो आए .....

भक्ति भाव से मैं, थाल सजाऊँ
भाव परोसु, भाव जिमाऊँ
जीमो म्हारा श्याम धनी, मैं सौगन कराऊँ
मन मे तो आए .....

चापत चरण करत नित सेवा

चापत चरण करत नित सेवा, करत नित सेवा
बिन दर्शन नही होत कलेवा, नही होत कलेवा
तेरो ही है आज्ञाकारी, तेरो पुजारी है गिरधारी
राधे ..... श्यामा, राधे ..... श्यामा

वृंदावन नित रास रचावत २
जब रूठे श्यामा, श्याम मनावत २
राधा के मोहन बनवारी, तेरो पुजारी है गिरधारी
राधे ..... श्यामा, राधे ..... श्यामा

राधेश्याम की सुंदर जोड़ी २
श्रीराधा वृषभान किशोरी, वृषभान किशोरी २
स्वामी हरिदास जावे बलीहारी, तेरो पुजारी है गिरधारी
राधे ..... श्यामा, राधे ..... श्यामा

मानसरोवर जाय के बैठी २
राधा तो रिसीयाय के बैठी २
पागल कहे लीला न्यारी, तेरो पुजारी है गिरधारी
राधे ..... श्यामा, राधे ..... श्यामा

ऐसा क्या जादू कर डाला

ऐसा क्या जादू कर डाला, मुरली जादूगारी ने
किस कारण से संग मे मुरली, रखी है गिरधारी ने
बांस के इक टुकडें में जाने, क्या देखा बनवारी ने
किस कारण से संग मे मुरली, रखी है गिरधारी ने

कभी हाथ में, कभी कमर में, कभी अधर पे सजती है
मोहन की सांसो की थिरकन से, पल मे ये बजती है
काहे इतना मान दिया है, बंसी को गिरवरधारी ने
किस कारण ...

इक पल मुरली दूर नही, क्यो साँवरीये के हाथो से
रास नही रचता इसके बिन, क्यों पुनम की रातो में
काहें को सौतन कह डाला, इसको राधा रानी ने,
किस कारण ...

अपने कुल से अलग हुई, और अंग अंग कटवाया है
गर्म सलाखो से इसने हाय, रोम रोम बिदवाया है
तब जाकर ये मान दिया है, बंसी को गिरवरधारी ने
इस कारण से संग में मुरली, रखी है बनवारी ने

त्याग तपस्या क्या है सूरज, ये मुरली समझाती है
प्रेम करो मुरली के जैसा, कान्हा हरपल साथी है
सच्चे प्रेम को ढूँढता रहता, मोहन दुनिया सारी मे
इस कारण से संग मे मुरली, रखी है गिरधारी नें

बाबा खोल दे अपनो गल्लो

बाबा खोल दे अपनो गल्लो, तेरे भक्त मचावे हल्लो
तेरे दर पे खड़या हाँ, झोली खोल के

चाहे फटकारो या डाटो, थे म्हाने अब ना नाटों
मैं तो माँग रहया हुँ बाबा, तोल मोल के

छोटो मोटो सेठ नही, तू सेठ है पगड़ी वालो
हरदम झोली भर के जावे, दर पे आने वालों
सुन के मैं आया बाबा तेरे किस्से
देख अकेलो मै नही आयो, संग में पुरो मोहल्लो
बाबा खोल .....

या तो सेठ तु मत कहलाया, सेठाई दिखला दे
या फिर कोई बडा सेठ को, नाम तो बतला दे
नाम कमायो तु फोकट में
जो देदेगो आके म्हाने, थामु उको पल्लो
बाबा खोल .....

रहे जावेगी धरी की धरी, श्याम तेरी रंगबाजी
जीतता आया भक्त तेरा, हरदम तेरे से बाजी
कुछ भी चाहे तु करले
कहे पवन की काम परयो है, अपनो पहलो पहलो
बाबा खोल .....

तेरी मुरली की धुन

तेरी मुरली की धुन सुनने, मैं बरसाने से आई हुँ
अरे रसिया, ओ मनबसिया, मैं इतना प्यार लाई हुँ।

सुना है श्याम मनमोहन, की माखन खूब चुराते हो।
तेरे माखन चुराने को, मैं मटकी साथ लाई हुँ।
अरे रसिया, ओ मनबसिया, मैं इतनी दूर से आई हुँ।

सुना है श्याम मनमोहन, की गैय्या खूब चरातें हो।
तेरी गैय्या चराने को, मैं ग्वाले साथ लाई हुँ
अरे रसिया, ओ मनबसिया, मैं इतनी दूर से आई हुँ

सुना है श्याम मनमोहन, रास तुम खूब रचाते हो।
तेरे संग रास करने को, गोपीयाँ साथ लाई हुँ
अरे रसिया, ओ मनबसिया, मैं इतनी दूर से आई हुँ

सुना है श्याम मनमोहन की, किरपा खूब करते हो।
तेरी किरपा को पाने मैं, तेरे दरबार आई हुँ
अरे रसिया, ओ मनबसिया, मैं इतनी दूर से आई हुँ

ओ खाटू वाले बाबा

ओ खाटू वाले बाबा, किरपा बरसा दोना
एक छप्पन करोड़ की लॉटरी, म्हारी खुलवा दोना

छप्पन करोड़ की खुले लॉटरी, सुनलो के करवाऊँगा
खाटू के मंदिरयों को मैं, जिर्णोध्दार कराऊँगा
क्यों घर-घर माँगने जाये २, मेरा काम पटा दोना
एक छप्पन .....

लाखों लाख भक्त जो आवे, भीड़ घनेरी लागे रे ।
मंदिर पड़ जावे है छोटो, धक्का मुक्की लागे रे
एक स्वर्ग लोक के जैसा २, मंदिर बनवा दोना
एक छप्पन .....

चारों ओर हो बाग-बगीचा, केशर की हो फुलवारी
दरवाजे पर निलो घोडो, हरदम रहे है तैयारी
थे छप्पर फाँड़ के देवो २, सबने दिखला दोना
एक छप्पन .....

जब निकले कन्हैय्या मेरी साँस रे

जब निकले कन्हैय्या मेरी साँस रे
चले आना मुरारी मेरे पास रे

अंत समय जब आए मेरा, बाबा तुम मेरे पास रहो
मेरे सिर पे हाथ हो तेरा, निकले मेरी साँस हो
जब निकले कन्हैय्या .....

तु ही राम है, तु ही कृष्ण है, कलियुग का अवतार तु
मेरे सामने आना होकर, लिले पर असवार तु
जब निकले कन्हैय्या .....

माँग रहा हुँ तुझसे बाबा, इतनी साँसे देना तु
इस दुनिया से जाते-जाते, एक भजन सुन लेना तु
जब निकले कन्हैय्या .....

मै बोलुँगा बाबा-बाबा, बेटा-बेटा कहना तु
बनवारी बस आखरी दम तक, मेरे सामने रहना तु
जब निकले कन्हैय्या .....

हे नाम रे, सबसे बडा तेरा नाम

हे नाम रे, सबसे बडा तेरा नाम, ओ शेरोवाली, उँचे डेरोवाली
बिगड़े बना दे मेरे काम, नाम रे

ऐसा कठीन पल ऐसी घड़ी है, विपदा आन पड़ी है
तू ही दिखा अब रस्ता ये दुनिया, रस्ता रोके खड़ी है
मेरा जीवन बना एक संग्राम, ओ शेरोवाली, उँचे डेरोवाली
बिगड़े बनादे मेरे काम, नाम रे .....

भक्तों को दुष्टो से छुडाए, बुझती ज्योत जलाए
जिसका नही है कोई जगत मे, तु उसकी बन जाए
तीनो लोक करे तोहे प्रणाम, ओ शेरोवाली, उँचे डेरोवाली
बिगड़े बनादे मेरे काम, नाम रे .....

छंद .....हे ... तू ही देनेवाली माता, तू ही लेनेवाली
तेरी जय जयकार करू मै, भर दे झोली खाली
काम सफल हो जाए मेरा, दे ऐसा वरदान
तेरे बल से हो जाए माँ, निर्बल भी बलवान
बिच भंवर मे डोल रही है, पार लगा दे नैय्या
जय जगदंबे अष्ट भवानी, अंबे गौरी मैय्या
हे ... किसकी बली चढाऊ तुझपे, तु प्रसन्न हो जाए
दुश्मन थरथर कांपे माँ जब, तु गुस्से मे आए
हे नाम रे .....

प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी

दोहा

दरबार तेरा दरबारो मे, एक खास अहमीयत रखता है ।
उसको वैसा मिलता है, जो जैसी नियत रखता है ।

प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी, न्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी
यहा भक्तो की लगी है कतार भवानी, प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी

उँचे पर्वत भवन निराला २
आके शीश नवावे, संसार भवानी

जगमग जगमग, ज्योत जले है २
तेरे चरणों में, गंगा की धार भवानी

लाल चुनरीयाँ, लाल लाल चूड़ा २
गले लाल फूलो के, सोहे हार भवानी

सावन महीना, मैय्या झूला झूले २
सजे रूप गज को, हार भवानी

पल मे भरती, झोली खाली २
तेरे खुले दया के, भंडार भवानी

हम सबको है, तेरा सहारा २
कर दे अपने भक्तो का, बेड़ा पार भवानी

खेल पंडा

खेल पंडा, खेल पंडा, खेल पंडा रे
घड़ी आ गई सुहानी, खेल पंडा रे

ओ पंडा माई के द्वारे, खेल पंडा रे
ओ पंडा निकले ज्वारे, खेल पंडा रे,
खेल पंडा, खेल पंडा .....

ओ पंडा भक्त गाए, खेल पंडा रे
ओ पंडा ढोल बजाए, खेल पंडा रे
खेल पंडा, खेल पंडा .....

ओ पंडा खप्पर उठाके, खेल पंडा रे
ओ पंडा बाना लेके, खेल पंडा रे
खेल पंडा, खेल पंडा .....

ओ पंडा झुमें निरंजन, खेल पंडा रे,
ओ पंडा नाचे निरंजन, खेल पंडा रे
खेल पंडा, खेल पंडा .....

मोरी मैया की चुनर

मोरी मैय्या की चुनर उड़ी जाए
पवन धीरे धीरे चलो री
धीरे चलो री, पवन धीरे-धीरे चलो री
धीरे चलो री पुरवइय्या

कैसे भवानी तोहे, ध्वजा मैं चढाऊँ
हो मैय्या, ध्वजा लहरीया खाए
पवन धीरे-धीरे चलो री
मोरी मैय्या की .....

कैसे भवानी तोहे, फुलवा चढ़ाऊँ
हो मैय्या, फुलवा तो गिर-गिर जाए
पवन धीरे-धीरे चलो री
मोरी मैय्या की .....

कैसे भवानी तोरी, करूं मैं आरती
हो मैय्या, ज्योत ये बुझ-बुझ जाए
पवन धीरे धीरे चलो री
मोरी मैय्या की .....

मैय्याजी के चरणो का सहारा है

(तर्ज - धीरे-धीरे प्यार को)

मैय्याजी के चरणों का सहारा है
दर से नही जाना है

ख्याल सबका रखती माँ, प्यार सबको करती माँ
सुन पुकार बेटे की, आए दौड़कर
मुझे बस माँ के गुण ही गाना है
दर से नही जाना है ...

ठुकराती जिसे दुनिया, अपनाती मेरी मैय्या
तारती जरूर उसे, देके अपना वर
मैय्याजी का प्यारा अफसाना है
दर से नही जाना है ...

बात इतनी मानी है, मन मे अपनी ठानी है
सुख नही मिलेगा, माँ की भक्ती छोड़कर
दिल मे शेरोवाली को, बिठाना है
दर से नही जाना है ...

मात अंग चोला साजे

मात अंग चोला साजे, हर एक रंग चोला साजे
मात की महिमा देखो, ज्योत बिन रहे ना जागे २
हे माँ ...

तु ओढ़े लाल चुनरीयाँ, गहनो से करे श्रृंगार
शेरो पर करे सवारी, तु शक्ति का अवतार
तेरे तेज भरे दो नैना, तेरे अधरो पर मुस्कान
तेरे द्वारे शीश झुकाए, क्या निर्बल क्या बलवान
तेरे ही नाम का माता, जगत मे डंका बाजे...
मात अंग ....

उँचा है मंदीर तेरा, उँचा तेरा स्थान
दानी क्या कोई दूजा, माँ होगा तेरे समान
जो आए श्रध्दा लेके, वो ले जाए वरदान
हे माता तु भक्तो के, सुख-दुख का रखे ध्यान
तेरे चरणों मे आके, भाग्य कैसे ना जागे २
मात अंग ....

उनके हाथो में, लग जाए ताला

उनके हाथो में, लग जाए ताला
अलिगढ़ वाला, सवामन वाला,
जो मैय्याजी की, ताली ना बजाए

माँ के द्वार पे देखो भक्तों, भीड़ लगी है भार
जो माता की जय ना बोले, उनको है धिक्कार
उनकी जिबहा पे २
उनकी जिबहा पे, लग जाए ताला
अलीगढ़ वाला, सवामन वाला
जो माँ के जयकारे ना लगाए ॥
उनके हाथो ....

माँ की मुरत ममता वाली, पावन दिव्य स्वरूप
सामने आके जो ना देखे, माँ का प्यारा रूप
उनकी आँखो में २
उनकी आँखो में, लग जाए ताला
अलीगढ़ वाला, सवामन वाला
जो माँ के दर्शन को ना जाए ।
उनके हाथो .....

इस लायक मै नही था मैय्या

(तर्ज - धरती सुनहरी अंबर नीला)

इस लायक मै नही था मैय्या, तुने खुब दिया है
ये तो प्रेम है तेरा .... हो ... ये तो प्रेम है तेरा

खाली हाथ न आए, जीस ओर भी हाथ बढाऊँ ।
जितना मुश्किल लागे, वो सहज सभी पा जाऊँ ।
पैदल ही आया था, गाडी मे तुने बिठायाँ ।
सर पे छतरी ना थी, तूने बंगला दिलवायाँ ।
जिसका कोई मोल नही है, वो उपहार दिया है
ये तो ...

तुझसे ही महकी है मेरे, आंगन की फुलवारी २
सुना सा जीवन था मेरा, अब बच्चो की किलकारी २

दुनिया की नजरों से, हम सब की रक्षा करना
तूने सिखाया जीना, अब रोने को ना कहना
हम सब मिलकर भी भूले ना, इतना प्यार दिया है
ये तो ...

तु कितनी अच्छी है

तु कितनी अच्छी है, तु कितनी भोली है, प्यारी प्यारी है
ओ माँ ...
कि ये जो दुनिया है, वन है काँटो का, तु फुलवारी है
ओ माँ ...

दुखन लागी है, माँ तोरी अखियाँ
मेरे लिए तु जागी है, सारी-सारी रतियाँ
मेरी निंदीया पे, अपनी निंदीया भी, तुने वारी है
ओ माँ ...

अपना नही तुझे, सुख दुख कोई
मै मुसकाया, तु मुसकाई, मै रोया, तु रोई
मेरे रोने पे, मेरे हसने पे, तु बलिहारी है
ओ माँ ...

माँ बच्चो की, जाँ होती है
वो होते है किस्मतवाले, जिनकी माँ होती है
तु कितनी शीतल है, तु कितनी कोमल है, प्यारी-प्यारी है
ओ माँ ...

पग पग ठोकर खाऊँ

पग पग ठोकर खाऊँ, चल ना पाऊँ, कैसे आऊँ, मैं दर तेरे,
शक्ति दे माँ ४

हाथ पकडले हाथ बढ़ा दे, अपने मंदीर तक पहुँचा दे
सर पे दुख की रैना, नाही चैना, प्यासे नैना, माँ दर्शन के
शक्ति दे माँ .....

जग मे जिसका नाम है जीवन, एक युग है संग्राम है जीवन
तेरा नाम पुकारा, दुख का मारा, मैं हारा, इस जीवन से
शक्ति दे माँ .....

तेरे द्वारे जो भी आया, उसने जो मांगा वो पाया
मै भी तेरा सवाली, शक्तिशाली, शेरोवाली, माँ जगदंबे
शक्ति दे माँ ....

मैय्या तुमको मनाऊँ
देवी शारदा

मैय्या तुमको मनाऊँ, देवी शारदा हो माँ
कौन चढावे खप्पर हो, कोनऊँ तलवार
कौन चढावे गज निबुआ, हो फूलन के हार
मैय्या तुमको मनाऊँ, देवी शारदा हो माँ

कुम्हार लावे खप्पर हो, लोहार तलवार
मलिया लावे गज निबुआ, हो फूलन के हार
मैय्या तुमको मनाऊँ .....

काली चढावे खप्पर हो, लंगुर को तलवार
दुर्गा चढावे गज निबुआ, हो फूलन के हार
मैय्या तुमको मनाऊँ .....

लाल पिंताबर पहनी हो, जाकी लाल किनार
लाल रंग की चुनरी हो, कचनी हो रंगदार
मैय्या तुमको मनाऊँ .....

सिंह ऊपर चढ बैठी हो, चटकाई हे बार
एक हाथ में खप्पर हो, दूजे में तलवार
मैय्या तुमको मनाऊँ .....

सुमर सुमर जस गाऊ हो, माई के दरबार
चरणों में चित्त लाई हो, माई शरण तुम्हार
मैय्या तुमको मनाऊँ .....

उगम पथ एक नदिया हो, जाकी निर्मल धार
धरमी तो पार उतर गए हो, पापी डूबे मझधार
मैय्या तुमको मनाऊँ .....

ऐसा प्यार बहा दे मैय्या

ऐसा प्यार बहा दे मैय्या, चरणो से लग जाऊँ मैं
सब अंधकार मिटा दे मैय्या, दरस तेरा कर पाऊँ मै

जग में आकर जग को मैय्या, अब तक ना मै जान सका
क्यों आया हूँ कहाँ है जाना, ये भी ना मै जान सका
तु है अगम अगोचर मैय्या, कहो कैसे लख पाऊँ मै
ऐसा प्यार .....

मैं बालक तू मैय्या मेरी, निशदिन तेरी ओट है
तेरी किरपा से ही निकले, भीतर जो भी खोट है
शरण लगाओ मुझको मैय्या, तुम पर बली-बली जाऊँ मै
ऐसा प्यार .....

कर कृपा जगदंबा भवानी, मैं बालक नादान हुँ
नहीं आराधना जप तप जानु, मैं अवगुण की खान हुँ
दे ऐसा वरदान ओ मैय्या, सुमिरन तेरा गाऊँ मै
ऐसा प्यार .....

आये हैं दर पे हम आज दादी

(तर्ज - आधा है चन्द्रमा रात आधी)

आए हैं दर पे, हम आज दादी
रख लेना भक्तों की, लाज दादी - आज दादी

तेरा दरबार हमने लगाया, बड़ी श्रध्दा से हमने सजाया
रोली मोली और मेंहदी चढ़ाई, तुझे सतरंगी चुनर ओढ़ाई
आज झुमे गगन - आज गाए ये मन
हुई खुशियों की यहां, बरसात दादी ॥

तेरी शक्ति अनोखी है माता, तू ही सारे जगत की विधाता
आस पुरी करो हे भवानी, तु है ममता मयी कल्याणी
तुझे ध्याते रहे - हम रिझाते रहे
आज करलो कबुल, अरदास दादी ॥

स्वर्ग से बढ़के माँ तेरा धाम है, झाकी तेरी माँ ललित ललाम है
आया मै भी माँ तुझको रिझाने, अपनी अरजी माँ तुझको सुनाने
मै तो दर पर खड़ा - है भरोसा बड़ा
करो पूरे हमारे, तुम काज दादी ॥

बिगड़ी मेरी बना दे, ओ शेरोवाली मैय्या

बिगड़ी मेरी बना दे, ऐ शेरोंवाली मैय्या
ऐ शेरोवाली मैय्या, ऐ पहाडावाली मैय्या
अपना मुझे बना ले, ऐ शेरोंवाली मैय्या

दर्शन को मेरी अखियाँ, कब से तरस रही है
सावन के जैसे झरझर, अखियाँ बरस रही है
दर पे मुझे बुला ले, ऐ मेहरोवाली मैय्या
बिगड़ी मेरी बना दे .....

आते है तेरे दर पे, दुनिया के नर और नारी
सुनती हो सबकी विनती, ओ मैय्या शेरोंवाली ।
मुझको दरश दिखा दे, ऐ लाटावाली मैय्या
बिगड़ी मेरी बना दे .....

यहाँ वहाँ, जहाँ तहाँ, मत पुछो कहाँ कहाँ

यहाँ वहाँ, जहाँ तहाँ, मत पुछो कहाँ कहाँ, है संतोषी माँ
अपनी संतोषी माँ, अपनी संतोषी माँ
जल मे भी, थल में भी, अतल वितल में भी, तुरत कमाल करे माँ
अपनी संतोषी माँ, अपनी संतोषी माँ

बडी अनोखी चमत्कारिणी, ये अपनी माई - २
राई को पर्वत कर देती, पर्वत को राई - २
द्वार खुला दरबार खुला है, आओ बहन भाई
इसके दर पर कभी दया की, कमी नही आई
पल में निहाल करे, दुख का निकाल करे, तुरत कमाल करे माँ
अपनी संतोषी माँ, अपनी संतोषी माँ

इस अम्बा में जगदम्बा में, गजब की है शक्ति - २
चिंता में डूबे हुये लोगो, करलो इसकी भक्ति - २
अपना जीवन सौंप दो इसको, पालो रे मुक्ति
सुख संपत्ती की दाता ये माँ, क्या नही कर सकती
बिगड़ी बनाने वाली, दुखड़े घटाने वाली, कष्ट मिटाने वाली माँ
अपनी संतोषी माँ, अपनी संतोषी माँ

गौरी सुत गणपती की बेटी, ये है बड़ी भोली - २
देख देख कर इसका मुखड़ा, हरएक दिशा डोली - २
आओ रे भक्तो ये माता है, सबकी हम जोली
जो मांगोगे तुम्हे मिलेगा, भर लो रे झोली
उज्वल-उज्वल, निर्मल निर्मल, सुदंर सुंदर माँ
अपनी संतोषी माँ, अपनी संतोषी माँ

झुलना झुला दो मेरी माँ

झुलना झुला दो मेरी माँ
झुला दो मेरी माँ, झुला दो मेरी माँ

तलुवन-तलुवन पानी माँ, ऐसो मारो पानी माँ
बारा बरस दो निर्मल पानी .....

घुटनन-घुटनन पानी माँ, ऐसो मारो पानी माँ
बारा बरस दो निर्मल पानी .....

कम्मर-कम्मर पानी माँ, ऐसो मारो पानी माँ
बारा बरस दो निर्मल पानी .....

छतियन-छतियन पानी माँ, ऐसो मारो पानी माँ
बारा बरस दो निर्मल पानी .....

कंधा-कंधा पानी माँ, ऐसो मारो पानी माँ
बारा बरस दो निर्मल पानी .....

मुंडन-मुंडन पानी माँ, ऐसो मारो पानी माँ
बारा बरस दो निर्मल पानी .....

निर्मल निर्मल पानी माँ, ऐसो मारो पानी माँ
बारा बरस दो निर्मल पानी .....

मैं बालक तु माता शेरावालीए

मैं बालक तु माता शेरावालीए
है अटुट ये नाता शेरावलीए

शेरावालीए माँ, पहाडावालीए माँ
मेहरावालीए माँ, ज्योतावालीए माँ

तेरी ममता मिली है मुझको, तेरा प्यार मिला है
तेरे आँचल की छाया में, मन का फूल खिला है
तूने बुध्दी, तुने साहस, तुने ज्ञान दिया
मस्तक ऊँचा करके, जिने का वरदान दिया माँ
तु है भाग्य विधाता शेरावालीए
मैं बालक तु माता शेरावालीए

जब से दो नैनों में तेरी, पावन ज्योत समाई
मंदीर-मंदीर तेरी मुरत, देने लगी दिखाई
ऊँचे पर्वत पर मैने भी, डाल दिया है डेरा
निशदिन करे जो तेरी सेवा, मैं वो दास हुँ तेरा
रहूँ तेरे गुण गाता शेरावालीए

जय शेरावाली, जय पहाडावाली,
जय मेहरावाली, जय ज्योतावाली

मेहन्दी रचे थारै हाथा मे

मेहन्दी रचे थारै हाथा में, घुल रह्यो काजल आँख्या में ॥
चुनरी को रंग सुरंग माँ, राणी सती

फुल खिल्यो जाने बाँगा में, चाँद उग्यो है राँता में ।
थारो ऐसो सुहाणो रुप माँ, राणी सती

रुप सुहाणो जद से देख्यो, निंदडली नहीं आख्याँ में ।
मेरे मन पर जादू कर दी, थारी मीठी बाताँ नें ॥
भूल गई सब कामा नें, याद करु थारै नामा नें ।
माया को छुटयो फंद माँ, राणी सती

थे कहे तो दादी थारी, नथनी बस बन जाऊँ मैं ।
नथनी बन जाऊँ मैं थारै, नाका से लग जाऊँ मैं ॥
चुडी बनूं थारै हाथा मे, बोर बनूं थारै माथा में ।
बन जाऊँ बाजूबन्द माँ, राणी सती

थे कहे तो दादी थारी, पायलड़ी बन जाऊँ मैं ।
पायलड़ी बन जाऊँ थारै, चरणा में रम जाऊँ मैं ॥
हार बणू थारै गले मे, मोती बन जाऊँ झुमके मे ।
नैना में करल्युँ बन्द माँ, राणी सती

तुने मुझे बुलाया शेरावालिए

तुने मुझे बुलाया, शेरावालिए
मै आया मै आया, शेरावालिए
तुने मुझे बुलाया .....

सारा जग है, इक बँजारा
सबकी मंजिल, तेरा द्वारा
ऊँचे पर्वत, लम्बा रस्ता २
पर मैं रह ना पाया, शेरावालिए
मै आया मै आया, शेरावालिए
तुने मुझे बुलाया .....

सूने मन मे, जल गई बाती
तेरे पथ में, मिल गए साथी
मुँह खोलु क्या, तुझसे माँगु २
बिन माँगे सब पाया, शेरावालिए
मै आया मै आया, शेरावालिए
तुने मुझे बुलाया .....

कौन है राजा, कौन भिखारी
एक बराबर तेरे, सारे पुजारी
तुने सबको दर्शन देके २
अपने गले लगाया, शेरावालिए
तुने मुझे बुलाया .....

करके दया हो मैय्या, एक दिन तो आना

(तर्ज : परदेसीयो से ना अखियाँ मिलाना)

करके दया हो मैय्या, एक दिन तो आना
तुझे तो पता है, माँ मेरा ठिकाना

तुमको पुकारू मै, बनके सवाली
मुझको पिलादो माँ, ममता की प्याली
सुनुंगा नही अब मै, कोई बहाना
तुझे तो पता है .....

कोई ना जाने, माँ पिर पराई
तेरी ये दुनियाँ माँ, मुझको ना भाई
अगर हो सके तो मैय्या, वापिस बुलाना
तुझे तो पता है .....

चाहे खुशी दे, चाहे तु गम दे
चाहे तो ज्यादा, या चाहे कुछ कम दे
नजरो से अपनी मैय्या, मुझे ना गिराना
तुझे तो पता है .....

तेरे सिवा अब, कोई ना मेरा
तेरी शरण में माँ, डाला है डेरा
चरणो से अपने मैय्या, मुझे ना हटाना
तुझे तो पता है .....

आया हुँ मैय्या बनके सवाली

आया हुँ मैय्या, बनके सवाली
तेरे दर से, जाऊँ ना खाली
ओ शेरावाली माँ, ओ मेहरावाली माँ

तेरे नाम की ज्योत जगाऊँ, जीवन अपना सफल बनाऊँ
भक्तों ने तुझे पुकारा, आके दो माँ हमको सहारा
हो..... अंबे माँ
शेरावाली मेहरावाली, ओ शेरावाली माँ, मेहरावाली माँ

तेरे दर पे आऊँ सवाली, जाऊँगा ना दर से माँ खाली
भक्तो ने तुझको पुकारा, आके दो माँ हमको सहारा
हो..... अंबे माँ
शेरावाली मेहरावाली, ओ शेरावाली माँ, मेहरावाली माँ

तेरे नाम की भक्ति बड़ी है, दुनिया तेरे दर पे खड़ी है
मैने भी तुझको पुकारा, आके दो माँ मुझको सहारा
हो..... अंबे माँ
शेरावाली मेहरावाली, ओ शेरावाली माँ, मेहरावाली माँ

मुझे माँ से गिला

मुझे माँ से गिला आ... आ... आ... मिला ये ही सिला
बेटीयाँ क्यो पराई है, मेरी माँ

खेली कूदी मैं जिस आँगन में, वो भी अपना पराया सा लागे २
ऐसा दस्तुर क्यो है माता, जोर किसका चला इसके आगे २
एक को घर दिया, आ.. आ... आ
एक को घर दिया, एक को वर दिया
तेरी कैसी खुदाई है, बेटीयाँ क्यों पराई है

जो भी माँगा मैने बाबुल से, दिया हँस के मुझे बाबुल ने - २
प्यार इतना दिया है मुझको, क्या मैं बोलु अपने मुख से-२
जिस घर में पली, आ.. आ... आ
जिस घर मे पली, उस घर से ही माँ
ये कैसी जूदाई है, बेटीयाँ क्यों पराई है

अच्छा घर सुंदर वर देखा माँ ने, क्षण मे कर दिया उनके हवाले २
जिंदगी भर का है ये बंधन, कहके समझाते है घरवाले-२
देते दिल से दुआ, आ.. आ... आ
देते दिल से दुआ, खुश रहना सदा ...
कैसी प्रीत निभाई है, बेटीयाँ क्यों पराई है

अब तो जाना पड़ेगा मुझको, बिछोड़ा सहना पड़ेगा सबसे - २
गलतीयाँ माफ करना मेरी, दुर रहना पड़ेगा अब से - २
अच्छा चलती हूँ माँ, आ.. आ... आ
अच्छा चलती हूँ माँ, अब गले से लगा
बेटीयाँ तो पराई है

मिलता है सच्चा सुख केवल

मिलता है सच्चा सुख केवल, हे मात तुम्हारे चरणों में ।
ये विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
मिलता है .....

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो
पर मन ये डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
मिलता है .....

चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे काँटो पे भी चलना हो
चाहे छोड़के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
मिलता है .....

जीवहा पर तेरा नाम रहे, तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे
तेरी याद मे आठो याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों मे
मिलता है .....

माथे पे कुमकुम करे सिंगार

(तर्ज - लाल लाल चुनरी, कलीयो को हार)

माथे पे कुमकुम करे सिंगार, मैय्या तो आ गई शेर पे सवार

माथे पे चमके सुरज की लाली, तारो का गजरा चंदा की बाली
बिजली के काजल से नैना के धार, मैय्या तो आ गई शेर पे सवार

देवो ने पुजा की थाली सजाई, ब्रम्हा और विष्णु ने आरती गाई
शिवजी ने पहनाया फुलो का हार, मैय्या तो आ गई शेर पे सवार

मैं हुँ निर्बल तु शक्तिशाली, करदे कृपा मुझपे ऐ शेरोवाली
पुजा स्वीकार करो मेरा उद्धार, मैय्या तो आ गई शेर पे सवार

हनुमान मंडल मैय्या तुमको मनाए, ज्योत जलाये मैय्या तुमको रिझाए
रखना खुशहाल इनका सारा परिवार, मैय्या तो आ गई शेर पे सवार

बाजरे की रोटी खाले माँ

बाजरे की रोटी खाले माँ
की हलवा पूँड़ी भुल जाएगी ।

बाजरे की रोटी मैय्या, बडी है कमाल की
मिरची की चटनी मैय्या, बडी है धमाल की
साथ मे लस्सी पीले माँ
की हलवा पूड़ी भूल जाएगी

बाजरे का आटा मैय्या, लायो राजस्थान से
गुढ की ढेली मैय्या, लायो है यू.पी. से
मजे से खइय्यो मेरी माँ
की हलवा पूड़ी भूल जाऐगी

बाजरे की रोटी मैय्या, सबको मिलेगी
खाले मेरी मैय्या यहाँ, फिर ना मिलेगी
गोंदिया है म्हारा गांव माँ
की हलवा पूड़ी भूल जाएगी

बेटा बुलाए झट दौड़ी चली आए माँ

दोहा
मैं नहीं जानु पूजा तेरी, पर तु ना करना मैय्या देरी
तेरा भक्त ये तूझे पुकारे, लाज तु रखले अब माँ मेरी

बेटा बुलाए, झट दौड़ी चली आए माँ - २
अपने बच्चों के आँसु, देख नहीं पाए माँ

वेद पुराणों में भी माँ की, महिमा का बखान है
वो भी झुकता माँ चरणों में, जिसने रचा जहान है - २
देवर्षि भी समझ न पाए, ऐसी लीला रचाए माँ
बेटा बुलाए .....

संकट हरनी वरदानी माँ, सबके दुखड़े दूर करे
शरण में आए दीनदुखी की, बिनती माँ मंजूर करे - २
सारा जग जिसको ठुकरादे, उसको गले लगाए माँ
बेटा बुलाए .....

बिगड़ी तेरी बात मेरी, माँ की महिमा गा के देख
खुशियों से भर जाएगा तु, झोली तो फैला के देख - २
झोली छोटी पड़ जाती है, जब देने पे आए माँ
बेटा बुलाए .....

कबसे तेरी कचहरी में, माँ लिखकर दे दी अर्जी
अपनाले चाहे ठुकरादे, आगे तेरी मर्जी २
मै भी सरल खड़ा हाथ जोडे, जो भी हुकुम सुनाए माँ
बेटा बुलाए .....

दुर्गा है मेरी माँ

दुर्गा है मेरी माँ, अम्बे है मेरी माँ - २
बोलो जय माता दी, जय हो - २
जो भी दर पे आए, जय हो
वो खाली न जाए, जय हो
सबके काम है करती, जय हो
सबके दुखड़े हरती, जय हो
मैय्या शेरोवाली, जय हो
भरदे झोली खाली, जय हो
दुर्गा है मेरी माँ, अम्बे है मेरी माँ

पूरे करे अरमान जो सारे - २
देती है वरदान जो सारे - २
दुर्गा है मेरी माँ, अम्बे है मेरी माँ - २

सारे जग को खेल खिलाए - २
बिछड़ो को जो खुब मिलाए - २
दुर्गा है मेरी माँ, अम्बे है मेरी माँ - २

मैय्या का चोला है रंगला

दोहा

हो लाली मेरी मात की, जित देखु तित लाल
लाली देखन मैं गया, मैं भी हो गया लाल ।

मैय्या का चोला है रंगला, शेरोवाली का चोला, है रंगला
मेहरोवाली का चोला, है रंगला, ज्योतोवाली का चोला, है रंगला
अम्बेरानी का चोला, है रंगला, माँ वैष्णो का चोला, है रंगला
हो भवन मैय्या का लाल चोला, है रंगला ५

सुआ चोला अंग बिराजे - २
सुआ-सुआ चोला, अंग बिराजे
लगे किनारी लाल चोला, है रंगला ५
मेरी माँ का चोला, है रंगला

सिर सोने का छत्र बिराजे - २
पीरे अपरंपार चोला, है रंगला ५
मेरी माँ का चोला, है रंगला

अश्विन चैत महीना आवे - २
चले पवन की चाल चोला, है रंगला ५
मेरी माँ का चोला, है रंगला

पान सुपारी ध्वजा नारियल - २
माँ की भेंट चढ़ा के चोला, है रंगला ५
मेरी माँ का चोला, है रंगला

शेरोवाली माता मेरी, मेहरोवाली माता मेरी
सबको करे निहाल चोला, है रंगला ५
मेरी माँ का चोला, है रंगला

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुख हरनी ।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूँ लोक फैली उजयारी ॥
शशि ललाट मुख विशाला, नेत्र लाल भृकटी विकाराला ।
रुप मातु को अधिक सुहावे, दरश करत जन अति सुख पावै ॥
तुम संसार शक्ति लै कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना ।
अन्नपुर्णा हुई जग पाला, तुमही आदी सुन्दरी बाला ॥
प्रलय काल सब नाशन हारी, तुम गौरी शिव-शंकर प्यारी ।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं, ब्रम्हा विष्णु तुम्हें नित ध्यावै ॥
रुप सरस्वती को तुम धारा, दे सुबुध्दि ऋषि मुनिन उबारा ।
धरयो रुप नरसिंह को अम्बा, परगट भई फाड़ के खम्बा ॥
रक्षाकर प्रहलाद बचायो, हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ।
लक्ष्मी रुप धरो जग माहीं, श्री नारायण अंग समाहीं ॥
क्षीरसिंदु में करत विलासा, दयासिन्धु दीजै मन आसा ।
हिंगलाज में तुम्ही भवानी, महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी अरु धुमावती माता, भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ।

श्री भैरव तारा जग तारिणी, छिन्न भाल भव दुःख निवारिणिं ॥
केहरि वाहन सोह भवानी, लांगुर वीर चलत अगवानी ।
करमें खप्पर खड्ग विराजै, जाको देख काल डर भाजै ॥
सोहै अस्त्र और त्रिशुला, जाते उठत शत्रु हिय शुला ।
नगरकोट में तुम्हीं विराजत, तिहुंलोक में डंका बाजत ॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्त बीज शंखन संहारे ।
महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अघभार मही अकुलानी ॥
रुप कराल काली को धारा, सेन सहित तुम तिहि सहारा ।
परी भीर सन्तन पर जब जब, भई सहाय मातु तुम तब तब ॥
अमरपुरी अरु बासव लोका, तव महिमा सब कहैं अशोका ।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी, तुम्हे सदा पुजें नर नारी ॥
प्रेम भक्ति से जो यस गावैं, दुख दारिद्र निकट न आवैं ।
ध्यावैं तुम्हे जो नर मन लाई, जन्म मरण तें सो छुटी जाई ॥
जोगी सुर मुनी कहत पुकारी, योग न होई बिनु शक्ति तुम्हारी ।
शंकर आचारज तप कीनों, कामक्रोध जीति सब लीनों ॥
निशदिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ।
शक्ति-रुप को मरम न पायो, शक्ति गई तब मन पछितायो ।
शरणागत होई कीर्ति बखानी, जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति नही कींन विलम्बा ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो, तुम बिन कौन हरे दुख मेरो ।
आशा तृष्णा निपट सतावै, रिपु मूरख मोहिं अति डरपावै ।
शत्रु नाश कीजै महारानी, सुमरौ इक चित तुम्हें भवानी ।
करो कृपा हे मातु दयाला, रिध्दि सिध्दि दै करहु निहाला ॥
जब लगी जियु दया फल पाऊँ, तुम्हारो यश मैं सदा सुनाऊँ ।
दुर्गा चालीसा जो कोई गावैं, सब सुख भोग परम पद पावैं ।
देवीदास शरण निज जानी, करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥

दे दे थोड़ा प्यार मैय्या

दे दे थोड़ा प्यार मैय्या, तेरा क्या घट जायेगा
ये बालक भी तर जायेगा

दे दिया तुमने, सबको सहारा माँ, जो द्वारे आया है
भर दिया दामन, उसका खुशी से माँ, जो अर्जी लाया है
मुझको देने से, खजाना कम नही हो जायेगा
ये बालक भी तर जायेगा
दे दे थोड़ा .....

है पुराना माँ, रिश्ता हमारा जो, उसे तुम याद करो
गर देख पाओ माँ, बालक तुम्हारा हुँ, मेरे सर हाथ धरो
प्यार का रिश्ता, हमारा टुटने ना पायेंगा
ये बालक भी तर जायेगा
दे दे थोड़ा .....

नैय्या मेरी ये माँ, तेरे हवाले है, इसे अब पार करो
गर दे दिया तुमने, इसको किनारा माँ, तो ये विश्वास करो
ये तेरा दरबार, जय जयकारों से गुंज जायेगा
ये बालक भी तर जायेगा
दे दे थोड़ा .....

चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है

चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है
ऊँचे पर्वत पे रानी माँ, ने दरबार लगाया है ॥

सारे जग मे एक ठिकाना, सारे गम के मारों का
रस्ता देख रही है माता, अपनी आँख के तारों का ।
मस्त हवाओं का एक झोंका, ये संदेशा लाया है
चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है

जय माता की कहते जाओ, आने जाने वालों को
चलते जावो तुम मत देखों, अपने पाँव के छांलो को ।
जिसने जितना दर्द सहा है, उतना चैन भी पाया है
चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है

वैष्णों देवी के मंदिर में, लोग मुरादें पाते हैं
रोते रोते आते है, हँसते हँसते जाते है ।
मैं भी माँग के देखुँ जिसने, जो मांगा सो पाया है ॥
चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है

मैं भी तो एक माँ हुँ माता, माँ ही माँ को पहचाने
बेटे का दु:ख क्या होता है, और कोई ये क्या जाने ।
उसका खून मैं देखूं कैसे, जिसको दूध पिलाया है ॥
चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है

काली काली, अमावस की रात में

काली काली, अमावस की रात में
काली निकली, काल भैरव के साथ में
ओ काली काली, ओ महाकाली

ये अमावस की, रात बड़ी काली
घुमने निकली, माता महाकाली
एक दानव का, मुंड लिए हाथ में
काली निकली .....

केश बिखरे माँ के, काले-काले
नैना मैय्या के है, लाले-लाले
काला कुत्ता, भैरवजी के साथ में
काली निकली .....

रूप भैरवजी का, काला-काला
ये तो है मैय्या, काली का लाला
बेटा घुमने चला, माँ के साथ में
काली निकली .....

बावन भैरव है, छप्पन है करवा
साथ खेल रहे, सौ-सौ गण बरवा
चौसठ जोगनिया, मैय्या के साथ में
काली निकली .....

ओ माँ शेरोवाली
ओ माँ शक्तिशाली

ओ माँ शेरोवाली, ओ माँ शक्तिशाली
माँ मेरी माँ से मिला दे मुझे, ममता का मैं वास्ता दु तुझे
दर से ना तेरे, जाऊँगा खाली
ओ माँ शेरोवाली .....

माँ चुप है बेटा रोता है, ऐसा जग में कब होता है
पत्थर के मंदिर में रहके
दिल भी क्या माँ तेरा हो गया पत्थर
तेरी दया को जगा दुँगा, रो के तुझको रुलादुँगा
पिघलेंगी तब तु पहाड़ोवाली
ओ माँ शेरोवाली .....

सबकी माता तब तुझे मानु, मेरा दुख पहचाने तो जानु
जो न दिखाई माँ की सुरत, उठा ले जाऊँगा मैं तेरी मुरत
सब कुछ है धनवानों का, मेरे धन तो बस माता-पिता
दौलत ये मेरी क्यों तुने छुपा ली
ओ माँ शेरोवाली .....

अपने भक्तों की तुझको कसम, दिल के सच्चों की तुझको कसम
तेरे बच्चो की तुझको कसम, ना अपनो को देते सजा
ओ माँ शेरोवाली .....

त्रिशुल तेरा उठा लुंगा, चरणों में सर चढ़ा दुँगा
रंग देंगी तुझको, लहु की लाली
ओ माँ शेरोवाली .....

खम्मा खम्मा हो रामा

खम्मा खम्मा हो रामा, रूनीचे रा धनिया
थाने तो ध्यावे आँख्यो मारवाड हो, आँख्यो गुजरात हो
अजमालजी रा कंवरा

भादूडे री दूज मे, चमक्योजी सितारो
पालनियाँ में झूलन आयो, आयो पालनहारो
द्वारीकारा नाथ झूले पालनियाँ
हो रामा, द्वारीकारा नाथ झूले पालनियाँ, अजमालजी रा कंवरा

बडोड़ा बीरमदेव, छोटा रामदेवजी
धोरा री धरती में आया, आया रामापीर जी
कुमकुम रा पगल्या मांडया आंगनियाँ
हो रामा, कुमकुम रा पगल्या मांडया आंगनियाँ, अजमालजी रा कंवरा

सिर पे किलंगी तुर्रो, केसरीया है जामो
भगतारी भीड आयो, भोलो पीर रामो
भक्ता रो मान बढावनियाँ
हो रामा, भक्ता रो मान बढावनियाँ, अजमालजी रा कंवरा

माता मैनादे ज्यारा, पिता अजमालजी
सुगना रा बीर रानी, नेतल रा भरतारजी
जगमग ज्योत जगावनियाँ
हो रामा, जगमग ज्योत जगावनियाँ, अजमालजी रा कंवरा

डालीबाई बाबा थारे, पगल्या पखारती
लाछा और सुगनाबाई, करे हर की आरती
हरजी भाटी रे मन भावनियाँ,
हो रामा, हरजी भाटी रे मन भावनियाँ, अजमालजी रा कंवरा

रामदेव बाबा थाने, घनी-घनी खम्माजी
सौ करोड़ म्हाने दे दो, बाकी राख्यो जमाजी
थे हो देवनीयाँ, म्हे हुँ लेवनीयाँ,
हो रामा, थे हो देवनीयाँ, म्हे हुँ लेवनीयाँ, अजमालजी रा कंवरा

जमाने मे कहाँ टूटी हुई

जमाने मे कहाँ टूटी हुई, तस्वीर बनती है
तेरे दरबार मे बिगडी हुई, तकदीर बनती है ।

तारीफ तेरी, निकली है दिल से
आई है लब पे, बन के कव्वाली

शिर्डी वाले सांई बाबा
आया है तेरे दर सवाली ।

लब पे दुआएँ, आँखो मे आँसू
दिल मे उम्मीदे, और झोली खाली
शिर्डी वाले .....

ओ मेरे सांई देवा, तेरे सब नाम लेवा
जुदा इन्सान सारे, सभी तुझको है प्यारे
सुने फरीयाद सबकी, तुझे है याद सबकी
बडा या कोई छोटा, नही मायूस लौटा
अमीरो का सहारा, गरीबो का गुजारा
तेरी रहमत का किस्सा बयाँ, हम सब करे क्या
दो दिन की दुनिया, दुनिया है गुलशन
सब फूल कांटे, तु सब का माली
शिर्डी वाले .....

खुदा की शान तुझमे, दिखे भगवान तुझमे
तुझे सब मानते है, तेरा दर जानते है
चले आते है दौडे, जो खुद किस्मत है थोडे
ये हर राही की मंजील, ये हर कश्ती का साहील
जिसे सबने निकाला, उसे तुने संभाला
तू बिछडो को मिलायें, बुझे दिपक जलायें
ये गम की रातें, राते ये काली
इनको बना दे, ईद और दिवाली
शिर्डी वाले .....

साईंनाथ तेरे हजारो हाथ

साईंनाथ तेरे हजारो हाथ, साईंनाथ तेरे हजारो हाथ
जिस जिस ने तेरा नाम लिया, तु हो लिया उसके साथ

इत देखु तो तु लागे कन्हैय्या, ऊत देखू तो दुर्गा मैय्या
नानक की मुस्कान है मुख पर, शान-ऐ-मोहब्बत भी है मुख पर २
साईंनाथ तेरे .....

राम नाम की है तु माला, गौतम वाला तूझमें उजाला २
नीम तेरे जीने की छाया, बदले हर चोले की काया
साईंनाथ तेरे .....

तेरा दर है दया का सागर, सब मजहब भरते है गागर २
पावन पारस तेरी याद, तेरा पत्थर कण कण राग
साईंनाथ तेरे .....

तेरा मंदिर सबका मदीना, जो भी आए सीखे जीना २
तू चाहे तो टल जाए घात, तुही भोला तुही नाथ
साईंनाथ तेरे .....

भक्ती करे तो लौट आते है

(तर्ज - पंख होते तो उड़)

भक्ती करे तो लौट आते है, शिर्डी के सांईनाथ
सदा जिंदा रुप दिखलाते है
सांई ओम .....

साँई को मेरे तिलक लगा दो , साँई को मेरे माला पहना दो
दूर से देखा तो पत्थर पडा था, उसपे मेरा साँई खडा था
शिर्डी के सांईनाथ, सदा जिंदा रुप दिखलाते है
सांई ओम .....

साँई ने अंधे को आँखे दिलाया, साँई ने लंगडे को चलना सिखाया
साँई ने रोगी को निरोगी बनाया, अजब है उनकी देखो ये माया
शिर्डी के सांईनाथ, सदा जिंदा रुप दिखलाते है
सांई ओम .....

जात और पात ये लोगो की बात है, मेरे साँई की बस एक ही बात है
दुर से देखा तो मेला भरा था, उसपे मेरा साँई खड़ा था
शिर्डी के सांईनाथ, सदा जिंदा रुप दिखलाते है
सांई ओम .....

हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई, सभी है साँई तेरे पुजारी
आया है जो भी दर पे सवाली, फिर क्यु उसकी झोली है खाली
शिर्डी के सांईनाथ, सदा जिंदा रुप दिखलाते है
सांई ओम .....

गुरुदेव दया करके

गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना
मै शरण पडा तेरी, चरणों में जगह देना

करुणानिधी नाम तेरा, करुणा दिखला जाओ
सोये हुए भागों को, हे नाथ जगा जाओ
मेरी नांव भँवर डोले, इसे पार लगा देना ।
मैं शरण पड़ा तेरी .....

तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो
इन तन में समाये हो, मुझे प्राण से प्यारे हो
नित माला जपु तेरी, नही दिल से भुला देना ।
मैं शरण पड़ा तेरी .....

पापी हुँ या कपटी हुँ, जैसा भी हुँ तेरा हुँ
घरबार छोड़कर मैं, जीवन से खेला हुँ
दुख का मारा हुँ मै, मेरे दुखड़े मिटा देना ॥
मैं शरण पड़ा तेरी .....

मै सबका सेवक हुँ, तेरे चरणों का चेला हुँ
नही नाथ भुलाना मुझे, इस जग में अकेला हुँ
तेरे दर का पुजारी हुँ, मेरे दोष मिटा देना ॥
मैं शरण पड़ा तेरी .....

ले गुरु का नाम बंदे

(तर्ज - एक तेरा साथ हमको)

ले गुरु का नाम बंदे, यही तो सहारा है
ये जग का पालन हारा है ॥

तारीफ क्या करूँ, इन दीन दाता की, दयालू नाम है
दीन दुःखीयों के, दामन को भर देना, गुरु का काम है
लाखों की तकदीर को, इस मालिक ने सँवारा है
ये जग का पालनहारा है ..... ॥ १ ॥

क्या भरोसा है, इस जिन्दगानी का, गुरु को याद कर
क्या सोचता है, अनमोल जीवन को, ना तु बर्बाद कर
सौंप दे पतवार फिर तो, पास में किनारा है
ये जग का पालनहारा है ..... ॥ २ ॥

कौन है तेरा, क्या साथ जाएगा, गुरु का ध्यान कर
व्यर्थ है काया, धोखे की है माया, गुरु से पहचान कर
बनवारी नादान तुने, गुरु को क्यों बिसारा है
ये जग का पालनहारा है ..... ॥ ३ ॥

कभी प्यासे को, पानी पिलाया नही

कभी प्यासे को, पानी पिलाया नही
बाद अमृत पिलाने, से क्या फायदा ।
कभी गिरते हुए, को उठाया नहीं
बाद आँसू बहाने, से क्या फायदा ॥

मैं तो मंदिर गया, पूजा आरती की
पूजा करते हुए ये, ख्याल आ गया ।
कभी माँ बाप की, सेवा कि ही नहीं
फिर पूजा भी करने से क्या फायदा ॥

मैं तो सतसंग गया, गुरु वाणी सुनी
गुरुवानी को सुनकर, ख्याल आ गया ।
जन मानस की, सेवा कि ही नहीं
फिर मानव कहलाने, से क्या फायदा ॥

मैंने दान दिया, मैने जप तप किया
दान देते ये मन में, ख्याल आ गया ।
कभी भुखे को, भोजन खिलाया नहीं
दान लाखों का करने, से क्या फायदा ॥

गंगा नहाने हरीद्वार काशी गया
गंगा नहाते हुए ये, ख्याल आ गया ।
तन को धोया मगर, मन को धोया नहीं
फिर गंगा नहाने, से क्या फायदा ॥

माँ पिता के ही चरणों में, चारो धाम है
आ जा आ जा यही, मुक्ति का धाम है ।
पिता माता की सेवा, कभी की ही नहीं
फिर तीर्थो में जाने, से क्या फायदा ॥

दमा दम मस्त कलंदर

ओ लाल मेरी पत रखीओ भला झुलेलालण-२
सिंधड़ीदा, सेवनदा, सख्खर दा, सखी साबाज़ कलंदर
दमादम मस्त कलंदर, अलीदम दम दे अंदर
दमादम मस्त कलंदर, अली दा पहला नंबर
ओ लाल मेरी, ओ लाल मेरी .....

चार चिराग तेरे बरण हमेशा-३
पंजवा में बारण, आई भला झुलेलालण
ओ पंजवा में बारण
पंजवा में बारण आई भला झुलेलालण
सिंधड़ीदा सेवनदा सखी साबाज़ कलंदर
दमादम मस्त कलंदर, अलीदम दम दे अंदर
दमादम मस्त कलंदर, अली दा पहला नंबर
ओ लाल मेरी, ओ लाल मेरी .....

हिंद सिंध पिरा तेरी नौबत बाजे-३
नल बाजे घडीयाल भला झुलेलालण
ओ नल बाजे, ओ नल बाजे घडीयाल भला झुलेलालण
सिंधड़ीदा सेवनदा सखी साबाज़ कलंदर
दमादम मस्त कलंदर, अलीदम दम दे अंदर
दमादम मस्त कलंदर, अली दा पहला नंबर
ओ लाल मेरी, ओ लाल मेरी .....

हरदम पिरा तेरी खैर होवे-३
नामे अली बेडा पार लगा झुलेलालण
सिंधड़ीदा सेवनदा सखी साबाज़ कलंदर
दमादम मस्त कलंदर, अलीदम दम दे अंदर
दमादम मस्त कलंदर, अली दा पहला नंबर
ओ लाल मेरी, ओ लाल मेरी .....

बंद कर खिड़की भले ही द्वार

बंद कर खिड़की भले ही द्वार, कितने भी तु ताले डाल
एक दिन तोड़ के पिंजरा, पंछी उड़ जाना
करले जतन हजार, पंछी उड़ जाना
पंडी उड़ जाना .....

महल धरे के धरे रहेंगे, धन दौलत सब पड़े रहेंगे ।
साथ चलेगा कोई न तेरे, दुर-दुर सब खड़े रहेंगे २
करले सोच विचार, पंछी उड़ जाना
करले जतन हजार .....

ईश्वर की कर भक्ती बंदे, छोड़ दे सारे पाप के धंदे
मोह माया के जाल सुनहरे, सब के साथ फाँसी के फंदे २
जपले कृष्ण मुरार, पंछी उड़ जाना
करले जतन हजार .....

करले कुछ तो नेक कमाई, आखिर तेरे काम ये आई
लख चौरासी जून भोग के, मानस देह ये तुने पाई २
करता क्यु बेकार, पंछी उड़ जाना
करले जतन हजार .....

वक्त अभी है बात मानले, संतमुनी जन सेठ जान ले,
छोड़ दे झुठे ताने बाने, परमेश्वर को सत्य मान ले २
मिलेंगे फिर करतार, पंछी उड़ जाना
करले जतन हजार .....

जपले प्रभु ही परम आत्मा, खुल जाएगा द्वार सातवा
फिर ना पिंजरा नाही पंछी, जन्म मरण का होगा खात्मा २
भवसागर कर पार, पंछी उड़ जाना
करले जतन हजार .....

ए मेरे वतन के लोगो

ऐ मेरे वतन के लोगो, तुम खुब लगालो नारा
ये शुभ दिन है हम सबका, लहरा दो तिरंगा प्यारा
पर मत भुलो सीमा पर, वीरो ने है जान गवाएँ
कुछ याद इन्हे भी करलो, जो लौट के फिर ना आए

ऐ मेरे वतन के लोगो, जरा आँख मे भर लो पानी
जो शहीद हुए है उनकी, जरा याद करो कुर्बानी
जय हिंद ....

जब घायल हुवा हिमालय, खतरे में पड़ी आजादी
जब तक थी सांस लड़े वो, फिर अपनी लाश बिछा दी
हो गए वतन पर न्यौछावर, जो वीर थे वो अभिमानी
जो शहीद हुए है उनकी, जरा याद करो कुर्बानी
जय हिंद ....

जब देश में थी दिवाली, वो खेल रहे थे होली
जब हम बैठे थे घरो में, वो झेल रहे थे गोली
वो धन्य जवान थे उनके, जो धन्य थी उनकी जवानी
जो शहीद हुए है उनकी, जरा याद करो कुर्बानी
जय हिंद ....

कोई सिख कोई जाट मराठा, कोई गुरखा कोई मदरासी
सरहद पर मरनेवाले, वो वीर थे भारतवासी
जो खून गिरा पर्वत पर, वो खून था हिंदुस्तानी
जो शहीद हुए है उनकी, जरा याद करो कुर्बानी
जय हिंद ....

ये देश है वीर जवानो का

ये देश है वीर जवानो का, अलबेलो का, मस्तानो का
इस देश का यारो, क्या कहना
ये देश है, दुनिया का गहना
हो हो ...

यहाँ चौड़ी छाँती वीरो की
यहाँ भोली शक्ले हीरो की
यहाँ गाते है, रांझे मस्ती में
मस्ती में घुमे, बस्ती में
हो हो ...

दिलभर के लिए, दिलदार है हम
दुश्मन के लिए, तलवार है हम
मैंदा मे अगर, हम डट जाए
मुश्किल है, पिछे हट जाए
हो हो ...

फुलो में, बहारे झुलो की
राहो मे कतारे, फुलो की
यहाँ हँसता है, सावन बालो मे
खिलती है, कलीयाँ गालो में
हो हो ...

कर चले हम फ़िदा जाँ वतन साथीयो

कर चले हम फिदा, जाँ वतन साथीयो
अब तुम्हारे हवाले, वतन साथीयो

सांस थमती गई, नब्ज जमती गई
फिर भी बढते कदम को, ना रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो, कुछ गम नही
सर हिमालय का हमने, ना झुकने दिया
मरते-मरते रहा, बाकपन साथीयो
अब तुम्हारे हवाले .....

राह कुर्बानीयो की, ना विरान हो
तुम सजाते ही रहना, नए काफिले
फतेह का जश्न, इस जश्न के बाद है
जिंदगी मौत से, मिल रही है गले
बांध लो अपने सर पे, कफन साथीयों
अब तुम्हारे हवाले .....

खींच दो अपने खुं से, जमीं पर लकीर
इस तरफ आने पाए, ना रावन कोई
तोड़ दो हाथ अगर, हाथ उठने लगे
छु न पाए न सीता का, दामन कोई
राम हो तुम, तुम्ही लक्ष्मण साथीयो
अब तुम्हारे हवाले .....

खेलन दे गणगौर

अम्बा म्हारी खेलन दे गणगौर
फिर खेलन नही आऊँ रे .....
खेलन रा दिन चार .....

मै हुँ अम्बा थारी गायरी बछिया-२
जित मोडे मुड जाऊँ रे अम्बा म्हारी
जित मोडे मुड जाऊँ रे ॥ १ ॥

मै हूँ अम्बा थारी चिडी चिडकली - २
सांझ पडे उड जाऊँ रे अम्बा म्हारी
सांय पडे उड जाऊँ रे ॥ २ ॥

या तो आऊँगी अम्बा भाई के ब्याह मे-२
या कोई तीज त्यौहार अम्बा म्हारी
या कोई तीज त्यौहार ॥ ३ ॥

या तो आऊँगी अम्बा भाई के संग मे - २
बिना बुलाए नही आऊँ रे अम्बा म्हारी
बिना बुलाए नही आऊँ रे ॥ ४ ॥

जो बिगड़ी को बनाते है, उन्हें भगवान कहते है ।
जो मुसीबत मे काम आते है, उसे इन्सान कहते है ।
जो पैदा दर्द को कर दे, उसे तान कहते है ।
जो रिझाता है भगवान को, उसे गान कहते है ।
जो दिल में राम को रखता है, उसे हनुमान कहते है ।
जो पीता है जहर, उसे शिव भगवान कहते है ।
जो निभाया वचन पिता का, उन्हें श्रीराम कहते है ।
जो दिया उपदेश गीता में, उन्हे कृष्ण भगवान कहते है ।
तमन्ना एक ही जीवन की, जीवन मे ऐसा हो जाए ।
इससे बड़ी कोई बात नही, हनुमान तेरा दर्शन हो जाए ।

श्री गणपतीची आरती

सुखकर्ता दुखहर्ता वार्ता विघ्नाची ।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची ॥
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदूराची ॥
कंठी झळके माळ मुक्ता फळांची ॥ १ ॥
जय देव जय देव जय मंगलमुर्ती
दर्शणमात्रे मनः कामना पुरती ॥ धृ. ॥

रत्न खचित फरा तुज गौरी कुमरा ।
चंदनाची उटी कुंकुमकेशरा ॥
हिरे जडित मुकुट शोभतो बरा ॥
रुणझुणती नुपूरे चरणी घागरीया ॥ जय देव ॥ २ ॥

चरणीच्या घागरीया रुणझुण वाजती ॥
तेणे नांदे देवा वाक्या गर्जति ॥
ताथा ठुमकत ठुमकत नाचे गणपती ॥
तो शंकर पार्वती कौतुक पाहती ॥ जय देव ॥ ३ ॥

लंबोदर पितांबर कणीवर बंधना ॥
सरळ सोंड वक्रतुंड त्रिनयना ॥
दास रामाचा वाट पाहे सदणा ॥
संकटी पावावे, निर्वाणी रक्षावे सुरवरवंदना ॥ ४ ॥
॥ जय देव जय देव ॥

निर्गुणाचे ताट निरांजण हाती ॥
कल्पनाचे घृत मणाच्या वाती ॥
ज्ञान दिले तिथे लावल्या ज्योती ॥
तुझे तुला अर्पण केले गणपती ॥ ५ ॥
जय देव जय देव जय मंगलमुर्ती
दर्शणमात्रे मनः कामना पुरती ॥

श्री गणपति जी की आरती

गणपति जी की सेवा मंगल मेवा, सेवा से सब विघ्न टरें ।
तीन लोक तैंतीस देवता, द्वार खड़े अरज करें ॥

ऋध्दि सिध्दि दक्षिण बाम विराजे, उर आनन्द सो चवँर करें ।
धूप दीप और लिए आरती, भक्त खड़े सब अरज करें ॥

गुड़ के मोदक भोग लगत हैं, मूषक वाहन चढ़े सरे ।
सौम्य रुप सेवा गणपति की, विघ्न रोग जो दुर करे ॥

भादौं मास और शुक्ल चतुर्थी, दिन दोपारा भरपूर परे ।
लियो जन्म गणपति प्रभुजी ने, दुर्गा मन आनन्द भरैं ॥

श्री शंकर को आनन्द उपज्यो, नाम सुने सब विघ्न टरें ।
आन विधाता बैठे आसन, इन्द्र अप्सरा नृत्य करें ॥

वेद विधाता विष्णु जाको, विघ्न-विनाशक नाम धरें ।
एकदन्त गजबदन विनायक, त्रिनयन रुप अनूप धरें ॥

पग खम्भासा उदर पुष्ट है, देख चन्द्रमा हास्य करें ।
देके श्राप श्री चन्द्रदेव को, कला हीन तत्काल करें ॥

चौदह लोक में फिरें गणपति, तीन भुवन में राज करें ।
उठ प्रभात जो आरती गावें, जाके सिर यश छत्र फिरे ॥

गणपति जी की पूजा पहले करनी, काम सभी निर्विघ्न सरें ।
जन प्रताप श्री गणपतिजी की, हाथ जोड़ कर स्तुति करें ॥

श्री गणेशजी की आरती

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

एक दन्त दयावन्त, चारभुजा धारी ।
माथे सिन्दुर सोहै, मुसे की सवारी ॥

पान चढ़ें फूल चढ़ें, और चढ़ें मेवा ।
लड्डूवन के भोगं लगे, संत करे सेवा ॥

अन्धन को आँख देत, कोढ़ीन को काया ।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥

दीनन की लाज रखो, शम्भु सुतधारी ।
कामना को पुर्ण करो, जग बलीहारी ॥

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

श्री शंकरजी की आरती

जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा ।
ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, अर्धांगी-धारा ।
ओम हर हर हर महादेव ।

एकानन चतुरानन, पंचानन राजै ।
हंसासन गरुड़ासन, वृषवाहन साजै ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

दोय भुज चार चतुर्भुज, दशभुज ते अति सोहे ।
तीनो रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

अक्षमाला बनमाला, मुण्डमाला धारी ।
चंदन मृगमद चंदा, भोले शुभकारी ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे ।
सनकादिक ब्रम्हादिक, भूतादिक संगे ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

कर में श्रेष्ठ कमण्डल, चक्र त्रिशुल धर्ता ।
जगकर्ता जगभरता, जग पालन कर्ता ।
ओम हर हर हर महादेव ।

अमृत लक्ष्मी सरस्वती, पार्वती संगे ।
अर्धांगी गायत्री, अर्धांगी सावित्री, शिव गौरा संगे ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

भोलेजी की जटाओं में गंग विराजे, ऊपर जलधारा ।
सहस्त्र नाग लिपटावत, अंग भभुती रमावत, ओढ़त मृगछाला ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरव ।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरु ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

पार्वती पर्वत मे विराजत, शंकर कैलाशा ।
भांग धतूरे को भोजन, भस्मी मे रमता ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर के मध्ये, यह तीनो लोका ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

कैलासन में बास तुम्हारा, गिरिजा के संग में ।
नंदी गण पे सवारी, भूत प्रेत संग में ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

तन मन धन और जीवन, सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

काशी मे विश्वनाथ विराजत, नंदो ब्रम्हचारी ।
नित उठ दर्शन पावत, रुचि रुचि भोग लगावत, महिमा अतिभारी ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

त्रिगुणा स्वामी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥
ओम हर हर हर महादेव ।

शिव समान दाता नहीं, विपद निवारण हार ।
लज्जा सबकी राखियो, शिव नंदी के असवार ॥

श्री दुर्गाजी की आरती

ओम जय अम्बे गौरी, मैय्या जय श्यामा गौरी ।
तुमको निश दिन ध्यावत, हरि-ब्रम्हा शिवरी ॥
ओम जय अम्बे

माँग सिन्दूर विराजत, टिको मृगमद को ।
उज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र बदन निको ॥
ओम जय अम्बे

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ।
रक्तपुष्प गलमाला, कंठन पर साजै ॥
ओम जय अम्बे

केहरि-वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनी-जन सेवत, तिनके दुख हारी ॥
ओम जय अम्बे

कानन-कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ॥
ओम जय अम्बे

शुंभ निशुंभ बिडारे, महिसासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती ॥
ओम जय अम्बे

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित-बीज हरे ।
मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे ।
ओम जय अम्बे

ब्रम्हाणी-रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥
ओम जय अम्बे

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरुँ ।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरु ॥
ओम जय अम्बे

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता ॥
ओम जय अम्बे

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी ।
मनवांच्छित फल पावत, सेवत नर नारी ॥
ओम जय अम्बे

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्रीमाल केतु मे राजत, कोटी रतन ज्योती ॥
ओम जय अम्बे

श्री अम्बे भवानी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुखसंपत्ती पावे ॥
ओम जय अम्बे

श्री जगदीशजी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण मे दूर करें ॥ ॐ जय ...

जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसे मन का
सुख संपत्ती घर आवै, कष्ट मिटै तन का ॥ ॐ जय ...

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी
तुम बिनु और न दुजा, आस करुँ मैं किसकी ॥ ॐ जय ...

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी
पार ब्रम्ह परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ जय ...

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता
मै मुरख खलकामी, कृपा करो भरता ॥ ॐ जय ...

तुम हो एक अगोंचर, सबके प्राण पति
किस विधि मिलू दयामय, मै तुमको कुमति ॥ ॐ जय ...

दीन बन्धु दुख हरता, तुम रक्षक मेरे
अपने हाथ बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ जय ...

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा
श्रध्दा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ जय ...

तन मन धन और जीवन, सब कुछ है तेरा
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ जय ...

त्रिगुणा स्वामी की आरती, जो कोई नर गावे
कहत शिवानंद स्वामी, कहत महामुनी ज्ञानी
सुख संपत्ती पावे, सब दुख मिट जावे, घर लक्ष्मी आवे ॥ ॐ जय ...

जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ॐ जय ...

श्री श्यामजी की आरती

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे,
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ॥ ॐ जय श्री ॥

रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चँवर डूले,
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ॥ ॐ जय श्री ॥

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे,
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ॥ ॐ जय श्री ॥

मोदक खीर चूरमा, सूवरण थाल भरे,
सेवक भोग लगावे, सेवा नित्य करे ॥ ॐ जय श्री ॥

झाँझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे,
भक्त आरती गावे, जय जय कार करे ॥ ॐ जय श्री ॥

जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे,
सेवक जन निज मुख से, श्याम श्याम उचरे ॥ ॐ जय श्री ॥

श्री श्यामबिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे,
कहत आलूसिंह स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ॐ जय श्री ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे ओ, बाबा जय श्री श्याम हरे,
निज भक्तों के तुमने, पूरन काज करे ॥ ॐ जय श्री ॥

श्री श्याम पुष्पांजलि

हाथ जोड़ विनती करुँ, सुणज्यों चित्त लगाय ।
दास आ गयो शरण में, रखियो इसकी लाज ॥

धन्य ढुँढारो देश है, खाटू नगर सुजान ।
अनुपम छवि श्री श्याम की, दर्शन से कल्याण ॥

श्याम श्याम मैं रटुँ, श्याम है जीवन प्राण ।
श्याम भक्त जग में बड़े, उनको करुँ प्रणाम ॥

खाटू नगर के बीच में, बण्यों आपको धाम ।
फागुन शुक्ला मेला भरे, जय जय बाबा श्याम ॥

फागुन शुक्ला द्वादशी, उत्सव भारी होय ।
बाबा के दरबार से, खाली जाय न कोय ॥

उमापति लक्ष्मीपति, सीतापति श्री राम ।
लज्जा सबकी राखियो, खाटू के श्री श्याम ॥

पान सुपारी ईलाइची, अत्तर सुगन्धित भरपूर ।
सब भक्तन की विनती, दर्शन देवो हजुर ॥

आलूसिंह तो प्रेम से, धरे श्याम को ध्यान ।
श्याम भक्त पावे सदा, श्याम कृपा से मान ॥

श्री कुँजबिहारीजी की आरती

आरती कुंजबिहारी की । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥
गलेमें बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर बाला ।
श्रवनमें कुंडल झलकाला, नन्दके आनँद नँदलाला ।
श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली
लतनमें ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तुरी-तिलक, चंद्र-सी झलक
ललित छबि, श्यामा प्यारी की ।
श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

कनकमय मोर-मुकुट बिलसे, देवता दरसनकों तरसे
गगन सौं सुमन रासि बरसे,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालनी संग
अतुल रति, गोपकुमारी की ।
श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

जहाँ ते प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा
स्मरण ते होत मोह-भंगा
बसी शिव शीश, जटाके बीच, हरै अध-कीच
चरन छबि, श्रीबनवारीकी ।
श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

चमकती उज्वल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू
चहूँ दिसि गोपी ग्वाल धेनू
हँसत मृदु मंद, चाँदनीचन्द, कटत भव फन्द
टेर सुनु, दिन दुखारीकी ।
श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥
आरती कुँजबिहारीकी । श्रीगिरिधर कृष्णमुरारीकी ॥

श्रीरामायण जी की आरती

आरती श्रीरामायणजी की
कीरति कलित ललित सिय-पी की ॥
गावत ब्रम्हादिक मुनि नारद
बालमीक विज्ञान-बिसारद ।
सुक सनकादि सेष अरु सारद
बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥
गावत बेद पुरान अष्टदश
छओ शास्त्र सब ग्रंथन को रस ।
मुनिजन धन संतन को सरबस
सार अंस संमत सबही की ॥
गावत संतत संभु भवानी
अरु घटसंभव मुनि बिज्ञानी ।
ब्यास आदि कविबर्ज बखानी
काकभुसुंडि गरुड़ के ही की ॥
कलि-मल-हरनि विषय-रस फीकी
सुभग सिंगार मुक्ति, जुबती की ।
दलन रोग भव मूरि अमी की
तात मात सब बिधि तुलसी की ॥

श्री हनुमानजी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर काँपै, रोग-दोष जाके निकट न झांपे।
अंजनि पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठायें, लंका जारि सिया सुधि लायें।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे, सीयारामजी के काज संवारे।
लक्ष्मण मूर्च्छित पड़ें सकारे, आणि संजीवन प्राण उबारे।
पैठी पाताल तोरि जम कारे, अहिरावन की भुजा उखारे।
बायें भुजा असूर दल मारे, दाहिने भुजा संत जन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारे, जै जै जै हनुमान उचारें।
कंचन थांल कपूर लौ छाई, आरती करत अंजना माई।
जो हनुमानजी की आरती गावै, बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।
लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीरती गाई।
आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कला की।

हनुमत की सकलाई नै, जाण सकै ना कोय
सब देवां कै साथ मँ, आं की पूजा होय

शारदाजी की आरती

लईयो आरती हमारी स्वीकार
भवानी मैहर वाली २

ऊँचे पर्वत बना है मंदीर, महिमा तेरी निराली
वहाँ से सिढ़ियाँ चढ़के मैय्या, आते तेरे सवाली
सारे जग से निराला दरबार,
भवानी मैहर वाली .....

घंटा शंख मृदंग बजत है, आरती साँझ सकारे
फूल नारियल फल और चुनरी, लाते भगत तुम्हारे
चढ़े बेला चमेली के हार
भवानी मैहर वाली .....

बड़े सबेरे पंडा आके, मंदिर के पट खोले
पहले दर्शन करन के लाने, जल्दी मे ना खोले
मीठे अलग चढ़ाने सिंगार
भवानी मैहर वाली .....

कोई माँगे धन और दौलत, कोई माँगे काया माँ
कोई टीका लाल मँगावे, कोई रहने को छाया माँ
मैय्या सब पे करे उपकार
भवानी मैहर वाली .....

दर्शन करके जनम सफल हो, लाखों पुण्य कमाये
प्यास बुझी इन नैनन की माँ, तुम्हरे दर्शन पाये
मैय्या तेरे चरणों का प्यार
भवानी मैहर वाली .....

श्री महालक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैय्या जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु-विधाता ॥

उमा-रमा ब्रम्हाणी, तुम ही जग माता ।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत्, नारद ऋषि गाता ॥

दुर्गारुप निरंजनि, सुख-संपत्ती दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत्, ऋध्दि-सिध्दि धन पाता ॥

तुम पाताल निवासनी, तूम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ॥

जिस घर मे तुम रहती, तह सब सद्गुण आता ।
सब संभव हो जाता, मन नही घबराता ॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान पान का वैभव, सब तुम से आता ॥

शुभ-गुण-मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥

श्री रामदेवजी की आरती

पिछंम धरां सुं म्हारा पीरजी पधारिया, घर अजमल अवतार लियो
लाछांबाई सुगनाबाई, करे हरकी आरती, हरजी भांटी चँवर ढुले
वैकुंठा में रामा, होवे हर की आरती

धीरत मिठाई बाबा चढे थारे चुरमो, धुपारी हो महकार पडे
लाछांबाई सुगनाबाई, करे हरकी आरती, हरजी भांटी चँवर ढुले
वैकुंठा में रामा, होवे हर की आरती

वीणा रे तंदुरा धणी नौबत बाजे, झालर री झंकार पड़े
लाछांबाई सुगनाबाई, करे हरकी आरती, हरजी भांटी चँवर ढुले
वैकुंठा में रामा, होवे हर की आरती

खम्मा म्हारा बापजी ने सारो जुग ध्यावे, अजमलजी रा कंवरा रो भेद नही पावे
द्वारका रा नाथ थाने सारो जुग ध्यावे, जैसी ज्यारी भावना वैसो फल पावे
गंगा रे यमुना बैवे रे सरस्वती, रामदेव बाबो स्नान करे
लाछांबाई सुगनाबाई, करे हरकी आरती, हरजी भांटी चँवर ढुले
वैकुंठा में रामा, होवे हर की आरती

दुरा रा देशांरा बाबा आवे थारे यात्री, दरगाह आगे नमन करे
लाछांबाई सुगनाबाई, करे हरकी आरती, हरजी भांटी चँवर ढुले
वैकुंठा में रामा, होवे हर की आरती

हरि शरणां में भांटी हरजी रे बोलीयाँ, नंवा रे खण्डा में निशान धुरे
लाछांबाई सुगनाबाई, करे हरकी आरती, हरजी भांटी चँवर ढुले
वैकुंठा में रामा, होवे हर की आरती

आँधलिया ने आँख्या देवे, पांगला ने पांव देवे
बाबो बांझडिया रा पालनिया झुलावे जीओ
लाछांबाई सुगनाबाई, करे हरकी आरती, हरजी भांटी चँवर ढुले
वैकुंठा में रामा, होवे हर की आरती

रामदेवजी की आरती

जय अजमल लाला, प्रभु जय अजमल लाला
भक्त काज कलयुग, में लीनो अवतारा
ऊँ जय .....

असवन की असवारी सोहे, केशरीया जामा
शीश तुर्रो हद सोहे, हाथ लिए भाला
ऊँ जय .....

दुबत जहाज तीराई, भैरव दैत्य मारा
कृष्ण कला भय भंजन, राम रुणीचे वाला
ऊँ जय .....

अंधन को प्रभु नेत्र देत है, कोढ़न को काया
बांझन पुत्र खिलावे, निर्धन को माया
ऊँ जय .....

नाथ द्वारका से चलकर के, धोरा मे आया
चार खुट चंहु दिसी में, नेजा फहराया
ऊँ जय .....

जब जब भीड़ पडी भक्तन पर, दौड़े दौड़े आया
जहर भरे जीवन में, अमृत बरसाया
ऊँ जय .....

कोढी जब करुनाकर आवे, होय दुखीत काया
शरणागत प्रभु तोरी, भक्तन सुखदाया
ऊँ जय .....

आरती रामदेवजी की, जो कोई नर गावे
कटे पाप जन जन का, विपदा मिट जावे
ऊँ जय .....

रामदेवजी की आरती

हरी ओम - हरी ओम, होवे हर की आरती
जय जय बोले बाबा सारी आलम - २
निर्भय नगाड़ों बाबा बाजे, अकडबम - ३

चार खुट और चौदारे भवन में
थारी रे पीरे है बाबा, साची रे कलम - २
निर्भय नगाड़ों .....

सुख बरसुतो बाबो, पांव हिलावे
थारी गती हो बाबा, थाने मालम - २
निर्भय नगाड़ों .....

तु म्हारो पटवो, मैं पटवारी
आँखरी सेवा में, बाबा रहूँ हरदम - २
निर्भय नगाड़ों .....

चार चरन जती गोरख बोले
देख उर्षानारी बाबा, राशी जो कलम - २
निर्भय नगाड़ों .....

श्री सतगुरुजी की आरती

आरती कर सतगुरु वर की ।
मिटे भवभ्रान्ति सभी उर की

जगत गुरुदाता अविनाशी ।
अचल घट घट के परकाशी ॥

सर्व आधार शक्ति भंडार ।
जयति जय जय विश्वम्भर की ॥

ब्रम्ह अखण्डानन्द महाना ।
सब जग में परिपूर्ण समाना ॥

जगत निस्सार एक ही सार ।
अस्ति जो है परमेश्वर की ॥

सतगुरु निर्मल ज्ञान बताया ।
अव्यय अलख अरुप लखाया ॥

लखा जिन आप, मिटा संताप ।
भई मुक्ति नारी नर की ॥

गुरु गोविंद दोनो खड़े, काके लागु पाये
बलहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बताये

।। श्री गणेशस्तुतिः ।।

गजानंन भूतगणादिसेवितं, कपित्थ-जम्बूफल-चारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोक-विनाश-कारकं, नमामि विघ्नेश्वर-पाद-पङ्कजम् ॥

।। श्री विष्णुस्तुतिः ।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वंदे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

।। श्री रामस्तुतिः ।।

नीलाम्बुजश्यामल कोमलांग्राम सीता-समारोह पित-वामभागम् ।
पाणौ महाशायक चारुचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

।। श्री महावीरस्तुतिः ।।

मनोजवं मारुत-तुल्य-वेगं, जितेन्द्रियं बुध्दिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं बानरयूथ-मुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

।। श्री शिवस्तुतिः ।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां नैव हि जानामि क्षमस्व परमेश्वरं ॥
अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मंत्वा क्षमस्व परमेश्वरं ॥

।। गणपति वन्दना ।।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगध्दिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

।। श्री दुर्गास्तुतिः ।।

ॐ जयन्ती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

।। श्री लक्ष्मीस्तुतिः ।।

नमस्तेऽस्तु महामाये, श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंङ्खचक्र-गदा-हस्ते, महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ।

।। श्री सरस्वतीस्तुतिः ।।

ॐ या कुन्देन्दु-तुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रवृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रम्हाच्युतशंकर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाडयापहा ॥

।। श्री कृष्णस्तुतिः ।।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ।
हरे मुरारे मधु-कैटभारे, निराश्रयं मां जगदीश रक्ष ॥

कर्पूरारती

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि ॥
मंदारमाला कुलिताल काय, कृपाल माला शसिशेखराय ।
दिगंबराय च दिंगबराय, नमःशिवाय ऊँ नमःशिवाय ॥

क्षमा प्रार्थना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या, द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वम मम देवदेव ॥

गुर्रु ब्रम्हा, गुर्रु विष्णु
गुर्रु देवो महेश्वरः ।
गुर्रु साक्षात् पर ब्रम्हा
तस्मैय श्री गुरुवे नमः ॥

मंत्र पुष्पांजली

ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजंत देवाः स्तानि
धर्माणी प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचंत यत्रपूर्वे
साध्याः संति देवाः ॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसहय साहिने नमो
वयं वैश्रवणाय कुर्महे ।
स मे कामान काम कामाय महयं कामे
स्वरो वैश्रवणीददातु ॥
कुबेराय वेश्श्रवणाय महाराजाय नमः ।
ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं, भौज्यं,
स्वराज्यं, वैराज्यं, परमेष्ठयम् ॥
राज्यं, महाराज्यमाधिपत्यमयं
समंत पर्यायी स्यात् सार्व भौमः ।
सार्वायुष आंतादाप रार्धात्,
प्रथिव्यै समुद्रपर्यतांयाएक राडिति ॥
तदप्येष श्लोकोभिगीतो
मरुतः परिवेष्टारो मरुत्त स्यावसन् ग्रहे ।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद ।

।। विश्वकल्याण के लिए प्रार्थना ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥

कुछ शिक्षा प्रद प्रश्नोत्तर

प्रश्न – जल से पतला कौन है, कौन भूमि से भारी ? कौन अग्नि से तेज है, कौन काजल से कारी ?
उत्तर – जल से पतला ज्ञान है, और पाप भूमि से भारी । क्रोध अग्नि से तेज है, और कलंक काजल से कारी ।

प्रश्न – मनुष्य कब बनता है और कब बिगड़ता है ?
उत्तर – मनुष्य सतसंग से बनता है और कुसंग से बिगड़ता है ।

प्रश्न – सच्चा दोस्त कौन है ?
उत्तर – जो विपत्ति में साथ दे, और हर समय नेक सलाह दे ।

प्रश्न – वह क्या है, जिसके सामने इंसान की एक नहीं चलती ?
उत्तर – उसका नाम है मुकद्दर (भाग्य)

प्रश्न – वे कौन है, जिनका पैसा कभी नहीं लेना चाहिए ?
उत्तर – भिखारी, अपाहिज, बेसहारा, मक्खीचूस, नेत्रहीन और बेईमानी करने वाले का ।

प्रश्न – मानव को दानव कौन बनाता है ?
उत्तर – उसका अहंकार ।

प्रश्न – कौन इन्तजार नहीं करते ?
उत्तर – मौत, समय और ग्राहक ।

प्रश्न – मकान और घर में क्या फर्क है ?
उत्तर – मकान ईंट गारे से बनते हैं और घर प्रेम से ।

श्री हनुमानजी महाराज
पटेल नगर, ब्रम्हपुरी

गायत्री महामंत्र

ओऽम भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं ।
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

सरल शब्दार्थ

ओऽम	: सर्वरक्षक परमात्मा	भू	: प्राणों से प्रिय
भुंवः	: दुःख विनाशक	स्वः	: सुख स्वरूप है
तत्	: उस	सवितु	: प्रकाशक
वरेण्यं	: वरने योग्य	भर्गो	: विशुध्द विज्ञान स्वरूप
देवस्य	: देव को	धीमहि	: हम धारण करें
धियो	: बुध्दियों को	यो	: जो
नः	: हमारी	प्रचोदयात्	: शुभ कार्यों में प्रेरित करें

भावार्थ

सर्वरक्षक परमात्मा जो प्राणों से प्यारा, दुःख विनाशक एवं
सुख स्वरूप है उस प्रकाशक, वरण करने योग्य,
शुध्द विज्ञान स्वरूप देव को हम धारण करें,
जो हमारी बुध्दियों को शुभ कार्यों में प्रेरित करें ।

श्री हनुमानजी महाराज के दर्शन व
स्वर सागर
के लिए कृपया लाग ऑन करें
www.jaihanuman.in